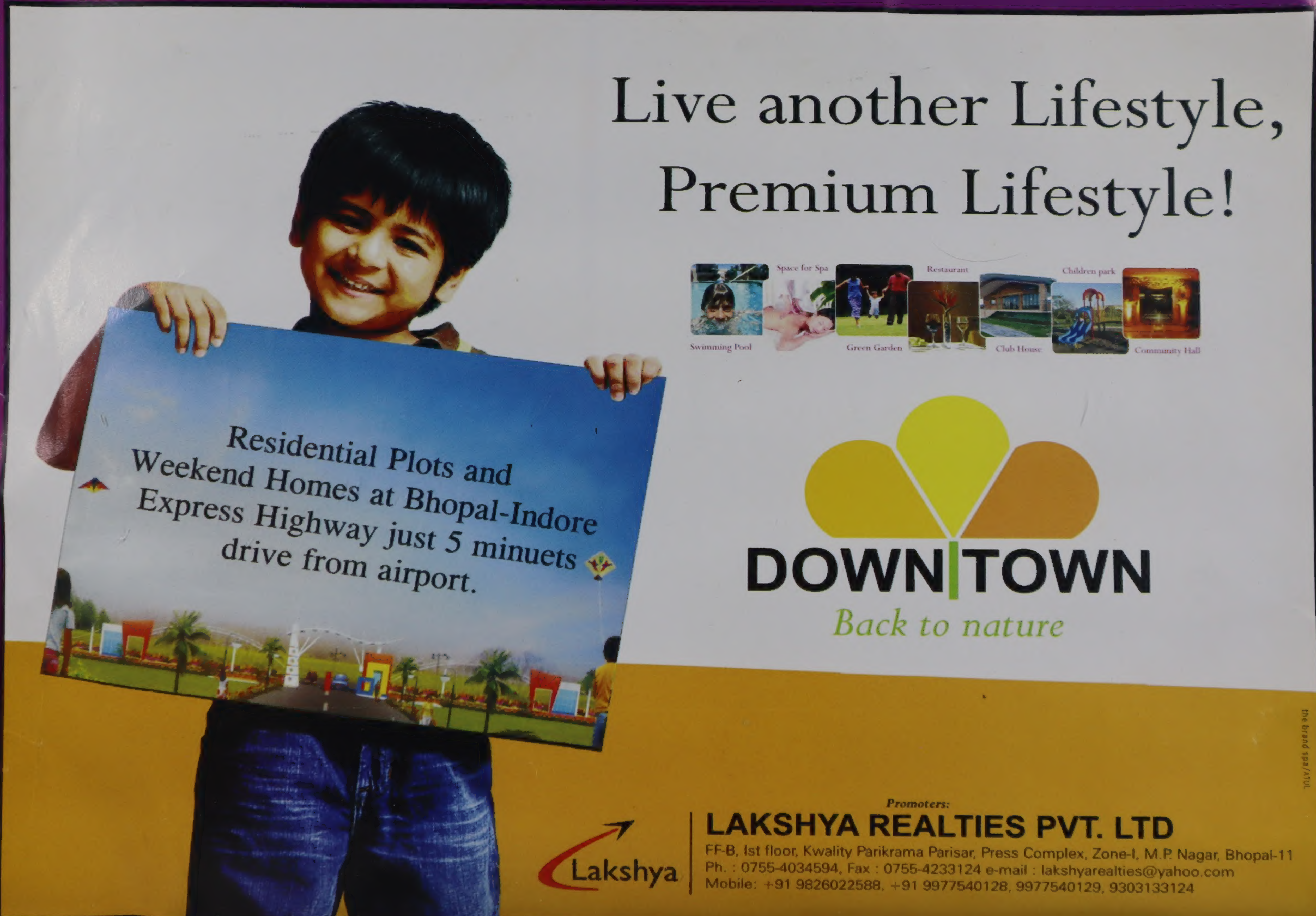
मासिक पत्रिका

वर्ष -7 अंक - 5 फरवरी 2010

मूल्य

सिंधू महक




Live another Lifestyle,
Premium Lifestyle!
Swimming Pool
Space for Spa
Green Garden
Restaurant
Club House
Children park
Community Hall
Residential Plots and Weekend Homes at Bhopal-Indore Express Highway just 5 minuets drive from airport.
DOWN TOWN
Back to nature
Promoters:
Lakshya
LAKSHYA REALTIES PVT. LTD
FF-B, Ist floor, Kwality Parikrama Parisar, Press Complex, Zone-I, M.P. Nagar, Bhopal-11
Ph. : 0755-4034594, Fax : 0755-4233124 e-mail : lakshyarealties@yahoo.com
Mobile: +91 9826022588, +91 9977540128, 9977540129, 9303133124
the brand spa/ATUL

मासिक पत्रिका

सिंधू महक

वर्ष-7, अंक - 5, फरवरी 2010



महेश चावला
प्रधान सम्पादक
मो. 9425012880



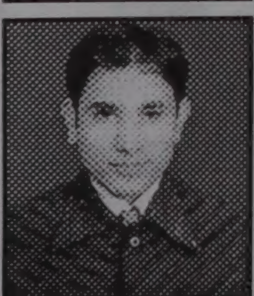
धर्मप्रकाश तेजा
सम्पादक
मो. 9300691132



परमानंद प्यासी
संरक्षक
मो. 09328311844



बसंत चेलानी
सलाहकार



राकेश वरंदानी
स्थानीय प्रतिनिधि
मो. 9755043515

डाक का पता : मासिक सिन्धू महक
पो.बाक्स नं. 5, बैरागढ़, भोपाल(म.प्र.)462030
कोरियर से भेजने का पता :
सम्पादक, सिंधू महक
एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट संस्कार स्कूल के पास,
बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.)

अनुक्रमाणिका

- समाज के समाचार पत्र-पत्रिकाओं को खरीदकर पढ़ना एवं सहयोग देना आप सभी का कर्त्तव्य है। पाठकों का थोड़ा-थोड़ा सहयोग भी पत्र-पत्रिकाओं के लिये उनके प्रकाशन की निरंतरता को बनाये रखने में अत्याधिक सहयोगी सिद्ध होता है।
- अत: सम्माननीय बंधुओं से आग्रह है कि अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनकर सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही अपने उद्योग/संस्थान/या व्यक्तिगत विज्ञापन देकर अपने व्यवसाय को गति प्रदान करें, थोड़ा-थोड़ा प्रचार भी आपके व्यवसाय को अत्याधिक लाभ प्रदान कर सकता है।

-सम्पादक

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, **प्रकाशक-धर्मप्रकाश तेजा** द्वारा शाईन ऑफसेट, प्रेस कॉम्प., जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, बैरागढ़, भोपाल(म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-धर्मप्रकाश तेजा, मोबाईल : 09589024860, 09300691132 (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल होगा) RNI No. MPHIL/03.11977

जीवेत् शरद् शतम्



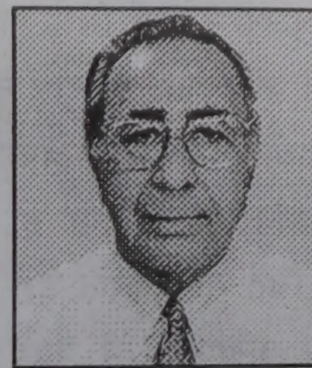
श्री महेश चावला जी

जन्मदिन - 25 फरवरी

जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

सौजन्य से : **सिंधू महक परिवार**

संकट में है सिंधी भाषा का अस्तित्व



●वासुदेव 'सिंधु-भारती'

रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था, 'विभाजन के पश्चात बंगला और पंजाबी भाषाओं के दो-दो प्रान्त नसीब हुए। किंतु सिंधी भाषा का घर उजड़ गया। भाषा को जड़ों से उखाड़ा गया, किंतु सिंधी भाषा के पुजारियों ने संघर्ष करके जिस तरह अपनी भाषा और सभ्यता के प्रति स्नेह प्रदर्शित किया है, मुझे विश्वास है कि यह भाषा सदैव जीवित रहेगी और भारत की महान भाषा बनकर जिएगी।'

अस्तित्व का प्रश्न

किसी भी कौम के अस्तित्व को मटियामेट करना हो तो उसका संहार करने के लिये शस्त्रों की आवश्यकता नहीं। केवल उस कौम की भाषा को नष्ट कर दो तथा उसकी नई पीढ़ी से उसकी सांस्कृतिक धरोहर को छीन लो। वह स्वत: ही शनै: शनै: धरती से लुप्त हो जाएगी।

जड़ों सहित उखाड़ना

भारत-विभाजन के समय कुटिल एवं निर्दयी राजनीतिज्ञों ने समूचे सिंध प्रांत की बलि चढ़ा दी और सिंधुजनों से अनेक जन्मों का प्रतिशोध लिया। उनके प्राचीन एवं समृद्ध सांस्कृतिक व भाषाई विरासत के वटवृक्ष को एक ही झटके से जड़ों सहित उखाड़ दिया।

साहित्यविदों की संवेदनाएं

24 सितम्बर 1968 को भारत की राजधानी दिल्ली में सिंधी भाषा के सिरमौर कवि श्री नारायण 'श्याम' को 'डॉ. चोइथराम गिदवाणी पुरस्कार' से सम्मानित किये जाने वाले समारोह में हिन्दी के दो दिग्गज साहित्यकार दिनकर एवं बच्चन भी उपस्थित थे। उन्होंने भी सिंधी भाषा के साथ हुए उक्त अन्याय के विरोध स्वरूप अपनी संवेदनाएं व्यक्त की।

घर उजड़ गया

रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था, 'विभाजन के पश्चात बंगला और पंजाबी भाषाओं के दो-दो प्रान्त नसीब हुए। किंतु सिंधी भाषा का घर उजड़ गया। भाषा को जड़ों से उखाड़ा गया, किंतु सिंधी भाषा के पुजारियों ने संघर्ष करके जिस तरह अपनी भाषा और सभ्यता के प्रति स्नेह प्रदर्शित किया है, मुझे विश्वास है कि यह भाषा सदैव जीवित रहेगी और भारत की महान भाषा बनकर जिएगी।'

सिंधीजनों के समक्ष बड़ी चुनौती

हरिवंश राय बच्चन ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा था, 'सिंधी भाषा से अपनी जमीन छीन ली गई है, उसकी जड़ें कट गई हैं। मुझे शंका है कि यह भाषा अपना अस्तितव कायम रख पाएगी। यह दुर्भाग्य का विषय है कि जिस 'सिंध' से 'हिंद' को अस्तित्व मिला, उसी प्राचीन भाषा को उजाड़ा गया। जो व्यक्ति घरों में अपने बच्चों और सगे-सम्बंधियों से सिंधी भाषा में बोलते हैं, वे अवश्य सिंधी भाषा की सेवा करते हैं, किन्तु कोई प्रान्त, कोई जमीन इनके लिये आवश्यक है, जहां सिंधी भाषी बड़ी संख्या में एक साथ रह सकें। अन्यथा भाषा का विकास होना असम्भव है, भाषा को सदैव के लिये सुरक्षित रखना कठिन है। अगर सिंधी भाषी वर्तमान परिस्थितियों में अपनी भाषा को बचा सकते हैं तो यह साहसी कदम होगा। सिंधीजनों के समक्ष एक बड़ी चुनौती हे और मैं देख रहा हूं कि उन्होंने यह चुनौती स्वीकार कर ली है।'

सहृदय साहित्यकारों ने अपने उक्त सम्बोधन में इस तथ्य को उजागर कर दिया है कि कोई भी संस्कृति, साहित्य एवं भाषा तब तक जीवित रह सकती है, जब तक उसे अपनी जड़ें सुदृढ़ रखने के लिये अपनी धरती न हो।

मौलिक अधिकार एवं मूलभूत सुविधाएं

इस विभीषिका के पश्चात भी

जब-जब ऐसी घुटन महसूस होती है, तब-तब लेखकों एवं कलाकारों का नाद गूंज उठता है और वह तूफान बरपा करता है। लेखक की चोली, बोली से सिली हुई है। आज हमारी चोली उधेड़ी जा रही है। हम कैसे शांत रह सकते हैं? भाषा न रहेगी तो गीत न रहेगा, गीत न रहेगा ता गायक न रहेगा, गायक न रहेगा तो कला व संस्कृति न रहेगी, कला व संस्कृति नहीं रहेगी तो समुदाय कैसे जीवित रह पाएगा?

सिंधुजनों ने पृथ्क सिंधी प्रान्त की मांग नहीं की। जिस समुदाय ने भारत की सवाधीनता के लिये अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया हो, वह यह अनुचित मांग करके देश की एकता और अखण्डता मे कैसे दरार डाल सकता है। वह तो केवल सम्मानपूर्वक, बिना किसी भेदभाव के अपने वे सभी मौलिक अधिकार एवं मूलभूत सुविधाएं चाहता है जो भारत के अन्य प्रदेशवासियों को अपना प्रदेश होने के कारण उपलब्ध हैं। प्रसिद्ध भाषाविद् वासुदेव शरण अग्रवाल कहते हैं 'देश-विभाजन से सिंधी भाषा को बहुत क्षति पहुंची है। उससे उसका उद्धार होना ही चाहिये।' समय के क्रूर थपेड़ो ने ऐसी जटिल समस्याएं एवं विषम परिस्थितियां उत्पन्न कर दी हैं कि अब सिंधी भाषा के अस्तित्व पर संकट के काले बादल मंडरा रहे हैं।

संविधान में सिंधी भाषा

26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू किया गया, किन्तु सिंधी भाषा को खंडित भारत में अपना कोई विशिष्ट क्षेत्र या प्रदेश उपलब्ध न होने के कारण अन्य प्रादेशिक भाषाओं की भांति उसे संवैधानिक मान्यता नही मिल पाई। 17 वर्षो की लम्बी अवधि तक शांतिपूर्वक आंदोलन एवं संघर्ष करने के पश्चात 10 अप्रैल 1967 को सिंधी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया गया, तब तक उसके अस्तित्व पर न जाने कितने घाव उभर आए।

मृग मरीचिका बने कायदे-कानून

संविधान के अनुच्छेद 350 के अनुसार भाषाई अल्पसंख्यकों के बालकों को प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रावधान है। संविधान की धारा 29 (1) में यह स्पष्ट रेखांकित किया गया है कि भारत के किसी भी क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों को, जिनकी अपनी पृथक भाषा, लिपि व संस्कृति है, इनकी रक्षा का पूरा अधिकार होगा। दुर्भाग्यवश ये सब कायदे-कानून सिंधी भाषा के लिए मृग-मरीचिका ही सिद्ध हुए हैं। आज वस्तुस्थिति यह है कि 10 प्रतिशत सिंधी विद्यार्थियों को भी सिंधी भाषा की शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाती। शनैःशनै इसका प्रतिशत धटता ही जा रहा है।

केन्द्रीय एवं राज्य प्रशासन, यहां तक कि भारत के संकीर्ण मनोवृत्ति वाले अन्य भाषा-भाषी भी सिंधी भाषा के प्रति सहानुभूति नहीं रखते।

अपमानजनक आचरण कब तक

कुछ फिल्मों और दूरदर्शन के सीरियलों में सिंधुजनों और सिंधी भाषा को विकृत रूप में प्रस्तुत कर जो खिल्ली उड़ाई जाती है या अन्य गैर सिंधी भाषा का अशुद्ध अच्चारण कर उसका उपहास करते हैं तो समूचा सिंधी समुदाय उद्वेलित हो उठता है। आखिर इस अपमानजनक आचरण का अन्त कब होगा?

सर्वत्र सौतेला व्यवहार

सांस्कृतिक शैक्षणिक सामाजिक राजनीतिक तथा अन्य कई क्षेत्रों में सिंधुजनों की भरसक उपेक्षा की जा रही है। कई सुविधाओं एवं मूल अधिकारों तक से वंचित रखा जा रहा है, चाहे भारत उत्सव हो या उत्तर-पश्चिम सांस्कृतिक संस्थान, गणतंत्र दिवस समारोह हो या स्वाधीनता की स्वर्ण जयंती, सर्वभाषी कवि सम्मेलन हो या भाषाई अल्पसंख्यक लोक नृत्य-संगीत उत्सव हो या दूरदर्शन के राष्ट्रीय प्रसारण, विदेश जाने वाले सांस्कृतिक मंडल हो या राजनीतिक प्रतिनिधित्व, महामहिम राष्ट्रपति द्वारा दिए जाने वाले राष्ट्रीय अलंकरण हो या राज्यसभा में बिना प्रदेश के समुदाय के विशिष्ट व्यक्तियों का मनोनयन। सर्वत्र यह सौतेला व्यवहार, असहिष्णुता एवं अन्याय देखकर कभी-कभी यह शंका होने लगती है कि क्या सिंधुजन इस स्वतंत्र भारत के ही नागरिक हैं, जिसके लिए उन्होंने इतनी कुर्बानियां दी थी?

समुदाय कैसे जीवित रह पाएगा

सुप्रसिद्ध सिंधी लेखिका प्रो. पोपटी हीरानंदाणी अपने बेबाक उद्‌गार प्रकट करते हुए लिखती हैं, इतिहास गवाह है कि जब-जब ऐसी विकट परिस्थितियां आती हैं, जब-जब ऐसी घुटन महसूस होती है, तब-

तब लेखकों एवं कलाकारों का नाद गूंज उठता है और वह तूफान बरपा करता है। लेखक की चोली, बोली से सिली हुई है। आज हमारी चोली उधेड़ी जा रही है। हम कैसे शांत रह सकते हैं? भाषा न रहेगी तो गीत न रहेगा, गीत न रहेगा ता गायक न रहेगा, गायक न रहेगा तो कला व संस्कृति न रहेगी, कला व संस्कृति नहीं रहेगी तो समुदाय कैसे जीवित रह पाएगा?

भविष्य अंधकारमय

सन् 1980 में पाकिस्तान की वरिष्ठ सिंधी लेखिका माहताब महबूब भारत के लोकप्रिय एवं विख्यात सिंधी गायक सगीताचार्य मास्टर चन्द्र के निमंत्रण पर भारत आई थीं। यहां सिंधी भाषा का भविष्य अंधकारमय देखकर वह उद्वेलित हो उठीं। उन्होंने अपने सफरनामे 'अंदर जिनीं उञ' (भीतर जिनके प्यास) में अपनी पीड़ायुक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए लिखा, भारत में सिंधी भाषा की कोई राष्ट्रीय पहचान नहीं रही है। यह न तो दफ्तरों में काम आती है, न कोर्ट में, न डाक व तार में, न ही व्यापार आदि में, इसलिए परिश्रमी एवं पुरूषार्थी, किन्तु असहाय और विवश सिंधुजन अपने अस्तितत्व को स्थापित करने के लिए स्वयं को आर्थिक तौर पर सुदृढ़ करने के प्रयास में हिंदी और अंग्रेजी की ओर बढ़े हैं। इससे वे आर्थिक तौर पर अवश्य मजबूत होंगे। इनके घरों की छतें सोने की बनेगी, दीवारों पर नोटों के वाल-पेपर लगेंगे। इनके फर्श चांदी के बनेंगे, किन्तु हर कौम केवल अपने साहित्य, कला, सभ्यता और संस्कृति के निरन्तर विकास और प्रगति के कारण जीवित रहती है।

अस्तित्व लुप्त हो जाएगा

उपेक्षित सिंधी भाषा व संस्कृति संकटकी काली छाया के घेरे में आती जा रही है। उसके विकास और सरंक्षण के लिए समस्त सिंधुजनों को सचेत व सजग रहकर निष्ठा के साथ प्रयास करने होंगे, अन्यथा संस्कृति परिवार की एक समृद्ध, सबल, वैज्ञानिक एवं विकसित भाषा का अस्तित्व शनैःशनैः लुप्त हो जाएगा। यह केवल सिंधी समुदाय के लिए ही दुर्भाग्य का विषय नहीं होगा, अपितु इससे साझा भारतीय संस्कृति भी प्रभावित होगी। विख्यात प्राच्यविद डॉ. लोकेशचन्द्र के अनुसार सिंधी भाषा और संस्कृति के बिना भारतीय संस्कृति अधूरी है।

शिमला क्लब ने की अनूठी पहल की शुरूआत

इंदौर। शिमला क्लब एवं एम.पी. सिन्धी विकास परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में एक अनूठी पहल की शुरूआत की गई है। इंदौर शहर में शिमला क्लब एवं सिंधी विकास परिषद् ने सिंधी समाज के स्वजनों का (जनगणना अभियान) शुरू किया है। इस अभियान के अंतर्गत उनके जनगणना अभिकर्ताओं ने पूरे इंदौर शहर में निवासरत सिंधीजनों के घर-घर पहुंचकर जनगणना फार्म भरवाए हैं। श्री किशोर वाधवानी मुख्य संरक्षक शिमला क्लब एवं एम.पी. सिंधी विकास परिषद्, डॉ. मोहन किशनानी अध्यक्ष, एम.पी. सिंधी विकास परिषद् एवं श्री प्रीतम मट्टा, संयोजक जनगणना अभियान ने सिंधी समाज के महानुभावों से अपील की है कि मानवीय त्रुटिवश किसी परिवार के पास फार्म न पहुंचा हो वो कृपया मुख्य कार्यालय : 309, शालीमार कॉरपोरेट सेन्टर, आर.एन.टी. मार्ग इंदौर से फार्म प्राप्त कर कार्यालय में जमा करवा सके हैं जिसकी अंतिम तिथि 7 फरवरी 2010 निर्धारित की गई है। ताकि उस परिवार का नाम पत्रिका 'धरोहर' में सम्मलित कयिा जा सके। इस हेतु दूरभाष 4005506, मो. 9827266341 पर अथवा email : club.shimla@gmail.com की सेवाएं ली जा सकती हैं।

उल्लेखनीय है कि इस तरह के प्रयास सम्पूर्ण म.प्र. नहीं अपितु पूरे देश में सामाजिक संस्थाओं, सिंधी पंचायतों एवं संगठनों द्वार किये जाने चाहिए जिससे समाज की वास्तविक संख्या भी ज्ञात हो सके। चूंकि सिंधी समाज के लोग देश विभाजन क बाद सिर्फ म.प्र. या अन्य राज्यों में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में फैल चुके हैं। हमें आवश्यकता है पूरी जनसंख्या के आंकड़े इकठित कर समाज को संगठित करने का प्रयास कर सकें।

(सम्पादक)

मोहम्मद बघीवाला

● लेखक - स्व. प्रो. राम पंजवाणी
● अनुवाद - डी.पी. तेजा

विभाजन अभी हुआ नहीं था, लेकिन करीब-करीब तय था। सिन्ध के हिन्दुओं में मायूसी थी, तो मुसलमान गद् गद् हो रहे थे। विभाजन के फैसले से मुसलमानों के हौंसले बुलन्द थे। वे स्वयं को सिन्ध का मालिक समझने लगे थे। उम्मीदों पर इन्सान कितना झूमता है। सिन्धी हिन्दुओं को पूरा विश्वास था कि वे सिन्ध में रहेंगे किन्तु उनकी हस्ती पहले जैसी नहीं रहेगी। पलायन का विचार तो स्वप्न में भी नहीं था। उम्मीद के साथ हल्का-हल्का ह्रास हिन्दुओं के दिल में था। मुस्लिम नेता ढाढस तो खूब बंधाते थे, परन्तु उनके भाषणों और बयानों से बदली हुई मनोवृत्ति का साफ पता लग रहा था। वायुमण्डल में तनाव था तो हिन्दुओं के दिल में डर बहुत था। कहीं दंगे न भड़क जायें। अंग्रेजों ने अभी देश छोड़ा नहीं था। इसलिए आशा की एक किरण नजर आ रही थी कि प्रलय नहीं होगी। परन्तु अंग्रेज सरकार की कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी। इसलिये डर था कि ज्यादा खींचतान हुई भी तो अंग्रेज दिल से सहयोग नही करेंगे।

दिसम्बर का महीना था, सर्दी शुरू हो चुकी थी। शाम का समय था। कराची क्लब की एनेक्सी में मेरे मित्र निहालचन्द ने पार्टी रखी थी। खुद पहले ही व्यवस्थाओं को देखने के लिए निकल पड़ा था और मेरे लिए सन्देश छोड़ गया था। शाम को सात बजे मैं गाड़ी खाते में था (कराची का एक इलाका)। विचार आया कि यहां से विक्टोरिया में बैठकर क्लब पहुंच जाऊंगा। अकेले जाने में मन घबरा रहा था, दिल में हल्का सा डर था, पर जाना जरूरी था। अभी मैं विचारों में खोया हुआ था कि एक तांगा आकर रूका। तांगे वाले ने कहा, दीवान साहब कौन से विचारों में डूबे हुए हो? कहां जाना है? मैं सहम गया। अपने आपको संभालते हुए मैंने बोला कार का इन्तजार कर रहा हूँ पता नही क्यो नहीं पहुंची? तांगे वाले ने कहा दीवान साहब! बैठो तांगे में मोटर से पहले पहुंचाऊंगा। सिन्धी में बोल रहा था, भाषा में अपनेपन का अहसास था। मैं तांगे में बैठ गया।

शहर से बाहर निकल आये। हंटर मारते हुए तांगे वाला घोड़े से बातें करने लगा। पुचकारते हुए बोला। उड़-उड़ पंछी दीवान साहब को मोटर की मस्ती दिला। बड़ी मुश्किल से दीवान साहब गाड़ी में बैठे हैं। फिर नहीं बैठेंगे।

शहर के बाहर सुनसान, मुझे यह शब्द कुछ अच्छे नहीं लगे। विचार आया कि ये शब्द क्यों बोल रहा है, दीवान साहब फिर नहीं बैठेंगे। इतने में ही आवाज आई डर मत! कोई नहीं रोकेगा। जमीन से पांव उठा, उड़ जा आसमान में। जमीन के कई शौक पूरे किये हैं, अब स्वर्गलोक की सैर करा। स्वर्ग की सैर मेरा दिल दहल गया। सोचा इसके इरादे तो नेक है। अचानक गाड़ी रूक गई। गाड़ी रूकी या मेरा दिल? तांगे वाला तांगे से नीचे उतरा होठों मे कुछ बड़बड़ाया पर समझ में नहीं आया। मैं समझा अब मेरे ऊपर हमला करेगा, सारा समान नगदी जो मेरे पास है लूट लेगा, मार कर कहीं सड़क के किनारे फैंक देगा। अपनी जुबान से कई बार कहते हैं, मौत से डर नहीं लगता, पर जब मौत सामने खड़ी हो तो रोंगटें खड़े हो जाते हैं। पूरे बदन में जैसे बिजली का करन्ट दौड़ जाता है, खून जम जाता है। ऐसे समय न केवल शरीर पर दिमाग भी निश्चेत हो जाता है। तांगे वाले ने नीचे उतर कर कहा दीवान! जल्दी पहुंचाता हूं। देखा तो उसके हाथ में बड़ा सूजा था, सूजा देखकर मेरी कंपकंपी छूट गई। मन ही मन ईश्वर को याद करने लगा। इतने में एक मोटर वहां से निकली पर इतनी हिम्मत नहीं हुई कि आजाव् दे सकूं। आवाज निकले तो दूं। आश्चर्य तब हुआ जब तांग वाला मेरी तरफ न बढ़कर घोड़े के पास चला गया। एक-एक पल एक-एक वर्ष के सम्मान लगने लगा। पर सांस तब आई जब तांगे वाले ने कहा लगाम टूट गई थीं,

जोड़ दी हैं, देर तो नहीं हुई ? मेरी जुबान मुश्किल से हिली और दबी आवाज में कहा, नहीं। तांगा चलने लगा, मेरी आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। तांगे वाला फिर घोड़े से बातें करने लगा। पर मैं... अपने ही विचारों में गुम था। होंश तब आया जब हम क्लब के पास पहुंचे। तांगे से नीचे उतर कर, जेब में हाथ डाला और पूछा कितने पैसे दूं। तांगे वाले ने मेरी और देखा, आपकी आंखों में आंसू ? कोई गलती हुई क्या दीवान साहब ? मैं शरमा गया। आंसू पौंछे तो थे, लेकिन शायद कुछ रह गये थे, जिसे देखकर तांगे वाले ने प्रश्न किया था। मैंने हंसने का असफल प्रयास करते हुए उत्तर दिया, नहीं-नहीं मियां, सब खैरियत है, बोलो कितना दूं ? अत्यन्त प्रेम भरे शव्दों में उसने कहा, दीवान साहब! इन दिनों पांच रूपये भी लेते हैं, वैसे सरकार ने किराया डेढ़ रूपया तय किया हुआ है ? पर मैं आपसे फूटी कौड़ी भी नहीं लूंगा। आश्चर्यचकित होकर मैंने पूछा क्यों ? मुझमें श्रद्धा दिखाते हुए कहा, दीवान साहब मैं सिलाहिट हूँ। बहुत दिन हुए जब आप हम सिलाहटों के मोहल्ले में गीत संगीत कार्यक्रम में आये थे। मुझे आपके गीत बहुत पसंद आये। खासकर मुझे बादशाह जफर का कलाम बहुत पसन्द आया। उसी दिन मैंने दिल में संकल्प लिया था कि जब कभी भी आप मेरे तांगे में बैठेंगे आपसे किराया नहीं लूंगा। अल्लाह ने वह दिन दिखाया, आप मेरे तांगे में बैठे हैं, आपसे किराया नहीं लूंगा। मैंने खूब आग्रह किया पर उसने किराया नहीं लिया। तांगे वाले ने जाने से पहले कहा दीवान साहब अब जब कभी हमारे मोहल्ले में कार्यक्रम के लिये आयें, तब पूछना मोहम्मद तांगे वाला कहां है ? मुझे याद करोगे तो मेरी इज्जत रह जायेगी। तांगे वाला चला गया, पर मेरा मन परेशान हो गया। ऐसे प्रेमी, सच्चे गरीब इन्सान मोहम्मद की सच्चाई पर मैंने शक किया था। जो मुझे अपने तांगे में बिठाकर गदगद हुआ था। उसके ऊपर मैंने शक किया था, मेरी कमजोरी पर मैं शर्म सार था।

मै जब सिलाविटों के निमन्त्रण पर उनके मोहल्ले में गया, तब मोहम्मद को याद किया। मैंने महफिल में उसका नाम पुकारा। मोहम्मद दूर खड़ा था, वहीं से आवाज़ लगाई हुकुम! हाजिर हूँ। मैंने बोला तो सुन कलाम बादशाह जफर का। प्रसन्न होते हुए बोला कुर्बान जाऊं। सुनाओ। कलाम पूरा होने के बाद मैंने आवाज़ दी मेहरबानी करके मोहम्मद तांगे वाला स्टेज पर आये। आवाज आई आया हुकुम। मेरे सहयोगियों ने पूछा कोई अच्छा गायक है क्या ? मैंने कहा संगीत का शौकीन है। भीड़ में से निकलता हुआ मोहम्मद हम तक पहुंचा। मैंने अपने गले से फूलों की माला निकालकर मोहम्मद के गले में डाल दी। तालियों की गड़गड़ाहट से महिफल गूंज गई। मोहम्मद बोला, दीवान साहब आपने इस गरीब का मान बढ़ा दिया। मैंने सारा वृतांत अपनी कमजोरी वाले हिस्से को छोड़कर बता दिया कि मोहम्मद के दिल में कितनी उदारता एवं प्रेम हैं। उपस्थित समूह ने फिर तालियां बजाकर स्वागत किया। मोहम्मद मेरे पांवों में गिर पड़ा, मैंने उसे उठाया और मोहम्मद ने उठते हुए माइक्रोफोन अपने हाथ में लेते हुए भरे हुए गले से कहा, लायक तो दीवान साहब हैं, जो मुझ गरीब को इतना मान सम्मान दिया है। हम आपके अहसानमन्द हैं जो आप बिना किसी उजरे के हमारे निमंत्रण पर यहां आये हैं और संगीत का जादू बिखेरकर हमें खुश किया है। फिर मैंने आपको एक बार तांगे में बिठाया तो कौन सा अहसान किया ? मैं भरी महफिल में ऐलान करता हूँ कि जब कभी दीवान साहब मेरे तांगे में बैठेंगे मैं इनसे किराया नहीं लूंगा। जोश के साथ गले मिला और कहा आपका दास हूँ। कभी भी आजमाकर देख लेना। दृश्य अत्यन्त करूणाजनक था, मेरी और मोहम्मद की आंखों में तो आंसू थे ही, उपस्थित जन समूह की आंखे भी नम थी। पास में बिठाकर फिर राग छेड़ा खूब आनन्द आया।

विभाजन हो चुका था, जनसंख्या की अदला बदली शुरू हो गई थी। मैं अभी तक कराची में ही था। 6 जनवरी 1948 का दिन, सुबह 11:00 बजे मैं कॉलेज से घर आ रहा था। प्रिन्स रोड़ पार कर आर्टीलरी मैदान में पहुंचा तो एक तांगा मेरे पास आकर रूका। नज़रें उठाकर देखा तो मोहम्मद खड़ा था। गंभीर आवाज में बोला बैठो जल्दी। आज पैदल कहां जा रहे हो। मैंने हैरान होकर पूछा क्या हुआ है ? मोहम्मद ने आश्चर्य चकित होकर

पूछा दीवान साहब पता नहीं है! कत्ले आम हुआ है, गुन्डों ने लूटमार की है। आपके घर के पास तो खून की नदियां बहीं हैं। मैं तांगे में बैठ गया, रास्ते में पुलिस भीड़ पर डण्डे बरसा रही थी। कराची में इतना आतंक था और मैं बिलकुल बेखबर! घर पहुंचा मोहम्मद ने कहा, दीवान साहब मिल्ट्री आने वाली है, आप घर से बाहर नहीं निकलें। अगर कर्फ्यू या मार्शल लॉ लग गया तो मैं खुद आकर आपकी चाकरी करूंगा। कर्फ्यू लगा, दो दिन तक शहर बन्द था, जैसे कोई आदमखोर शहर में घुस आया हो। मुझे मोहम्मद की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। ड्राईवर सखी हमारे घर पर ही था और ढाढ़स बंधाता रहता था। मिल्ट्री ने हालात पर अपना नियंत्रण किया तो फिर भाग दौड़ शुरू हुई। जिन्होंने हर हालत में सिन्ध में रहने की ठान ली थी वे भी सिन्ध छोड़कर जाने लगे। मोहम्मद सुबह शाम तांगा लेकर आता था, जहां जाना होता ले चलता। एक दिन तांगे में बैठा तो बोला दीवान साहब तुम भी जाओगे? मैंने पूछा तुम्हारी क्या इच्छा है। उसने एकदम कहा जाना ही पड़ेगा, दीवान साहब पराये लोग आये हैं। उनमें प्यार मोहब्बत नहीं है। मैंने बोला-जैसी मालिक की इच्छा। मोहम्मद ने कहा-दीवान साहब जाने का फैंसला करें तो मुझे अवश्य बतायें। मैंने मजाक करते हुए कहा चलोगे मेरे साथ हिन्दुस्तान। ठंडी और लम्बी सांस लेकर बोला जब आप जैसे महबूब की यहां कद्र नहीं है तो मुझ गरीब मुसलमान को कौन पूछेगा? मैं हिन्दुस्तान नहीं चाहूंगा वहां पर आपको सरहद तक अवश्य छोड़ आऊंगा। प्रश्न किया दीवान साहब हवाई जहाज में जाओगे। या जहाज में? मैंने घर के सामान का विचार करके उत्तर दिया जहाज में। वह बोला क्यामाड़ी (कराची बन्दरगाह) तक मुझ गरीब के तांगे में चलना! छोड़कर आऊंगा तो कुछ तसल्ली मिलेगी।

वह समय भी आ गया। मोहम्मद हमें क्यामाड़ी तक ले आया। सामान उतारा सलाम करते हुए बोला, जहां पैर वहीं खैर (जहां पर पांव वहीं पर सुख शांति हो) अल्लाह आपको उम्र दराज करें। मेरे हाथ में चन्दन की सुनहरी, नकाशीदार छड़ी थी, मोहम्मद की तरफ बढ़ाते हुए कहा मेरी निशानी समझकर अपने पास रख लो। इसकी सुगन्ध को मेरी याद समझना। छड़ी लेकर सूघंते हुए गहरी सांस लेते बोला, आपको कभी नहीं भूलूंगा, परन्तु दीवान साहब मेरी एक अर्ज़ है मैंने पूछा बोलो मोहम्मद? मोहम्मद बोला जब हिन्दुस्तान पहुंचो और मुसलमानों के जुल्म याद करो तब मोहम्मद को जरूर याद करना। दीवान साहब सभी आदमी एक जैसे नहीं होते। सब मुसलमान एक जैसे नहीं हैं। मैंने मोहम्मद को गले लगाते हुए कहा मोहम्मद मेरे भाई तुम कितने नेक इन्सान हो। ईश्वर तुम्हें सदा खुश रखे। शेरदिल जवान सिसकियां भरकर रोने लगा। मैं भी खुद को रोक नहीं सका।

बन्दरगाह पर दूसरे दोस्त भी आये थे, सभी से विदा लेकर मैं जहाज पर चढ़ गया। बहुत से मित्र थे, पर मेरी धुन्धली आंखों में मोहम्मद की तस्वीर थी। गरीब पर बेगर्ज़, मिस्कीन परन्तु मजहब के ऊपर, मुसलमान पर इन्सान। दीवान साहब सभी मुसल्मान एक जैसे नहीं है, सभी मुसलमान बुरे नहीं है।

जहाज ने किनारा छोड़ा और सारे मित्र पहले ही जा चुके थे, परन्तु मोहम्मद खड़ा था हाथ का रूमाल हिलाया तो मोहम्मद ने छड़ी ऊपर कर अलविदा किया। मेरे अन्दर से आवाज आई। "तुम सुबह की दुनिया, मेरी बर्बाद न करना। मैं याद भी आऊं तो मुझे याद न करना, रातों को कभी तुम मेरी नींदें न उड़ाना, आंखों से कभी तुम मेरे आंसू न चुराना, भूले से कभी तुम मेरे सपनों में न आना, बर्बाद हूँ बर्बाद को बर्बाद न करना, मैं याद भी आऊं तो मुझे याद न करना।"

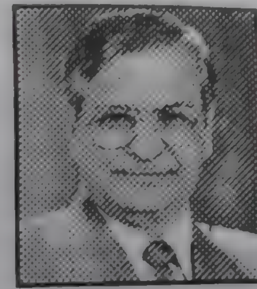
15 वर्ष बीत चुके हैं। सिन्ध की याद आती है। सिन्ध वासियों की याद आती है, पर सबसे अधिक याद आता है मोहम्मद। बहुत याद आता है। आश्चर्य तब होता है जब यहां हिन्दुस्तान के कितने मित्र याद नहीं आते पर वह अजीज़ इतना दूर, फिर भी याद आता है। प्यार में कौन सी दूरी। मोहब्बत के आगे कौन से फासले? शाह लतीफ ने कहा है-

के ओदा दीं दोर के दोर बि ऐदा सिपरी,
के सब्रजन न कदाहिं के न विसरनि मूर,

जींअ मींह तींअ दोस्त वराको दिल सीं।

कहानी

एक और विभाजन



-झम्मू छुगाणी

दिसंबर के महीने में किसी कार्यवश भोपाल से बाहर गया हुआ था। उन्हीं दिनों सिंध से वह भी हैदराबाद शहर, मेरे अपने शहर, से एक सिंधी, जो पेशे से इंजीनियर था, भोपाल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय मुस्लिम सम्प्रदाय के सम्मेलनों में भाग लेने आया था। वह भी बैरागढ़ में दादा जमयतराय के घर पर आया था। मुझे हरि ने बताया यार। आप होते तो आनंद ही कुछ और होता।

मैं बोला भैया मुझे क्या पता था कि मेरी सिंध, वह भी मेरे शहर हैदराबाद से कोईआ रहा है? खैर, बताओ तो सही बात क्या है ?हरि कहने लगा बात कुछ इस प्रकार है। 1947 में देश के विभाजन के समय दादा जमयतराम जिसकी उम्र इस समय 75 वर्ष है, वह और उसकी पत्नि, उसका छोटा भाई, दो लड़कियां और इकलौता बेटा हरदास भी हैदराबाद से जाने वाली गाड़ी में उसके साथ थे। रात के सनुसान अंधेरे में, सहमे हुए यात्रियों के साथ जब गाड़ी खोखरा पार की तरफ बढ़ी रही थी, तब बीच में एक सुनसान स्टेशन पर गाड़ी रुक गई और देखते ही देखते सैकड़ों मुजाहिर डिब्बों में ''अल्लाहो अकबर'' और 'जब कायदे-आजम जिंदा है, गांधी की तमन्ना कौन करे' के भड़काऊ नारे लगाते हुए घुस गये। मारो काटो काफिरों को कहते हुए लूट-पाट करने लगे। थोड़ी देर बाद गाड़ी चलने लगी और आगे स्टेशन पर काका जमयतराय अपने परिवार के साथ जल्दबाजी में उत्तर गया।

क्योंकि गाड़ी उस स्टेशन पर कुछ ही क्षण रुकती थी। जब गाड़ी चलने लगी तो मालूम हुआ कि इकलौता बेटा हरदास है ही नहीं।अ ागे वाले स्टेशन पर कुछ ज्यादा ही खून-खराबा था। इसलिये अपने जिगर के टुकड़े को ईश्वर की कृपा पर छोड़ दिया।

कहानी बताने का हरि का तरीका दिलचस्प था। आश्चर्य चकित होकर मैंने पूछा 'फिर क्या हुआ?' बोल होगा क्या? जमयतराम ने अपने छोटे भाई को अगले स्टेशन की तरफ भेजा तो खुद पीछे के स्टेशन पर देखने गया। पर बेटा नहीं मिला। निराश होकर पूरा परिवार अजमेर के पास देवली कैम्प में पहुंचा। उन्होंने आसपास के कई कैंपों में तलाश की लेकिन बेटा नहीं मिला। भाई को एक बार सिंध भेजा। भाई सिंध में रेलवे-स्टेशन, गांव शहर ढूंढता वापस लौटा। लेकिन बेटे का पता नहीं मिला और अंत में थक हारकर, सारी आशाओं को छोड़ बैठ गये।

इतना सब होने के बाद भी जमयतराय ने कभी हिम्मत नहीं हारी। दुनिया भर की अखबारों में अपने बेटे की फोटो जो विभाजन के समय मां के साथ खिंचवाई गयी थी, को प्रकाशित करवाता रहा।

हरि के बात करने का अंदाजा निराला है वह किसी बात को सीधे तरीके से रखने की बजाए घुमाता बहुत है। टी.वी. पर समाचारों का समय हो रहा था, मैं भी बात सुनने के मूड में नहीं था, मैंने कहा 'यार! शेष कल सुन लेंगे।' हरि को एहसास हुआ कि मुश्किल से श्रोता मिला है, ठीक उसी तरह जैसे कवि को अपनी नयी रचना सुनाने के लिये कोई श्रोता मिले और श्रोता खूब पिंजड़े में बंद पंछी की तरह छटपटाता रहे। पर कवि के चंगुल से निकलने का प्रयास विफल होता है। मेरा भी हाल ठीक वैसा ही था। हरि बोला यार कहानी का मुख्य मोड़ तो अब आया है, अपने आपको आजाद कराना मुश्किल था। मैं हरि को अपने कक्ष में ले आया ताकि परिवार के बाकी सदस्य आराम से समाचार सुन सकें। हरि ने पंलग पर पांव पसारते हुए

सिगरेट सुलगाया और एक लंबा कश लेते हुए धुआं कमरे की छत पर फैलाते हुए बोला अब पूछो कि हरदास का क्या हुआ? मैंने भी रट्टू तोते की तरह कहा हरदास का क्या हुआ? बोला जिस समय ट्रेन में लूटपाट हो रही थी, उस समय किसी ने हरदास को ट्रेन से नीचे उतार दिया। रोता बिलखता बालक स्टेशन के बाहर चला गया और ढूंढ़ता रहा अपना घर और मां-बाप पर वे हो तो मिलें। बालक हरदास इधर-उधर भटकता रहा और अपनी जिंदगी के दिन काट रहा था। कभी होटल पर तो कभी किसी दुकान पर ऐसे करते-करते वह कराची पहुंच गया। कराची में होटल पर काम करते समय उसकी मुलाकात अल्लाह के एक नेक बंदे से हो गई। इस नेक बंदे ने हरदास की कहानी सुनी और कहा कि मेरे तीन बेटियां है, तुम मेरा बेटा बनना कबूल करोगे। हरदास ने बात मान ली, और चल पड़ा खुदा के नेक बंदे के साथ। दस वर्ष की आयु में जब इस्लामी रीति रिवाज के अनुसार उसका 'खतना' करवाया गया और नाम बदला गया तो अंतर मन में द्वंद्व चालू हो गया कि अवश्य मेरे मां-बाप हिन्दू हैं और मैं हिन्दू हूं। काश उनका पता मिल जाए। जीवन का उद्देश्य जैसे मिल गया।

किन्तु समय की मार। हरदास तो अब हमीद खान बन चुका था, मैट्रिक के बाद अध्ययन के लिये कराची आ गया जहां उसने बी.ई. सिविल इंजीनियरिंग में की। उसके बाद हैदराबाद आकर रहने लगे। अपने नये माता-पिता, बहिनों के साथ समय गुजारने लगा। उसे अपनापन भी उनसे खूब मिला। समय बीतता गया। हमीद खान का विवाह भी इस्लामी रिवायतों के साथ संपन्न हुआ। तबदीली केवल इतनी हुई थी कि अब वह हिन्दू सिंधी की बजाए सिंधी मुसलमान बना था। परन्तु मां-बाप से बिछुड़ने का दुःख समय भी नहीं भर पाया था। वह कभी-कभी सिंध के मंदिरों एवं गुरुद्वारों में भी जाता रहता। हिन्दुस्तान से आने वाले हर यात्री से पूछता रहता था कि उनकी नजर में ऐसा कोई परिवार तो नहीं है, जिनका बेटा ट्रेन में रह गया हो जिसका नाम हरदास हो।

हमीद खान जो अब सिविल इंजीनियर था, हैदराबाद (सिंध) में मकान बनाने और बेचने का काम करता था। एक दिन उसकी नजर अखबार में छपी एक तस्वीर पर पड़ी जिसमें औरत के पास एक बच्चा बैठा हुआ था, नीचे एक पंक्ति में लिखा था, मां अपने बच्चे की तलाश में। बस फिर क्या था राही को जैसे मंजिल मिल गयी हो।

हमीद खान दौड़ता हुआ अखबार के दफ्तर पहुंचा और उस विज्ञापन की पूरी जानकारी संपादक से लेनी चाही। पर उसे क्या मालूम था कि मंजिल अभी कोसों दूर है। संपादक से पता चला कि यह विज्ञापन उन्हें दुबई के खलीज टाईम्स के माध्यम से मिला है। हमीद की आशाओं पर पानी फिर गया पर उसने उम्मीद नहीं छोड़ी।

उसका एक मित्र दुबई जा रहा था। उससे आग्रह किया कि इस विज्ञापनदाता का पूरा पता खलीज टाईम्स से लेकर आये। मित्र न छोटा सा काम कर दिया। हमीद को पता लगा कि उसका पूरा परिवार हिन्दुस्तान के मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के पास स्थित (सिंधु नगर) बैरागढ़ में रह रहा है। उसकी खुशी का अंदाजा नहीं रहा, लगा भोपाल पहुंचने के रास्ते ढूंढने।

भोपाल में अंतरराष्ट्रीय स्तर का मुस्लिम सम्प्रदाय का एक मेला ताजुल मस्जिद में दिसंबर के महीने मे लगता है। ठीक उसी तरह जैसे हरिद्वार में कुंभ का मेला लगता है। हमीद खुश था। वह यह बात अपने दोस्तों और मिलने वालों को कहने लगा कि उसके बिछड़े हुए मां-बाप मिल गये हैं। किसी दोस्त ने राय दी कि दिसंबर से भोपाल में हर वर्ष मुस्लिम पंथ का अंतरराष्ट्रीय स्तर का मेला लगता है। उसमें भाग लेने के लिये पाकिस्तान से कई लोग जाते हैं। तुम भी उसमें जा सकते हो। इस बहाने तुम्हें वीजा मिल सकती है। शायद बैरागढ़ टाउनशिप भोपाल के आस-पास ही होनी चाहिए। वहां तुम अपने बिछड़े हुए मां-बाप से मिल सकते हो।

मित्रों की सलाह पर उसने ।

वीजा के लिये आवेदन किया। वीजा मिल भी गई। हमीद लग गया सिंध की सौगातें इक्ट्ठी करने। ईश्वर कृपा से वह सकुशल भोपाल पहुंच गया। हरि ने यह सारी बातें एक ही सांस में कह डाली। अब मेरी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। मैंने एक सिगरेट उसे देते हुए कहा फिर क्या हुआ? हरि ने सिगरेट सुलगाया धुंए के गोल छल्ले मुंह से निकालने लगा। कहानी नया मोड़ ले रही थी, मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। मैंने अधीर होकर पूछा फिर क्या हुआ? बताओ। बताता हूं। होगा फिर क्या? ढूंढते-ढूंढते हमीद खान पहुंच गया अपने बिछड़े हुए मां-बाप से मिलने। ईश्वर की लीला देखो बेटा माँ-बाप के सामने खड़ा है, दोनों उसे पहचान नहीं रहे हैं। पहचान के लिये उसे अपनी दास्तान सुनानी पड़ी, फिर क्या था। दास्तान सुनाते-सुनाते हमीद की आंखों मे आंसू आ गये, पूरा परिवार भावुक हो उठा। पिता, पुत्र और भाई बहिन, मां बेटे के पुर्नमिलन को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है। हमीद की मुलाकात यहां दोनों बहिनो-भाईयों यहा तक भांजे-भांजियों से भी हुई, नहीं हुई तो बस चाचा नारायणदास से। क्योंकि वह किसी काम से सप्ताह भर के लिये बाहर गया हुआ था। हरि अब जाने की तैयारी में था। मैनें भी कहानी की तह तक पहुंचने का फैसला करते हुए हरि को विदा किया। दूसरे दिन कालेज से लौटते समय जमयतराय के घर पहुंचा। दादा जमयतराय ने भी शब्द-ब-शब्द वहीं कहानी बताई जैसी हरि ने बताई थी। मुझे अहसास हुआ कि हमीद अपने पूरे परिवार पर अपना प्रभाव छोड़ गया। ऐसा प्रभाव जो कभी नहीं टूट सकता, कभी नही छूट सकता था। हमींद खान ही हरदास है। यह प्रमाणित करने की आवश्यकता है। इसके लिये आवश्यक है चिकित्सकीय जांच। पर इससे भी ज्यादा अहम प्रश्न है जिनके उत्तर ढूंढने आवश्यक हैं। क्या हमीद अपनी पत्नि को छोड़ देगा, क्या हमीद उस परिवार को छोड़ देगा? जिसने उसे पाल-पोस कर बड़ा किया। क्या वह अपनी जिम्मेदारियों को छोड़ देगा? यह सभी गंभीर प्रश्न है। मेरे मस्तिष्क में इन प्रश्नों के उभरते ही मैंने जमयतराय से प्रश्न किया, आपकी आत्मा क्या कहती है? क्या हमीद ही हरदास है?

जमयतराम ने यकायक उत्तर दिया। हम अपनी खुशी के कारण दूसरे की खुशियों को दफन नहीं करेंगे। यदि किसी तरह प्रमाणित हो जाता है कि हमीद खान ही हरदास है, मेरा बेटा है तो भी हम कभी नहीं चाहेंगे वह अपनी जिम्मेदारियों से किनारा करे, अपना परिवार छोड़कर हमारे पास चला आये। हम एक और विभाजन कभी नहीं चाहेंगे।

कहानी

वाक आउट

• ए.जे. उत्तम

कार्यालय में समय पर पहुंचने के लिये केसवाणी ने जैसे अपनी आखिरी सांस की बाजी लगा दी। पर जी-तोड़ प्रयत्न के बावजूद भी कार्यालय में दस बजकर पैंतिस मिनट पर ही प्रवेश कर पाए। चर्चगेट से सचिवालय तक हांफते हुए रास्ता तय किया था, फिर भी दस-बारह मिनट देर हो गई। लिफ्ट के लिए ठहरने के बजाए दो-दो सीढ़ियां फलांगते हुए अपने कमरे के पास पहुंचे। पर उनके आठों साथियों की सम्मिलित दृष्टि ने उन्हें जड़ कर दिया।

एक सिंधी साथी ने स्तब्धता तोड़ते हुए अंग्रेजी में कहा- 'श्रीमान् इतने दिनों बाद आए हो और वह भी देर से...? अब तो जाओ सीधे असिस्टेंट सेक्रेटरी के पास और वार्निंग लेकर आओ।' बस सभी के मुंह खुल गए। गुजराती मित्र ने कहा- 'आ, बिचारा नी नवा काइदा नी, कयौं थी खबर होय?' महाराष्ट्रीयन बंधु ने कहा- 'केसवाणी कधी उशिरा ये नाहीं। (केसवाणी कभी देर से नहीं आता)'

केसवाणी बेचारा परेशान हो गया। समझ नहीं पाया कि आखिर माजरा क्या है। खाने का टिफन अलमारी में रखा, पर कानों में वही आवाज गूंज रही थी- 'जाओ, असिस्टेंट सेक्रेटरी के पास जाओ।' आखिर किसी ने पास आकर बात समझाई कि जो पहली बार दस बजकर तीस मिनट के बाद कार्यालय में आएगा उसे चेतावनी मिलेगी। दूसरी बार देर से आने पर एक दिन की छुट्टी काटी जाएगी। तीसरी बार ऐसा करने पर उसके विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाहीकी जाएगी। एक-एक बात सुनकर केसवाणी हैरानी से उछल पड़ा, उसके मुंह से निकल ही गया- 'चौथी बार में?' घर का टिकट, और क्या? सिंधी क्लर्क ने शरारती लहजे में कहा।

पंखे के नीचे खड़े होने पर भी केसवाणी के ललाट से पसीना चू रहा था। पुराने कपड़े से बने रुमाल को निकालकर, वह पसीना पोंछने लगा। उसके सामने नन्हीं मीनू का चेहरा घूमने लगा। बच्ची उंगली पकड़कर खड़ी हो गई, नहीं तो दो मिनट भी देर नहीं होती। विरार से फास्ट ट्रेन मिल जाती। जल्दी ऑफिस में पहुंचने पर ऑफिसर की मनहूस सूरत तो नहीं देखनी पड़ती। बेचारी बच्ची छुट्टियों मे पिता से खूब हिलमिल गईथी। छुट्टियों से पहले केसवाणी बड़ी सुबह घर से निकलता था तो मीनू सोई होती थी और रात के नौ बजे दफ्तर से घर पहुंचता था तो सभी बच्चे सो चुके होते थे। फिर बड़बड़ाते हुए उसने स्वयं से कहां- ये अजगर जैसी रेलें ही अगर समय पर पहुंचा देती तो भी मास्टर (हाजिरी रजिस्टर) मिल जाता।

केसवाणी ने अधिकारी के कमरे के पास जाकर दरवाजे के सुराख से झांक कर देखा कि अंदर कोई बैठा तो नहीं है। फिर भीतर गया। साहस जुटाकर वितनी की कि श्रीमान, मैं तो अवकाश पर था, मुझे नए आदेश की जानकारी नहीं थी, पुराने आदेश के अनुसार दस-चालीस पर समय से आया हूं।

'तुम्हें नए आदेश की जानकारी होनी चाहिए थी। आदेश-आदेश है। यह ला वार्निंग।'

केसवाणी ने हाथ बढ़ाकर चुपचाप वार्निंग का कागज ले लिया बेचारा सोच-विचार कर तो बहुत आया था कि न्याय की गुहार लगाऊंगा, पर अफसर के रौब के आगे सहम गया। जी मे आया कि कह दे कि हमें दफ्तर के सामने ही क्वार्टर बनवा दें, पत्नी और बच्चों के साथ चौबीसों घंटे सरकार की ही सेवा करते रहेंगे। पर दर्द का घूंट पीकर लौट आया।

वह कुरसी पर बैठा तो सही, पर दिल दिमाग मे खलबली मची हुई थी। लगभग पांच वर्षो बाद नई-नई तरक्की मिली थी। बाबू से सहायक बना था। एक सौ अस्सी रूपये तनख्वाह। बड़े दिनों के बाद पैसों की तंगी कम हुई थी, कि फिर वार्निंग की

शामत आ पहुंची। सोचने लगा, हम एक हाथ में फाइलें और दूसरे हाथ में अपनी जिंदगी का सारा बोझ लेकर, ट्रेनों में लटकते हुए मीलों लंबा सफर तय करके दफ्तर आएं और फिर भी अगर कभी कभार कुछ मिनटों की देर भी हो जाए, तो क्या हुआ ? भला देर से आने की सजा दी जा सकती है, तो मुझ जैसे हजारों कर्मचारी को रोज शाम को एक-एक, दो-दो घंटे कार्यालय समय के बाद भी बैठने और छुट्टी के दिन भी ऑफिस में आकर काम करने का मुआवजा भी मिलना चाहिये। कभी शासन ने ऐसा ओरव-टाईम देने के बारे में भी सोचा है ? घर की देखभाल भी न करें, दोड़ते-भागते दफ्तर पहुंचे, घर देर से जाएं फिर भी फाइलों का बंडल ले जाएं, प्रेम और आराम को भूलकर खटकते रहें, तब भी पूरा मुआवजा न मिले ? यह कैसी जिंदगी हैं ? हर समय जैसे मगरमच्छ के मुंह में पड़े हैं।

उसे याद आया, ये सारे शब्द, कुछ दिन पहले दफ्तर से लौटने पर उसकी पत्नी ने उससे कहे थे- सारा दिन जैसे मगर के मुंह में पड़ी हूं। मेरा कोई एक हो तो संभालू। गोप तो जितना बड़ा उतना निकम्मा। पढ़ने और घर के काम से कोई मतलब ही नहीं। बस सारा दिन गुल्ली-डंडा, मंजा-पतंग और लट्टू-डोरी और तो कभी हंसता हुआ, कभी किसी को पीटकर आता है तो कभी खुद पिटकर। वह लड़की पारू फिर कौन सी अच्छी है। बस भगवान ही बचाए। पढ़ने क्या जाती है। आज किताब चाहिये, आज कॉपी चाहिये, आज रिबन चाहिये, आज नया स्कर्ट चाहिये। बस, सिर्फ चाहिये और चाहिये।

'मीनू की शिकायत करना बाकी रह गई है' केसवाणी ने मन ही मन जैसे याद करते हुए कहा था। शिकायत फिर किससे करूं। आपको तो जैसे घर बाहर का होश ही नहीं हैं। घर घोड़ों को, बच्चे चोरों को। किसी के कान खींचो तो कुछ कहूं भी। सभी के साथ एक साथ माथापच्ची करनी पड़ती है। सुबह को पांच बजे उठती हूं। बच्चों के लिये नाश्ता बनाऊं, उन्हें स्कूल भेजने के लिये तैयार करूं, आपके लिये खाना बनाऊं, फिर आपकी बेटी के लिये दलिया बनाऊं और भी बहुत कुछ। आप जाते हैं और वह उठ खड़ी होती है। नींद में से उठते ही खाने के लिये वो हल्ला मचाती है कि बस, ताए (चाय) दे, खिची (खिचड़ी) दे, तीता फल (सीताफल) चाहिये। खाने की चीजे न मिले तो बाबा-बाबा की चिल्लाहट और चीख पुकार शुरू कर देगी और आप तो रहे सारा दिन दफ्तर में। घर लौटें तो फाइलों का बंडल साथ में लेते आएं। रात के ग्यारह बजे तक तो लिखा-पढ़ी करते रहें न कोई बातचीन, न हंसी-मजाक। छुट्टी वाले दिन भी दफ्तर में काम करें। पता नहीं कैसे मरों को दया आ गई, जो आपको पंद्रह अगस्त के दिन दफ्तर में काम करने नहीं दिया और यही तो वह स्वतंत्रता दिवस है जब हमने अपना मुल्क छोड़ा था। दुःखों के जंजाल में आ फंसे थे। सिंध में जब आप नौकरी करते थे चार सालों में कभी भी आप इतनी सुबह, इतनी जल्दी घर से नहीं जाते थे। न ही कभी इतनी देर से घर लौटते थे। साथ-साथ घूमते-फिरते थे, नाते-रिश्तेदारों, दोस्तों सहेलियों से मिलते थे। पर यहां तो महीनों हो गये, बम्बई की शक्ल नहीं देखी है। तनख्वाह भी बढ़ी तो पहले रिश्तेदारों की भरपाई की। मेरे लिये तो वही तंगी-बेहाली बनी हुई है। दूसरों के पति अफसरों को पटाकर दफ्तर में भी मौज करते हैं और घरों में भी।

उस समय केसवाणी ने पत्नी को खुश करने के लिये सोए हुए गोप का कान मरोड़ते हुए कहा था- 'अरे सुनता है ? फिर कभी अगर सुना, कि पतंग उड़ाई है या पत्ते खेले हैं तो टांगे चीकर रखदूंगा।' और फिर उसने कुछ देर के लिये फाईल परे सरकारकर, पत्नी की दिलजोई की थी।

अगर पास वाला महाराष्ट्रीयन साथी केसवाणी का ध्यान आकर्षित नहीं करता तो पता नहीं कितनी देर वह

'दोस्त, पता है कि जो पांच बजे के बाद नहीं बैठता, उसे बैठाने के लिये अफसर सीधे या टेढ़ी तरीके से मजबूर करते हैं। सुना है। यह भी आदेश निकला है कि 'रिसेस' में बाहर जाने और आने के लिये भी 'मास्टर' पर हस्ताक्षर करने हैं।'

अपने विचारों में डूबा रहता।

'किस सोच में सोए हुए हो दोस्त?'

'यह तो घोर अन्याय है, मंत्रियों की तरह हमारे पास गाड़ियां तो हैं नहीं।' केसवाणी ने जवाब दिया।

'तुम्हें मालूम नहीं है, कि आज रेल की देरी के कारण मैं इस मनहूस वार्निंग से बचने के लिये खाने के लिए लाए गए पैसे खर्च कर, टैक्सी से आकर ठीक समय पर दफ्तर पहुंचा हूं।

'भला है फरमान कि साढ़े पांच बजे के बाद कोई भी दफ्तर में नहीं बैठे?'

'दोस्त, पता है कि जो पांच बजे के बाद नहीं बैठता, उसे बैठाने के लिये अफसर सीधे या टेढ़ी तरीके से मजबूर करते है। सुना है यह भी आदेश निकला है कि 'रिसेस' में बाहर जाने और आने के लिये भी 'मास्टर' पर हस्ताक्षर करने हैं।'

'यह अच्छी नादिरशाही है पेशाब करने जाने के लिये भी कोई मास्टर रखते?' केसवाणी की इस व्यंग्योक्ति से सब ठठाकर हंस पड़े।

'अरे बाबा' महाराष्ट्रीयन असिस्टेंट ने कहा, 'ये सब इनकी चालाकियां है। कुछ लोगो को निचोड़कर, ज्यादा काम लेना है। सुना नहीं कि कैसे कारखानों, फैक्ट्रीयों मे मजदूरों की छटनी करके, ज्यादा मजदूरों का काम, कम मजदूरों से लिया जाता है? फर्क सिर्फ इतना ही है कि, हम मध्यवर्गीय लोग गूंगी गायो की तरह, सरकारी दबाव सहते हैं और मजदूर जुल्म का साहस के साथ मुकाबला करते हैं।'

'बात तो सही है। जितना ज्यादा ईमानदारी से रहते हैं, उतनी ही जोर से निचोड़े जाते हैं। हमें भी अब न सिर्फ छुट्टियों में दफ्तर नहीं आना चाहिये, बल्कि साढ़े-पांच बजे के बाद एक मिनट भी दफ्तर में नहीं रुकना चाहिये।' केसवाणी ने अपना विचार व्यक्त किया।

'जरूर, जरूर, कल भी सारे विभाग में इस बात पर बड़ा हो-हल्ला मचा और तुम्हारे उदाहरण ने तो हमारी आंखे ही खोल दी हैं। आज से साढ़े पांच बजे के बाद कोई भी नहीं बैठेगा।' गुजराती सुप्रिटेंडेंट ने निर्णायक स्वर में कहा।

केसवाणी की आंखे घड़ी के काटों पर जमी थी।

साढ़े पांच बजे तो कमरा खाली हो गया। केसवाणी ने बाहर देखा, तो दूसरे कमरों से भी कई कर्मचारी बाहर निकल रहे थे। उसे चेतावनी का मुआवजा मिल चुका है। आज उसके हाथ हल्के थे। दिल और दिमाग हल्का था। चेहरे पर खुशी झलक रही थी।

और अपने नित्य नियम के अनुसार अधिकारी जैसे ही साढ़े-पांच बजे के बाद क्लर्कों के कमरे में आया, तो सन्नाटा छाया हुआ था। उसे अनुभव हुआ कि जैसे स्पीकर के सदन में प्रवेश करते ही, सदस्य 'वाक-आउट' कर गए हैं।

स्वतन्त्रता संग्राम और सिन्ध का योगदान

• लेखक - प्रेम मोतीराम तनवाणी

नादिरशाह द्वारा बन्दी ब्राह्मणों और स्त्रियों को सिन्धीयों ने दिलाई थी मुक्ती - 1723

गतांक से आगे :

ईरानी लुटेरा नादिरशाह और कलात- अफगानिस्तान के नसीरखान ने मिलकर, भारत में हत्या और लूटपाट करने के साथ ब्रज और मथुरा के ब्रह्मणों और स्त्रियों को बन्दी-गुलाम बना लिया था। ईसवीं सन् 1723 में नादिरशाह लाहौर से काबुल के रास्ते अपने देश ईरान लौटा।

नसीरखान उन हिन्दू बन्दियों का साथ लेकर, मुल्तान से शिकारपुर-सिन्ध के रास्ते अपने देश ले जाने के लिए शिकारपुर पहुँचा। इसकी सूचना पाकर सिन्ध के प्रसिद्ध **नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी** परिवार के सेठ **केवलराम** (नाऊँमल के तड़दादा) और उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती तखत बाई** ने, प्रति व्यक्ति 100 से 250 रुपए तथा लुटरों की फौज को रास्ते के लिए अन्न आदि देकर उन ब्राह्मणो और स्त्रियों को छुड़ाया था। इसमें शिकारपुर सिन्धी-हिन्दू पन्चायत ने भी सहयोग किया था। सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी परिवार की हिन्दुस्तान के लगभग सभी मुख्य शहरों में व्यापारिक कोठियाँ (शाखाएँ) थीं। इन कोठियों के मुन्शियों के माध्यम से उन ब्राह्मणों और स्त्रियों को रास्ते के लिए आवश्यक धन और अन्न आदि भी देकर वापस ब्रज और मथुरा पहुँचाया गया।

1750 - दीवान गिदूमल ने अनोखी अकल से अहमदशाह अब्दाली के हमले से बचाया था सिन्ध को

ईसवी सन् 1700 से 1783 तक सिन्ध में कल्होड़ा वंश के मुस्लिमों का राज था। इस वंश के मियाँ नूर मोहम्मद खान के समय, 1740 में ईरान के नादिरशाह ने सिन्ध पर हमला किया। हमले से पहिले खबर मिलते ही नूर मोहम्मद जान बचाकर अमरकोट भाग गया। एक करोड़ रुपए नगद और 20 लाख रुपए वार्षिक कर देने की शर्त पर नूर मोहम्मद को वापस सिन्ध की सत्ता मिली। लगभग 1750 में ईरान में अहमदशाह अब्दाली ने सत्ता में आने के बाद, कर न मिलने के बदले सिन्ध पर हमला करने की सूचना भेजी। हमले की सूचना मिलने पर नूर मोहम्मद ने अपने बुद्धिमान दीवान गिदूमल (मन्त्री) के साथ विचार- विमर्श करने के बाद एक योजना बनाई और उन्हें, सुन्दर शिल्पकारी से सजी बड़ी-बड़ी तीन पेटियों के साथ ईरान भेजा।

दीवान गिदूमल ने अब्दाली की दरबार मे सुन्दर पेटियाँ भेंट देते हुए कहा, 'अब्दाली साहब! मैं आपके लिए सिन्ध की नायाब सौगात लेकर आया हूँ। महिरबानी करके इस भेंट को स्वीकार करें।' किन्तु पेटियाँ खुलवाने पर उनमें से हीरे-जवाहरात के बदले केवल मिट्टी निकली, जिसको देखकर अब्दाली गुस्से से आग-बबूला हो गया। जिस पर दीवान गिदूमल ने कहा, 'सिन्ध की इस मिट्टी में कई हिन्दू और मुस्लिम सन्तों की खाक मिली हुई है, हमारे लिए इस पवित्र-पाक सौगात से बढ़कर कीमती कोई और चीज नहीं है।" यह सुनकर अहमदशाह अब्दाली खुशी से गद्‌गद् हो गया और उसने झुककर, अपने माथे पर सिन्ध की उस पवित्र मिट्टी का तिलक लगाया।

इस तरह दीवान गिदूमल ने अपनी अनोखी अकल से, अहमदशाह अब्दाली के हमले से सिन्ध को बचाया। कल्होड़ा वंश के समय में ही 'नीरन कोट' का नाम बदलकर हैद्राबाद रखा गया और और दीवान गिदूमल की देख-रेख में पुराने किले के स्थान पर नया किला बनवाया गया।

सिन्ध का मुक्तिदाता सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी

सबकी सुन्नत हो गई होती, अगर नाऊँमल सी हस्ती न होती


सेठ नाऊँमल भोजवाणी

सिन्ध में मुस्लिम कल्होड़ा शासन के बाद 1783 से 1843 तक टालपुर के मुस्लिम शासक मीरों ने शासन किया। वे कुल चार भाई थे और सिन्ध को चार भागों में बाँटने के बाद भी एक-दूसरे के विरुद्ध हत्या आदि करने की सीमा तक लड़ते रहते थे। उनका शासन इतना कमजोर था कि वे, अफगानिस्तान से निष्कासित होकर शिकारपुर में रह रहे **शाह शुजा**, पन्जाब के **राजा रंजीतसिंह** और अंग्रेजों को प्रति वर्ष लाखों रुपए कर चुकाते थे।

टालपुर के मीरों के समय सिन्ध की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी अधिकाँश स्कूल-कॉलेज, हस्पताल और धर्मशालाएँ आदि सार्वजनिक लोक-कल्याण के सभी भवन सिन्धी-हिन्दू व्यापारियो के द्वारा ही बनवाए गए थे। अंग्रेजों के शासनकाल में भी लोकहित के कार्यो में 98% धन, सिन्धी-हिन्दुओं का ही लगा हुआ था, जबकि उनकी जनसंख्या केवल 27% थी। इसके बाद भी सिन्धी हिन्दूओं को आए दिन मुस्लिमों की लूट-पाट और अपहरण का शिकार बनाने के साथ जबरदस्ती मुसलमान बना दिया जाता था।

मोहम्मद इब्राहिम जोयो की पुस्तक **शाह सचल सामी** में लिखा है, 'धार्मिक हालत यह थी कि कोई भी यह शिकायत करे कि किसी सिन्धी-हिन्दू ने रस्सा शब्द कहा हो या कोई कहे कि मैं वाणियां (व्यापारी) नहीं हूँ तो इसका अर्थ मैं हिन्दू नहीं हूँ मानकर दो मुसलमानों की गवाही पर जबरदस्ती सुन्नत कर उसे मुसलमान बना दिया जाता था। एक हिन्दू महिला ने एक मुसलमान को बेईमान कहा, उससे पूछा गया क्या तुम ईमान रखती हो, उसके हाँ कहने पर उसे मुसलमान बना दिया जाता था। ऐसे कई उदाहरण हैं।' नागरिक अधिकारों की स्थिति के बारे में बड़े-बूढ़े बताते हैं, 'गणमान्य हो या धनवान, किसी भी सिन्धी-हिन्दू को, घोड़े पर सवारी करने का अधिकार नहीं था। गधे या खच्चर पर भी सवारी करने वाले सिन्धी हिन्दू को, मीर परिवार के रिश्तेदारों या सरकारी अधिकारी के सामने आ जाने पर गधे या खच्चर से उतरकर, सड़क के किनारे एक तरफ खड़े होकर सलाम करना पड़ता था। ऐसा न करने पर उसे अपराधी माना जाता था। हिन्दुओं के गणमान्य और धनवान व्यक्तियों को आए-दिन अकारण अपमानित किया जाता था।'

मीरों की अय्याशी का नीचतम प्रमाण यह था कि मीर गुलाम अली ने अपने उस बूढ़े **दीवान सेठ गिदूमल** की कन्या **सदोरी** के साथ जबरन विवाह करना चाहा था। जिसने अपनी अनोखी अकल से कल्होड़ों केसमय ईरान के अहमदशाह अब्दाली के हमले से सिन्ध को बचाया था। ऐसे देश-भक्त की कन्या को अपना हिन्दू धर्म बचाने के लिए जहर का प्याला पीना पड़ा था। मीर गुलाम अली ने इसे अपना अपमान मानकर, दीवान गिदूमल की हत्या करवा दी। कल्होड़ा-राज में भी प्रसिद्ध **सूफी सन्त शााह इनायत** को शहीद किया गया। मीरों की शह पर कट्टर-पंथियों ने सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी के पिता होतचन्द का अपहरण कर तरह-तरह की क्रूर यातनाएँ देने के साथ सुन्नत कर, उसे जबरदस्ती मुसलमान बनाना चाहा था। किसी तरह सेठ

होतचन्द भागकर लखपत-गुजरात में जाकर अपने गुमाश्तों-मुन्शियों से मिले और सिन्ध की मुक्ति के बाद ही अपने घर वापस लौटे।

मीरों के समय सिन्ध की आर्थिक स्थिति इतनी अधिक कमजोर थी कि अंग्रेज, सिन्ध को दुर्भाग्यजनक घाटी मानते थे। वे 1803 से 1842 तक चार सन्धियों के द्वारा लाखों रुपए कर के रूप में पाकर सन्तुष्ट थे। चारों मीर भाईयों के बीच खुद को अंग्रेजो का हितैषी सिद्ध करने की होड़ लगी रहती थी। इसलिए अंग्रेज, सिन्ध अपने अधिकार में करने के लिए जरा भी उतसुक नहीं थे। जब 1939 में अफगानिस्तान पर अधिकार करने के लिए अंग्रेजों की फौज सिन्ध में पहुँची थी तब मीरपुर खास के मीर शेर मोहम्मद ने अपनी और हैदराबाद के मीर की फौज को साथ लेकर, हैदराबाद के गिदू बन्दरगाह के पास अंग्रेजों के गोदाम पर हमला करके लूटपाट करने के बाद आग लगा दी। कर्नल पाटिंजर के सहयोगी लेफ्टीनेन्ट लेकी, जो उस समय इस गोदाम के पास ही रहता था, वह जान बचाकर भाग निकला और बाद में ठट्टे में मौजूद अपनी फौज को लेकर सिन्धू नदी के दाहिने किनारे पर पहाड़ी टेकरी पर बसे **झिरक नगर** में जाकर फौजी छावनी में मोर्चा बाँधा। इस मोर्चे की सूचना पाकर हैदराबाद के मीर नूर मोहम्मद ने माफीनामा लिखने के साथ 27 लाख रुपए हर्जाना भी देना मन्जूर किया।

सिन्ध में पिछली चार-पाँच पीढ़ियों से देश-विदेश में प्रसिद्ध व्यापारी भोजवाणी परिवार के **सेठ नाऊँमल** के अंग्रेज-अफसरों के साथ पहिले से ही गहिरे सम्बन्ध थे। अंग्रेजों को सिन्ध के रास्ते, अफगानिस्तान जाने के लिए उनको हर प्रकार की सहायता दी थी। सेठ ने अंग्रेजों को अनाज, घोड़ा, ऊँट और खच्चर आदि सवारियों के साथ मजदूरों की व्यवस्था करने के साथ समय-समय पर धन भी उधार दिया।

सिन्धू (अरब) सागर में अंग्रेजी फौज के रेअर एडमिरल **सर फ्रेडरिक मिटलैन्ड** ने कराची पर हमला करने के पहिले सेठ नाऊँमल के परिवार की सुरक्षा करने का आदेश भिजवाया। आदेशानुसार **कर्नल पाटिंजर** ने अंग्रेजी फौज के सिपाहियों को उनकी सुरक्षा के लिए नियुक्त किया। इसके बाद अंग्रेजो ने कराची में **मन्होड़े के किले** पर भारी गोला-बारी की और तीन घन्टों में ही किले की पश्चिमी दीवार डहाकर, कराची पर कब्जा कर लिया। इसके बाद अंग्रेजी फौज ने **कर्नल आऊटराम** के नेतृत्व में शिकारपुर के रास्ते जाकर, **शाह शुजा** की सहायता से अफगानिस्तान पर हमला किया। **गजनी, काबुल** और **जलालाबाद** पर कब्जा करने के बाद, काबुल की गद्दी पर फिर से शाह शुजा को बिठाया। किन्तु **कलात** के मंगोल सरदार के सामना न कर पाने के कारण उसे वापस शिकारपुर भागना पड़ा। फिर 1843 में खैरपुर के मीर रुस्तम और मीर मुराद अली के बीच झगड़ा हुआ और दोनों लड़ने के लिए फौज जमा करने लगे। मीर मुराद अली ने सर चार्ल्स नेपीयर से मदद माँगी। जिसकी खबर लगते ही मीर रुस्तम भागकर हैदराबाद पहुँच गया। **सर नेपीयर** की फौज जब पीछा करते हुए हैदराबाद पहुँची तो मियाणी और दुबेजी- हैदराबाद में मीरों की ओर से केवल बलोची-लोगो ने फौज का सामना किया। किन्तु अनुभवहीनता के कारण बलोची लोग हारकर भाग खड़े हुए। चारों मीर भी भागकर अपने किले में आकर छिप गए। चारों भाईयों मे से किसी ने भी सीधे-सीधे सामना किए बिना, अंग्रेजों की शरण स्वीकार की। जिसके बाद उनकी सारी सम्पत्ति जब्त की गई। बम्बई और कलकत्ते में मुकदमा चलाकर, उन्हें दस-दस साल के लिए देश-निष्कासन की सजा दी गई।

सेठ नाऊँमल ने अपने पिता होतचन्द के साथ हुए निर्मम-अत्याचारों का बदला चुकाने के साथ धर्मान्ध आतंकी मुस्लिम राज से सिन्ध को मुक्ती दिलाने के लिए अपना जीवन खतरे में डालकर, अंग्रेजों को मनचाहे धनादि की सहायता दी। और इस तरह 21 फरवरी 1843 के दिन मीरों के आतंकी मुस्लिम राज से सिन्ध को मुक्ति दिलाई।

सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी परिवार

सेठ नाऊँमल के परदादा **सेठ भोजूमल** सराफा और अन्य वाणिज्य-वस्तुओं का व्यापार, सिन्ध-हिन्द के प्रसिद्ध **शाह बन्दर**, लाहरी और **खड़क बन्दर** से करते थे। हिन्दुस्तान में **बम्बई** की कोठी से **बंगाल** और वहाँ से **चीन** तथा **सूरत**, **पोरबन्दर**, **कश्मीर** और मलाबार में भी उनकी शाखाएँ थी। ओमान में मस्कत के गुमाश्ते के माध्यम से **ईराक** के बसरा, ईरान के प्रसिद्ध नगर बुशहर, शीराज और विश्व भर में मोतियों के लिए प्रसिद्ध बहरीन और अफगानिस्तान के काबुल, कन्धार, हरात, कलात के सिवा बलोचिस्तान और ईरान के सीमाई नगर ग्वादर और लस-बेलो. में उनकी व्यापारी कोठियां थी। यूरोप के देशों में भी उनका व्यापार फैला था। कुछ सालों के बाद खड़क बन्दर का मुंह समुद्री रेत से ढक गया, जिससे जहाजों का आना-जाना बन्द हो गया। इसलिए सेठ भोजूमल ने सेठ आसूदोमल और अन्य छोटे-बड़े व्यापारियों के साथ मिलकर, **कलाची** नामक छोटे से गाँव के पास कराची के नाम से एक नया नगर बसाने के साथ, एक किला भी बनवाया। सभी व्यापारी और अन्य छोटे-बड़े कर्मचारी अपने माल गोदामों के साथ इस किले में ही रहते थे। सुरक्षा के लिए मस्कत से तोपें मंगवाकर, किले की मुन्डेर पर जमाई गई। कराची नगर और किला ईसवी सन् 1729 में बसाया गया। सेठ नाऊँमल के पूर्वज सेठ भोजूमल के बाद उनके छोटे भाई केवलराम ने अपने व्यापार को और फैलाया। विभिन्न देशों के 500 शहरों में उनके व्यापार की देख-रेख के लिए कुल 400 गुमाश्ते-प्रमुख कर्मचारी थे।

16 वीं सदी से यह प्रसिद्ध धनी परिवार अपनी दानशीलता के लिए भी देश भर में प्रसिद्ध था। 1723 में इसी परिवार के केवलराम और उसकी पत्नी तखत बाई ने ईरान अफगानिस्तान से आए लुटेरों नादिरशाह और नसीरखान द्वारा बन्दी बनाए गए मथुरा-ब्रज के ब्रह्मणों और स्त्रियों को धन देकर शिकारपुर में छुड़ाया था। 1811-12 में सिन्ध, कच्छ और मारवाड़ में पड़े भयंकर अकाल के समय, जब रोज कमाने-खाने वाले मजदूरों से लेकर धनवानों तक के पास भी खाने को अन्ननहीं था, तब जाति-धर्म का भेद किए बिना, उन्होंने लगातार 7-8 महीने तक अपने भन्डारों से अन्न का अनोखा दान किया था।

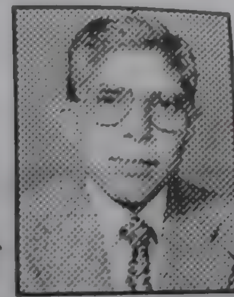
सिन्ध की पद्मिनी - सदोरी ने पिया जहर का प्याला

'सदोरी' दीवान गिदूमल की पुत्री थी, जिन्होंने कल्होड़ा वंश के नूर मोहम्मद के राज के समय, अपनी अनोखी अकल से सिन्ध को ईरान के अहमदशाह अब्दाली के हमले से बचाया था। इसके बाद गुलाम शाह कल्होड़ा ने शासन किया, जिस अय्याश ने देशभक्त दीवान गिदूमल की कन्या-सदोरी के साथ जबरन विवाह करना चाहा था। सदोरी के भाई ने परिवार की सुरक्षा के लिए विवाह करने की सलाह दी। इसपर सदोरी ने कहा, 'भैया! ये सही है कि गुलाम शाह से विवाह करके मैं बेगम बनूँगी, पर मैं यह भी जानती हूँ कि इस मुसलमान से विवाह करने का मतलब जीते-जी नर्क भोगना है। वहाँ स्त्री विलास की वस्तु है। भोग्या है। जबकि हमारी सिन्धू-संस्कृति में स्त्री पूज्या है। यहाँ घर की बहू को लक्ष्मी समझकर, स्वागत-सत्कार किया जाता है। बेगम बनने की अन्धी लालच में पड़कर नर्क भोगने से अच्छा होगा, स्त्री की पवित्रता और अपने घर- परिवार की सुरक्षा के लिए हँसते-हँसते जहर का प्याला पी लूँ।' दीवान गिदूमल के परिवार में इस आतंक पर हुई चर्चा के बाद, सदोरी ने जहर का प्याला पीकर अपना नारी-धर्म निभाने के साथ हिन्दू नारी जाति की लाज रखी।

क्रमशः
शेष अगले अंक में...

कहानी

इन्तजार



●लेखक-खीमन यू. मूलाणी

जिस ब्लॉक में हम रहते थे, उसके कोने वाले क्वार्टर में मूरजमल नामक एक वृद्ध भी रहते थे। उनकी आयु सतर वर्ष से अधिक थी। सभी उन्हें काका कहते थे। वे प्राय: बीमार रहते थे।इसलिये काम धंधा नहीं करते थे। पूरा दिन घर में ही बैठे रहते थे। उनके पुत्र-पोते कमाकर लाते थे, जिससे घर को गाड़ी चलती थी। काका धोती और आधी बाँहों वाली सिंधी कमीज पहनते थे। वे सिर पर टोपी रखकर ऊपर से साफा बाँधते थे। मैं जब भी सब्जी लेने के लिये अथवा दूसरे काम से, उनके घर के सामने से गुजरता था तो प्राय: मुस्कराकर अभिवादन करते हुए कहते थे - 'भाई साहब राम-राम।'

'राम-राम काका, राम-राम।' मैं ऐसे कहता हुआ आगे निकल जाता था। काका अपनी बोरियत मिटाने के लिए मुझसे बातचीत करना चाहते थे, पर मैं व्यर्थ समय गंवाना नहीं चाहता था। वास्तविकता तो यह भी थी कि मैं उनकी बातों से बोर हो जाता था। इसलिए कभी-कभी तो मैं रास्ता बदलकर निकल जाता था ताकि काका से सामना न हो सके।

एक दिन मैं काका के घर के सामने से निकल रहा था तो मुझे काका की आवाज सुनाई नहीं दी। एकाएक मेरा ध्यान उस ओर चला गया। काका प्रतिदिन की तरह बरामदे में टूटी-फूटी खाट पर हुक्का मुँह में लगाए बैठे थे वे सामने दीवार को टकटकी लगाकर देख रहे थे। मुझे लगा काका किसी गहरी सोच में हैं। मैं उनकी तरफ गया थोड़ी दूरी से ही मैंने कहा- 'काका, राम-राम।' काका का मेरी तरफ ध्यान नहीं गया। मुझे आश्चर्य हुआ। मैं आगे बढ़कर उनके पास जाकर खड़ा हो गया। मैंने देखा कि काका की आँखों में आँसू थे। मैंने दूसरी बार कहा- 'काका, राम-राम।' काका के शरीर में उसके बाद भी कोई हलचल नहीं हुई। मेरे मन में शंका हुई कि कहीं काका इस दुनिया से तो नहीं चले गये? मैंने उनके कंधे पर हाथ रखकर जोर से कहा - 'काका..... राम-राम।'

मेरे इतना कहने पर काका की तंद्रा टूटी वे मेरी ओर देखने लगे। मैं मुस्कराने लगा। काका भी बड़ी मुश्किल से अपने चेहरे पर मुस्कराहट लाए और कंधे पर रखे गमछे से आँखों के आँसू पोछते हुए बोले - बेटे, आओ बैठो। बहुत दिनों के बाद आए हो?

मैं बिना कोई शब्द बोले, आज्ञाकारी बालक की तरह उनके सामने बैठ गया। मैं काका के आँसुओं के बारे में सोच रहा था। मैं आश्चर्य में था कि सदैव प्रसन्न रहने वाले काका आज इतने दुखी क्यों है? काका शांत थे। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने शांत माहौल को तोड़ते हुए पूछा- 'काका, क्या हाल हैं?'

काका ने अपने आप को संभालते हुए धीमे स्वर में कहा- 'सब ठीक है बेटा।' मुझे उनके उत्तर से संतुष्टि नहीं हुई। मैंने एकदम दूसरा प्रश्न करना चाहा। पर काका....काका ने मुझे प्रश्न पूछने नहीं दिया। कहने लगे- 'बस बेटे, कुछ पुरानी यादें दिल पर उतर आई। यूं मन भर आया। मैंने दुनिया देखी है। गँवाने का दुख तो हर मनुष्य को होता है।'

मैं काका की बात पूरी तरह समझ नहीं सका 'मैं जानना चाह रहा था कि उनकी ऐसी कौन सी चीज़ गई है जिसका दुख उन्हें इतना सता रहा है। परन्तु मैं यह सब कुछ कह नहीं सका। केवल इतना कहा- 'काका, आपकी कौन सी चीज़ गुम हो गई हैं?'

काका ने कहा- 'बेटा, मैंने एक बहुमूल्य चीज़ गँवाई है।'

'ऐसी कौन सी चीज़ है काका?' मैंने खफा होते हुए उतावले होकर कहा। काका ने ठंडी साँस लेते हुए कहा- 'बेटे, मैंने अपनी जन्मभूमि

गँवाई है। जन्मभूमि जो स्वर्ग से भी महान होती है।' मुझे हँसी आने लगी परन्तु मैंने हँसी को दबाते हुए कहा- 'काका, यह 1979 चल रहा है। भारत के विभाजन को चौबीस वर्ष बीत गये हैं। आप अभी तक सिंध को याद कर रहे हैं।'

'सत्य कह रहे हो बेटे, परन्तु जहाँ आग लगती है वहीं पर तपन होती है। दूसरों को क्या पता।' इतना कहकर काका मेरे चेहरे को ताकने लगे। फिर कहा 'पता है, कल रात मैंने एक सपना देखा है। ऐसा सुन्दर स्वप्न मैंने अपने पूरे जीवन में कभी नहीं देखा। क्या देखता हूँ कि में हैदराबाद सिंध रेल्वे स्टेशन पर जा उतरा हूँ। स्टेशन देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। मैं पागलों की तरह स्टेशन को ताकने लगा एक एक आदमी को घूरने लगा। मुझे ऐसा लग रहा था मानों मैं पागल हो गया हूँ। अचानक मैंने देखा कि मेरे गाँव का दिलावर खान मेरे समाने खड़ा है और मुझे टक-टकी लगाकर देख रहा है। उसे देखते ही मेरी आँखें चौंधिया गई। मैंने उसे खींचकर अपनी बाँहों में भर लिया, फिर तो वह बिलख पड़ा। जोर जोर से रोने लगा। मैं भी अपने को रोक न सका। सुबक सुबक कर रोने लगा।'

लोग इकट्ठे हो गये। हर कोई पूछ रहा था क्या हुआ? .... क्या हुआ? मैं क्या कहता ?

आखिर विवश होकर कहा- 'भाई, बहुत वर्षो बाद मिले हैं ...... इसलिए आँखें भर आई हैं।'

लोग तो चले गये, परन्तु दिलावर बातों में लग गया। कहने लगा- 'यार आप लोगों के जाने के बाद हम तो कठिनाईयों से घिर गये हैं। आप लोग हमें अनाथ बनाकर चले गये। अब तो गैरों की जोर-जबरदस्तियों ने हमारी कमर रही तोड़ दी है। हम लोगों से अपने ही देश में परायों जैसा व्यवहार किया जाता है। उन्होंने हमारा जीना हराम कर दिया है। देशी, परदेसी हुए, परदेसी, देशी। घुस आए हैं गैर, और निकल गए स्नेही। आगे कहने लगा- मूरजमल, आप लोगों को यहाँ से जाना ही नहीं था।'

ऐसा कह कर काका क्षण भर के लिए रूका और फिर कहने लगे। 'बेटे सच पूछो तो दिलावर में वही पुराना प्यार और स्नेह देखकर मैं तो गद्गद् हो गया। इस प्रकार बातें करते करते हम दोनों ने गाँव जाने के लिए दो रेल्वे टिकटें खरीदी और जाकर रेलगाड़ी में बैठ गये।'

मैंने पूछा- 'काका फिर क्या हुआ?' काका ने मेरी ओर इस तरह देखा 'मानो मेरा चेहरा पढ़ रहे हों। क्षण भर बाद एक ठण्डी साँस लेकर कहने लगे- 'बेटे, फिर न जाने क्या हुआ। अभागी नींद खुल गई। डायन नींद का स्वभाव ही यही है। इसी ने ससुई से पुनूं को जुदा किया और मुझसे मेरी जन्मभूमि का दीदार।'

मैंने कहा- 'काका कभी सपने भी सच हुए हैं? बड़ी बात यह है कि हमारे जैसे सिंधी जो यहाँ जन्में और पले हैं वे यदि सिंध लौट चलेंगे तो क्या हमें अपना यह वतन याद नहीं आएगा? और सिंध में जो हमारे नये लोग पैदा हुए होंगे उनके दिल में आप लोगों के लिए क्या इज्जत होगी?'

काका को मेरी बात अच्छी नहीं लगी। कहने लगे- 'बेटे, छोड़ो इन बातों को। बताओं, देश के क्या हाल-चाल हैं?' काका ने बात को बदलने के विचार से मेरी ओर नया प्रश्न फेंका।

'सब ठीक है काका, देश चल ही रहा है।' मैंने कहा।

काका सोच में पड़ गये। फिर कहा- 'क्या समझते हो? क्या अब हम लोग सिंध लौट नहीं सकेंगे।' 'काका, मुझे तो नहीं लगता। फिर भी भगवान जाने।' मैंने काका का दिल दुखाना नहीं चाहा।

'नहीं बेटे ऐसा न कहो। समय बड़ा बलवान है। भगवान दयालु है। वह चाहे तो क्या नहीं कर सकता। मेरी आत्मा तो कह रही है, लौटेंगे जरूर।' यह कहते हुए काका का चेहरा खिल उठा।

मैंने कहा- 'काका इस बात की संभावना बहुत कम है।'

काका मेरी बात को सुनकर विचारों में डूब गये। फिर सर उठाकर कहने लगे- 'सच कहते हो बेटे, मगर मेरा दिल नहीं मानता। मेरा दिल कह

रहा है कि हम सिंधी लोग एक दिन अवश्य अपनी जन्मभूमि में चलकर रहेंगे। वह भारत का भाग बनेगा।'

मैंने कहा- 'काका ये सब भावुकता की बातें हैं। सच पूछो तो आप लोगों को सिंध छोड़ना ही नहीं चाहिए था।'

'हाँ बेटे, परन्तु मैंने जन्मभूमि अपनी इच्छा से थोड़े ही छोड़ी थी। हालात ही कुछ ऐसे हो गये थे।' काका ने अपनी मजबूरी बताई।

मैंने कहा- 'हालात तो जरूर ठीक होते जल्दबाजी करने की क्या ज़रूरत थी?'

'बेटे, मैंने सिंध सदैव के लिए थोड़े ही छोड़ी थी। तुम्हें पता है? मैने वर्ष 1946 ई. में अपने गाँव में महल जैसा नया घर बनवाया था। सभी लोग रोक रहे थे। कहते थे बेकार खर्च कर रहे हो। अब हमें भारत जाना पड़ेगा। मैंने किसी की नहीं सुनी। सभी को कहा पागल हुए हो। कभी किसी ने घर बार भी छोड़ा है? हम सदियों से यहाँ रह रहे है सो कैसे अपनी जन्मभूमि छोड़ेंगे? उस वक्त भी सभी मुझ पर हँसते थे, जैसे आज तुम हँस रहे हो।'

यह कहते हुए 'काका की आँखों में फिर आँसू भर आए। उसने फिर कहना शुरू किया- 'अपना महल जैसा भरा-पूरा घर वैसा का वैसा ही छोड़ आया हूँ। ताला लगाकर, चाबियाँ अपने मित्र मुखिया गुल मोहम्मद अबड़ो को सौंपकर कहा था- हम तीर्थाटन करने हिन्दुस्तान जा रहे हैं। शीघ्र ही लौटेंगे। तब तक ये चाबियाँ संभालकर रखना।'

'फिर वापिस क्यों नहीं गये?' मैंने पूछा।

'मैं तो जाना चाहता था, परन्तु रिश्तेदारों और घर वालों ने जाने नहीं दिया। कहने लगे हालात अभी ठीक नहीं हैं। वहां जाकर क्या करोगे। बस इस प्रकार मजबूर हो गया।' काका ने उत्तर दिया।

मैंने कहा- 'काका, अब इन बातों को दिल से निकाल दो।'

काका ने एक लम्बी साँस ली। फिर मेरे चेहरे को ताकते हुए कहा 'बेटे, तुम तुम तो मुझे लाख समझाओ परन्तु मेरा दिल भी माने ना। दिल से याद ही नहीं जाती। बार-बार शाह अब्दुल लतीफ का यह पद कानों में गँजजता है- सज्जन और स्वदेश बेगैरत ही भूलते, उन पर है अफसोस जिनने देश भुला दिया।'

मैंने काका के अंतर मन में समाई वेदना को समझ कर उन्हें ढाढ़स बंधाने के विचार से कहा- 'काका सच कहते हो, लगी को लानत है।'

'बेटे, तुम लोग भले ही कैसी भी बातें करो, पर मुझे विश्वास है कि मैं मरूँगा तो अपने पैतृक घर में। यदि नहीं तो मैं वसीसत करूँगा कि मेरे फूल सिंधु नदी में प्रवाहित किये जायें। तब तक मैं अपनी जन्मभूमि से बिछुड़ने का दर्द दिल में दबाकर उसके दीदार के लिये इन्तजार करता रहूँगा।'

मैं चुपचाप काका के चेहरे को घूर रहा था। उनके दिल के दर्द में अपने को डूबता महसूस कर रहा था। मेरे मुख से एक भी शब्द नहीं निकल पा रहा था।

दबे....दबे....पांव....

आस दिला
उड़ गए पंछी
दूर गगन की छांव
भूली विसरी
यादें आती
दबे दबे पांव
दुखिया बैरन सांझ बेचारी
नदिया झरना परवत
भटक रही वरबस
किस्मत की मारी
बस्ती बस्ती गांव
ठौर ठिकाना, रहा ना कोई
हवा की मानिंद
उड़ी जिन्दगी
नंगे नंगे पाव
सुख दुख दोनों
जुड़वा भाई
मौका पाते, देते वो
इक दूजे को दांव
संगी साथी, बिछड़े सारे
अपने कहां रहे हमारे
धूप मिली न छांव
आस दिला
उड़ गए पंछी
दूर गगन की छांव
भूली बिसरी यादें आती दबे...दबे... पांव।।

-अमर 'मलंग' कटनी (म.प्र.)

सीधा सा शहर



क्यों ख़ामोश हो ...?
क्यों चुप चुप से हो... मेरे शहर ?
बस इसलिए, कि तुम्हारा नाम
अख़बारों की सुर्ख़ियों में नही आता
सच्चाई और सीधेपन की वजह से
तू अख़बारों में नहीं छप पाता
इसलिए दुःखी हो ना ?
किंतु तुम्हें तो खुश होना चाहिए
कि तुम्हारे यहां
बलात्कार, चोरी, डकैती
दंगा और कत्ल जैसे
संगीन अपराध नहीं होते
और तुम्हारा नाम
अख़बारों की सुर्ख़ियों में नहीं आ पाता
तुम्हें तो गर्व होना चाहिए
कि तू इन बुराइयों से
दूर ही रहा अछूता ही रहा
तू अख़बारों में न आया
न ही आना
अच्छा है तू बना रहे अंजाना
अच्छा है
तू बना रहे अंजाना !

- महेश मूलचंदानी,
होशंगाबाद

कहानी

तुम

• लेखक - बन्सी खूबचंदाणी
• अनुवाद - विक्रम शहाणी

मैंने लकड़ियों के ढेर में एक पतली सी लकड़ी निकाल कर, तुम्हारे शरीर पर रखी मोटी-मोटी लकड़ियो को बीच में हौले से रखता हूँ और सोचता हूँ तुम इतनी मोटी-मोटी लकड़ियों का बोझ कैसे सह पाते होंगे। मैं भी पागल हूं। तुम हो कहां? तुम तो मर चुके हो भला मरे हुए पर कैसा बोझ।

बाबाजी शव जलाने वाले ने मोटी-मोटी लकड़ियां बिछाकर सेज बनाई भी जिस पर तुम्हें लिटाया गया था। फिर कुछ मोटी, कुछ पतली लकड़ियां तुम्हारे आसपास भी रखी गई थी। इस कार्य में तुम्हारे दोनों बेटे बाबाजी की सहायता कर रहे थे ताकि तुम ठीक से जल सको रिश्तेदारों में सबसे पहले, बड़ा होने के नाते तुम्हारे चाचाजी कुछ बड़बड़ाते हुए एक मोटी सी लकड़ी उठाकर, तुम्हारी काया पर रखते हुए बाबाजी से शिकायत कर रहे हैं कि लकड़ियाँ ठीक से सूखी हुई नहीं है।, लाश के जलने में अधिक समय लगेगा। उसके बाद तुम्हारे बहनोई और तुम्हारे साले भी एक-एक लकड़ी तुम्हारी लाश पर रखते हुए अपने-अपने फर्ज निभाने की भावना अनुभव कर रहे हैं- तुम्हारी काया पर सब एक-एक लकड़ी रखते हुए, तुम्हें हाथ जोड़कर आगे बढ़ रहे थे- तुम्हारे बहनोई ने भी हाथ जोड़ें थे- यह वही बहनोई है जो कई बार तुम्हारे घर पर आकर, तुमसे झगड़ा करते थे और तुम हर बार हाथ जोड़ मिन्नतें कर उसे शांत किया करते थे, तब तुम जिंदा थे, अब मर चुके हो। मरे हुए को सब हाथ क्यों जोड़ते हैं ?

तुम्हारे चाचाजी ने अब सोसायटी के चेयरमेन और सेक्रेट्री को इशारा करके अपना फर्ज निभाने को कहा,जो उन्होंने बखूबी निभाया। तुम्हारे बचपन का दोस्त एक पतली सी लकड़ी ढूंढ़ लाया, पर तुम्हारी चिता पर उसे रख न सका और फूट-फूटकर रो पड़ा। शायद तुम्हारे शरीर पर हलका सा बोझ रखने के विचार ने उसके मन को बोझिल बना दिया था। अक्सर तुम मुझे बताया करते थे कि वो तुम्हें बेहद चाहता था और तुम्हारे जीते जी हमेशा यह कोशिश करता रहा कि तुम्हारे दुखों को बांट ले। दुख तो बांटे जा सकते हैं, मौत थोड़े ही बांट सकते हैं। तुम्हारे छोटे बेटे ने तुम्हारे इस मित्र के हाथ से लकड़ी लेकर तुम्हारी चिता पर रखी अब मेरी बारी आई। मेरे बाद तुम्हारे ऑफिस से आए तुम्हारे दो मित्र तुम्हारी चिता के पास आकर खड़े हैं। धन्य हैं वे जो तुम्हारे ऑफिस से छूटने के दो वर्ष बाद भी इस अनंत यात्रा के लिए तुम्हें अलविदा करने आए हैं। अंत में, बारहवां व्यक्ति जो तुम्हारी चिता के सामने आकर खड़ा है, वो है तुम्हारी सोसायटी का वॉचमैन, वो तुम्हारी चिता पर लकड़ी रखकर सर झुकाये तुम्हारे पैरों की तरफ खड़ा चुपचाप आंसू बहा रहा है। बड़े भाग्यशाली हो यार कि इतने सारे बारह व्यक्ति तुम्हें अलविदा करने आए हैं, जिनमें से कुछ तुम्हारे इस संसार से जाने पर आंसू भी बहा रहे हैं। मुझे पता नहीं तुम्हारे घर पर इस वक्त कितने लोग तुम्हें याद करके रो रहे होंगे तुम्हारी घरवाली तो पांच वर्ष पहले ही भगवान के पास पहुंच गई थी, इस वक्त कौन जाने कौन सी योनि में होगी। अगर अभी तक वे निज आत्मा स्वरूप में है तो तुम्हारी आत्मा उसकी आत्मा से जाकर मिली होगी। बेटी तो भगवान ने तुमको दी ही नहीं, छोटे लड़के की बहू अगर रोती भी होगी तो वे मगरमच्छ के आंसू होंगे। वो तो इस ताक में होगी कि किस तरह देवर को फुसलाकर, वो तुम्हारा फ्लैट हड़प ले। रही बाकी तुम्हारी एक बहन। वो जरूर सचमुच ही रोती होगी क्योंकि वो तुम्हें अपने छोटे भाई को सचमुच प्यार करती थी।

पुरोहित अब मंत्रोच्चारण कर रहा है- तुम्हारा बड़ा बेटा जिसने अपना सर नहीं मुंडवाया है, पुरोहित के साथ-साथ मंत्रोच्चारण करने की कोशिश कर रहा है। वो केन्द्रीय सरकार के किसी विभाग में बड़ा अफसर है। कभी-कभार तुम्हारे पास

बम्बई आता है- और तुम अब तक दो बार अपने इस बेटे के दिल्ली स्थित मकान में जाकर आए हो- एक बार जब उनके घर लड़के ने जन्म लिया था, अपनी घरवाली के साथ गए थे और दूसरी बार घरवाली के गुजर जाने के बाद, जब तुम हरिद्वार गए थे तब अपने बहू-बेटे व उनके बच्चे के मोहपाश में बंधे तुम उनके वहां भी गए थे। तुमने मुझे बताया था कि तुम उनका मुख देखने को आतुर थे, और वे तुम्हारी पीठ। तुम्हारे पोते ने भी पहले तो तुम्हें खूब चाहा पर बाद में तुम्हारे प्रति अपने माता-पिता के भावों को जानकर, वो भी तुम से किनारा करने लगा। अपने प्रति उन सब के व्यवहार की भाषा. समझ, तुम वहां से तुरंत ही अपने घर छोटे बेटे के पास लौट आए थे। ये सब बातें तुमने खुद ही मुझे, यानि अपने पड़ौसी को बताई थी। आज भी तुम्हारे कहे हुए वे शब्द मुझे अच्छी तरह याद हैं। तुमने कहा था 'हमारे बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो तब भी हम उन्हें अपना बच्चा ही समझे हैं, पर वो तो अपने को बच्चा समझते ही नहीं, शायद इसलिये भी हम जीवन में कई दुख अनुभव करते हैं।''

पुरोहित ने अब तुम्हारे छोटे बेटे को बुला लिया है, जो तुम्हारें सिरहाने की तरफ खड़ा मंत्रोच्चारण कर रहा है। तुम्हारे छोटे बेटे ने अपना सर मुंडवाया है और तुम्हारे करीब इस तरह हाथ जोड़े खड़ा है जैसे उन सभी झगड़ों के लिए क्षमा मांग रहा हो जो तुम्हारे जीते जी उसने तुम्हारे साथ किये थे। तुम दोनों के झगड़े तो सारी सोसायटी में मशहूर थे अक्सर झगड़ा करते समय तुम अपने इस बेटे का सामना नहीं कर पाते थे और भागकर सोसायटी के पासवाले गार्डन में चले जाते थे, जहाँ मैं भी जाता रहता हूँ। वहाँ पैदल घूमते बीच-बीच में सांस लेने के लिए एक बैंच पर बैठकर हम दोनों बातें किया करते थे। तुम्हें हमेशा यह शिकायत रहेती थी कि दस वर्षों तक सोसायटी में रहने के बावजूद भी सोसायटी के सभी सदस्यों के साथ तुम्हारी जान पहचान नहीं हो पाई है। जैसे वे सब अपने में ही पूरे हों और यह सच भी है। जब ज़िन्दा इन्सानों के लिए उनके पास वक्त नही तो भला मरे हुए के लिए कहां से वक्त निकालेंगे। 48 घरों की इस सोसायटी से कुल मिलाकर तीन ही लोग तुम्हें अलविदा कहने आ पाए-एक चेयरमैंन, एक सेक्रेट्री और मैं। सेक्रेट्री ओर चेयरमैन तो शायद अपना फर्ज निभाने आए हैं, पर मैं तो तुम्हारा दोस्त हूँ। वैसे तो तुम्हारे ही फ्लोर पर रहने वाले, तुम्हारे दो पड़ौसी तुम्हारे शव को कंधा देकर एम्बुलेन्स तक आए थे पर वहीं से अपने-अपने ऑफिस रवाना हो गए थे। यह सोसायटी का वॉचमैन जो रो रहा है, वो तुम्हारा सच्चा दोस्त है। तुमने भी तो एक सच्चे दोस्त की तरह उसकी सहायता की थी। तीन वर्ष पहले तब उसे टी.बी. का रोग हो गया था, जब तुमने ही तो उसकी और उसके परिवार की देखभाल की थी। शुक्र है संसार में इन्सानियत अब भी बाकी है। यह गुण शायद निचले स्तर के लोगों में अधिक होता है।

पुरोहित ने अब पूजा पूरी कर ली है। वो अब तुम्हारे बड़े बेटे को एक लकड़ी से आग लगाने में सहायता कर रहा है ताकि उसे जली हुई लकड़ी से वो तुम्हारी चिता में आग लगा सके। तुम पर और लकड़ियों पर शुद्ध देसी घी छिड़का गया है। पुरोहित के कहने पर जब तुम्हारा बड़ा बेटा तुम्हारी चिता को आग लगा रहा है तब तुम्हारा छोटा बेटा भी आगे बढ़कर उस जली हुई लकड़ी की तरफ हाथ बढ़ाकर चिता को आगलगाने में सहायक होता है और चिता को आग लगाते ही फूट-फूट कर रो पड़ता है। तुम्हारे चाचाजी उसकी पीठ पर हाथ फेरकर सांत्वना देते हुए कहते हैं रो मत बेटे, जाने वाली चीज तो जा चुकी अब तुम अपने आपको संभालो। तुम्हारा छोटा बेटा तुमसे जितने झगड़े करता था, शायद उतना ही तुम्हें प्यार भी करता था। आखिर वो भी क्या करता, जुआरी जो ठहरा-काम काज तो कुछ करता नहीं. इसलिए जब जब पैसों की जरूरत होती तब तुमसे ही तकाज़ा करता... पैसे न मिलने पर तुमसे झगड़ता। और फिर तुम भी कहाँ से लाते इतने पैसे - दो वर्ष पहले तुम जिस ऑफिस में काम करते थे, वहाँ के मालिकों ने यह फैसला किया कि 50 वर्ष की आयु से बड़े सभी कर्मचारियों को कम्पलसरी रिटायरमेंन्ट दी जाए। पहले तो इस बात पर यूनियन वालों ने काफी होहल्ला मचाया फिर पता नहीं कैसे और क्यों एकदम चुप हो गए। तुम्हें दो-ढ़ाई लाख देकर, एक फूलों की माला पहनाकर एक छोटी सी भेंट थमाकर नौकरी से अलग कर दिया गया। इसके बाद तुम घर का खर्च ही मुश्किल से चला पाते थे, ऐसे में बेटे को जुआ

खेलने के लिए पैसे कहां से देते। हाँ तुमने अपने जीते जी तो इस छोटे बेटे को पैसे नहीं दिए पर मरने के बाद तुम्हारी वसीयत के मुताबिक तुम्हारी बची-खुची पूँजी इसी बेटे का मिलनी है। चिता से आग की लपटें उठ रही हैं, चेयरमैन और सेक्रेट्री बार-बार अपनी कलाई में बंधी घड़ियों को देख रहे हैं। ऑफिस से आए दो सहकर्मी भी वापिस लौट जाने को आतुर है। तुम्हारे बचपन का दोस्त और वॉचमैन अपने-अपने आंसू पीकर खामोश खड़े हैं। तुम्हारा बड़ा बेटा पुरोहित की तरफ और छोटा बेटा चिता की तरफ एकटक निहार रहे हैं, शायद तुम्हारी मौत छोटे बेटे में परिवर्तन लाए। तुम्हारी चिता से छोटे-छोटे विस्फोट तो कई हो चुके अब एक बड़ा विस्फोट हुआ है जो शायद तुम्हारी खोपड़ी फूटने से हुआ है। तुम्हारे चाचाजी ने पुरोहित की तरफ देखकर इशारा किया, पुरोहित ने तुम्हारे बड़े बेटे के हाथ में एक मोटा सा डंडा पकड़ाया, बड़े बेटे ने डंडा पकड़कर चिता के चारो तरफ फेरा लगाया और पुरोहित के कहने पर उसने उस डंडे को अपने पीछे इस तरह फेंका जैसे अपना कोई बोझ पीछे फेंक रहा हो। उसने अब तुम्हारी और मुख कर हाथ जोड़े है, इस वक्त उसके चहरे पर नर्मी हैं। शायद बचपन में तुम्हारे साथ गुजारी कोई सुखद घड़ी याद आ गई है। पुरोहित और तुम्हारे चाचाजी अब सबको अपने साथ शमशान भूमि मे बने हॉल की तरफ ले जा रहे हैं जहाँ कई देवी देवताओं की तस्वीरें लगी हैं। मैं अब भी तुम्हारी चिता के पास खड़ा हूँ और कुछ सोच रहा हूँ। तुम्हारी मौत कल रात एक ट्रक के नीचे आ जाने से हुई थी। उस वक्त रात के नौ बजे थे। तुम बाजार से लौटते हुए सड़क पार कर रहे थे कि तेज रफ्तार से आती हुई एक ट्रक के नीचे आ गए। पुलिस रिर्पोट में ऐसा ही लिखा है। तुम्हारे शरीर का निचला भाग कुचल गया था। ड्राइवर ट्रक रोककर जैसे ही नीचे उतरा तो घटनास्थल पर इकट्ठे हुए लोगों ने उसे मारना शुरू कर दिया। उस वक्त ड्राइवर चिल्ला-चिल्ला के कह रहा था कि इसमें उसका कोई दोष नहीं। तुम सड़क पार करने के लिए एक जगह खड़े थे ज्यूं ही ट्रक तुम्हारे नजदीक आई, तुमने अपने आपको उसके आगे उछाल दिया। ड्राइवर की यह बात कोई भी सुनने को तैयार नहीं था। उस वक्त ड्राइवर मुश्किल से अपनी जान बचाकर वहां से भाग गया। अब तक उसका कोई पता नहीं चला है। पुलिस को उसकी तलाश है और ट्रक अब भी उसी जगह खड़ी है। मुझे याद है नौकरी छूटने के बाद तुम कितनी बीमारियों से घिर गए थे। ब्लड प्रेशर तो तुम्हें पहले से ही था उस पर डायबिटिज और जोड़ों के दर्द ने भी तुम्हें खूब परेशान कर रखा था। तुम्हें हर पल यह चिन्ता सताती थी कि अगर तुम कभी बिस्तर पर पड़ गए तो तुम्हारी देखभाल कौन करेगा ? तुम भगवान से इसलिए यही प्रार्थना करते रहते थे कि जीते जी तुम्हें कभी किसी का मोहताज न होना पड़े, तुम बिस्तर पर पड़ने से पहले ही इस दुनिया से कूच कर जाओ।

तुम्हारे चाचाजी, मेरा हाथ पकड़ मुझे भी उस हॉल की तरफ ले गये जहाँ अन्य सब लोग पुरोहित से कुछ सुनने को आतुर हैं... इसी वक्त तीये की बैठक का समय और स्थान बताया जाता है। तुम्हारा बड़ा बेटा पुरोहित को कुछ समझा रहा है। अब तुम्हारे चाचाजी भी उन दोनों की बातों में शरीक हो जाते हैं। कुछ पल एकदम खामोशी, जिसमें सिर्फ तुम्हारी चिता जलने की ही आवाज सुनाई दे रही है। पुरोहित उस खामोशी को तोड़ते हुए तुम्हारी चिता की तरफ देखते हुए कहता है कि तुम तो अपना रोल अदा कर संसार के इस रंगमंच से चलते बने। वैसे तो तीये की बैठक तीसरे दिन होनी चाहिए और ग्यारहवें की रस्म नासिक या हरिद्वार जैसे किसी धार्मिक स्थान पर होनी चाहिए, बारहवें की रसम-बारहवें दिन तुम्हारे घर पर होनी चाहिए, पर जमाने के तेज बदलाव के कारण यह मुमकिन नहीं।

तुम्हारा बड़ा बेटा, जो एक बड़ा सरकारी अफसर है, उसे अपनी ड्यूटी निभाने कल रात के हवाई जहाज से वापिस दिल्ली पहुंचना है इसलिए यह तय किया गया कि स्वर्गवास होने के उपरांत की सारी रस्में कल ही एक साथ अदा की जाएं, ईश्वर तुम्हारी आत्मा को शांति दे। अब तुम्हें अलविदा करने आए सभी लोग धीरे-धीरे शमशान में लगे उसे नल की तरफ बढ़ते हैं जहां से हाथ मुंह धोकर वे अपने-अपने मुकाम की तरफ जाएंगे और मैं तुम्हारी चिता की तरफ देखते हुए सोच रहा हूँ- कहीं ट्रक-ड्राइवर ने सच ही तो नहीं कहा।

कहानी

चहक

•तारिक अशरफ
•अनुवाद - डी.पी. तेजा

पालिश करते-करते मोची के हाथ कुछ क्षण के लिये रूक गये। उसकी नज़रें सामने मैले जूतों पर जैस जम सी गई। एक पल के लिये उसके दिल में खुशी की लहर सी आई। उसने तुरंत ही पूछा पालिश करूं? और फिर उसने नज़रें ऊपर उठाई।

सामने फैला हुआ हाथ और भी आगे बढ़ आया, 'एक पैसा' मोची के दिल में एक पल की आई हुई खुशी लौट चली और उसने गुस्से से कहा जा-जा पैसा चाहिए। यहां तो सूखे जूते हैं चाहिए?

एक क्लर्क के आगे फकीर ने हाथ फैलाया, जिसके सूखेबाल उसकी पेशानी पर परेशान से थ, सुबह से भूख हूं, दो रोटियों का सवाल है।

क्लर्क के सूखे होठों पर मुस्कान थिरक आई- एक कड़वी कसैली मुस्कान। मालिक करे सदा सुखी रहो। बहुत भूख लगी है। फकीर फिर गिड़गिड़ाया क्लर्क फिर मुस्कराया और मुस्काते आगे बढ़ गया।

फकीर सुबह से भूखा था, और क्लर्क कल से।

फकीर फिर आगे बढ़ा और एक बुढ़िया के आगे उसने हाथ फैलाया, अम्मा जियं बचे तेरे बच्चे, उनके सदक मे एक आना दे दो। बुढ़िया चलते-चलते रूक गई। 'बच्चे उसके होंठ कांपने लगे और वह आगे बढ़ गई। फकीर की निगाहें काफी समय तक बढ़िया को जाते हुए देखती रही। उसे रूक-रूककर बुढ़िया की आंखों का ख्याल आ रहा था, जिन में बच्चों का सुनकर आंसू तैर आए थे, और चेहरे पर दुख छा गया था। फकीर ने सोचा क्या बुढ़िया की कोई औलाद नहीं हैं।

अचानक फकीर की निगाह मोटर कार में बैठे एक मोटे सेठ पर गई।

वह वहां बढ़ा। एक चवन्नी का सवाल है, बाबा।

जा रे जा सेठ ने गुस्से से कहा, एक तो पेट के दर्द से परेशान हूं ऊपर से यह सूअर आ खड़ा हुआ है। और मोटर कार चल दी।

होटल का मालिक काऊंटर पर पैसे गिनने में मशगूल था, फकीर खिड़की के पास रूककर उसे देखता रहा और फिर बहुत नरमी से कहा, सुबह से भूखा हूं, मालिक के नाम पर खाना खिलाओगे पैसे गिनते-गिनते होटल के मालिक के हाथ रूक गए। उसने नफरत से फकीर को घूरा। उसका खिड़की से सिर्फ चेहरा नजर आ रहा था। होटल का मालिक बकशक कर फिर पैसे गिनने लगा। हट्टे कट्टे बेशर्मी से आकर हाथ टांगते हैं। काम करने का कहो तो बुखार चढ़ जाता है। नोटों के बंडल दराज मे डालते हुए कहा, हराम का न खाओ, मेहनत करो यहां वेटरी करोगे?

फकीर खामोशी से खिड़की से हट गया। होटल के मालिक ने गुस्से से कहा नौकरी करने का नाम लो तो जैसे मौत आ जाती है। हरामखोर।

फकीर होटल से हट कर सड़क पर आया। उसे होटल वाले पर बहुत गुस्सा था। गुस्से के कारण उसका चेहरा बहुत लाल हो गया था पर कुछ समय बाद उसका गुस्सा कम हो गया। और उसके चेहरे पर फीकी मुस्कराहट तैर गई ऐसी मुस्कराहट जिसमें बेबसी और रंज समाया हुआ था। हट्टा कट्टा हूं मेहनत नहीं करता हूँ। वह खुद ही खुद पर हंसने लगा। उसकी नजरें अपने दुबले बदन और बाएं हाथ पर गई जिसकी कलाई और अंगुलियां कट चुकी थी। उसका ध्यान दांए पावं की और चला गया जहां से नासूर के कारण कचरा हमेशा बहता था, फकीर ने सोचा भला होटल के मालिक को क्या पता?

अब उसे अधिक थकान महसूस होने लगी और भूख का अहसास भी बड़ने लगा।

वह एक बंद दुकान के पास बैठ गया। सोचने लगा सुबह से भूखा हूँ, कल भी डेढ़ दिन के बाद खाना नसीब हुआ था, फिर उसे याद आया, सुबह से लेकर कितनों के आगे हाथ फैलाया है, पर जवाब में सिर्फ गालियां डांट और धक्के मिले थे। उसे वह धक्का तो अब तक भुलाया नहीं जा रहा था जो कि पैसा मोंगने पर एक आदमी ने दिया था। वह जमीन पर गिर पड़ा था, गिरने के कारण नासूर मे चोट लग गई थी और वह दर्द के मारे तड़प उठा था, पर किसी को भी उस पर रहम नही आया था उल्टा कुछ लोग बोलने लगे अच्छा हुआ इसकी यही सजा है। वहां खड़े हुए सभी हंसने लगे थे। उसने सोचा अब भीख मांगना छोड़ देना चाहिए इससे तो मरना बेहतर। पर आखिर पेट कैसे भरे? मज़दूरी वह कर नहीं सकता है। जो पूरा हाथ फेक्ट्री में कट गया था और टांग में कुत्ते के काटने से नासूर बन चुका था। आखिर उन्हीं खयालों ने उसे परेशान कर दिया और उसने दिमाग से सभी ख्याल निकाल दिये। काफी समय बाद उसने महसूस किया कि नासूर में दर्द हो रहा है। पर दर्द टांग के नासूर में नहीं था। पेट के नासूर में था। भूख के कारण उसने अपने जिस्म में अत्याधिक कंमजोरी महसूस की। भूख की तड़प ओर बढ़ रही थी। कुछ समय बाद उसे अपना फैसला बदलना पड़ा। उसने सोचा कि इस समय तो पेट की आग बुझाएं, बाद में भीख मांगना छोड़ दूंगा। यह सोचकर फकीर दुकान से उठा, उठते ही उसकी निगाह एक सफेद पोश बूढ़े पर पड़ी, बूढ़ा काफी आगे बढ़ गया। फकीर की टांगों में ताकत नहीं थी, पर भूख ने उसकी गति बढ़ा दी। जल्दी-जल्दी चलकर वह बूढ़े के करीब आया। उसकी सांसे तेज़-तेज़ चल रही थी। उसके जिस्म से जैसे ताकत निकल गई थी। कुछ देर बूढ़े के पीछे खामोशी से चलता रहा, फिर पूरी ताकत लगाकर कहा, सुबह से भूखा हूँ, मालिक के नाम पर खाना खिलवाओ।

व्यक्ति रूक गया। "माफ करो।" व्यक्ति फिर चलने लगा। फकीर ने हिम्मत नहीं हारी एक बार उसने फिर दुआएं देते हुए कहा खुदा तुम्हें हक नसीब करेगा।

बूढ़े के कदम रूक गये और रहस्यमयी मुस्कान उसके होठों पर फैल गई। हक की दुआ कर रहे हो इसलिए कि मैं बूढ़ा हूं, खुश होऊंगा। अगर बच्चा होता तो इम्तहान में पास करने की दुआ करते 'ठग'। और वह आगे बढ़ गया।

फकीर गुस्से से दांत किटकिटाने लगा। और उसने दिल में कहा: मैं ठग हूँ या तू... अल्लाह की इबादत करते हो.. पर उसके नाम पर एक पैसा भी नहीं देते हो। उसने सोचा, अल्लाह के नाम पर देना उसके बंदे पसंद नहीं करते। उनका ख्याल हे कि उनके पास जो कुछ भी है वह सिर्फ उनकी मेहनत का फल है। फकीर ने ख्याल किया उसे कोई कुछ भी देना पसंद नहीं करता है- भला वे अपनी मेहनत की कमाई वे क्यों किसी को दें।

फकीर आगे बढ़ा उसकी नज़र बिजली के खम्बे के नीचे बैठे हुए फकीर पर गई। उसके कदम वहीं पर जम गये और आंखें फकीर के आगे रखे कटोरे पर जम गई, जिसमें पुलाव पड़ा हुआ था। उसने सोचा अब मेहनत करनी पड़ेगी। अल्लाह के नाम पर कोई नहीं देगा। क्यों न जाकर कटोरा उठाकर भाग चलूं। अचानक ख्याल आया कि टांग में दर्द के कारण दौड़ भी नहीं पाऊंगा। पर फिर दिल को तसल्ली दी कि फकीर के सामने लकड़ी की बैसाखी रखी हुई है इससे जाहिर होता है कि वह लंगड़ा है। उसका पीछा नहीं कर सकेगा। रात भी काफी हो चुकी है, रास्ते पर कोई भी आदमी नही है। यह सोचकर वह आगे बढ़ा। उसकी टांगे कापंने लगी, सांस भर आई। पर जब उसने देखा कि फकीर ने मैले कपड़ों से हाथ साफ कर पुलाव खाना शुरू किया है तो उसके जिस्मे में फुर्ती आ गई, वह बढ़कर उसके पास आया। अभी झुककर कटोरा उठाने का प्रयास ही किया था कि उसे फकीर ने कहा आओ भाई 'बिसमिल्लाह' करो।

उसने कांपतर जुबान से कहा, 'खाओ बाबा।' और वह आगे बढ़ गया।

कहानी

लावारिस लाश

• लेखक - डी.के.नेहचलानी
• अनुवाद - डी.पी. तेजा

पर कांता के प्यार का भूत कांता और उनके परिवार को तबाह करेन के सिवाय उन्हें छोड़ने वाला नहीं था। कांता ने उल्टे अपने भाई को दोष देकर उसे उल्टा-सीधा कहकर उसे बददुआएं देने लगी। बूलचंद ने अपने बज़ों से कांता पर कड़ी निगाह रखने और घर से बाहर न निकलने के लिये हिदायत कर दी थी।

कांता को जवान होता देख उसकी माँ सुंदरी और पिता बूलचंद की नीदें हराम हो गई। हालांकिकांता की उम्र कोई खास बढ़ी नहीं थी। वह अब 20 वर्षो की बमुश्किल थी, और इस वर्ष ही बी.कॉम का इम्तहान उसने पास किया था। जमाने को देखकर बूलचंद जल्द से जल्द कांता का विवाह कर निश्चिंत होना चाह रहा था। इसके पहले बूलचंद अपनी दो बेटियों की शादी भी अच्छे घरानों में करा चुका था।

बूलचंद को चार संताने थी तीन पुत्रियां और एक बेटा, उसका बेटा गोप, कांता से लगभग तीन वर्ष छोटा था और बी.कॉम के प्रथम वर्ष में पढ़ रहा था।

घर में अपने रिश्ते की बातें सुनकर एक दिन कांता ने अपनी माँ सुंदरी से अभी शादी न करने के इच्छा जाहिर की। अभी शादी ना करने का सुनकर सुंदरी ने अपनी बेटी के दिल का हाल जानने की कोशिश की। आखिर काफी पूछने पर कांता के दिल का ढक्कन खुल गया। उसने माँ को बताया कि वह कमल से प्यार करती है। और कमल भी उसे बेहद प्यार करता है। कांता ने माँ से यह भी कहा कि वह कमल को छोड़ किसी और से शादी करने को तैयार नहीं है।

कांता के मुंह से प्यार की बातें सुनकर सुंदरी के तो जैसे होश ही उड़ गए। फिर भी ऊंच-नीच समझाकर खुद की और परिवार की इज़्ज़त का वास्ता देकर कांता को समझाने का भरपूर प्रयास किया। पर... पर सब बेकार।

जैसे पानी में लकीर नहीं खींची जा कसती है, वैसे कांता के दिल पर सुंदरी के समझाने के आवाज की लकीरें अपना वजूद कायम ना रख सकीं।

कांता का अटल इरादा देखकर सुंदरी ने डरते-डरते बेटी के प्यार की दास्तां अपने पति से कहीं। कांता के प्यार और ज़िद की खबर सुनते ही बूलचंद का चेहरा सुर्ख हो गया। पहिले तो गुस्से में उसने पत्नि से भी बुरा भला कहा पर फिर महसूस किया कि इसमें उसकी पत्नि का कोई कसूर नही हैं। बूलचंद और सुंदरी ने मिलकर अकेले में कांता को फिर समझाने का प्रयास किया और कांता के आगे झोली फैलाकर अपने व परिवार के इज़्जत की भीख मांगी थी। पर... पर कांता के ऊपर तो मुहब्बत का भूत सवार था और वह भूत इज़्जत आबरू और मान-सम्मान को देखने वाला नहीं था। जो निर्लज कांता ने अपन पिता को भी उल्टे सीधे बोल सुना दिये, और अपनी ज़िद पर वह कायम रही, और कमल से सिर्फ कमल से शादी करने का पक्का इरादा दिखाया था।

आखिर बूलचंद को ही अपनी बेटी की जिद के आगे झुकना पड़ा। हार खाकर अपनी इज़्जत की खातिर बूलचंद ने कांता की शादी कमल से कराने को बेदिल से राज़ी हुए। पर... पर दो तीन दिनों बाद जब उनके बेटे गोप ने उन्हें यह सुनाया कि कमल एक नंबर का सटोरी और शराबी है तब बूलचंद के हाथों से जैसे तोते उड़ गये। उसने कांता को सारी हकीकत सुनाई। पर कांता के प्यार का भूत कांता और उनके परिवार को तबाह करेन के सिवाय उन्हें छोड़ने वाला नहीं था। कांता ने उल्टे अपने भाई को दोष देकर उसे उल्टा-सीधा कहकर उसे बददुआएं देने लगी। बूलचंद ने अपने बच्चों से कांता पर कड़ी निगाह रखने और घर से बाहर न निकलने के लिये हिदायत कर दी थी। जब कांता ने देखा कि उसके माँ बाप व भाई बहनें उसकी और कमल की शादी के विरोधी हैं, तो बिना ऊंच नीच सोचे मौका देखकर वह कमल के साथ शहर छोड़कर भाग गई। या ऐसा भी हो सकता है कि कमल ही कांता को भगाकर ले गया

हो। पर रजामंदी तो दोनों की ही थी न।

कांता के भाग जाने की जब घर वालों को खबर लगी तब सुंदरी तो बेहोश हो गई। अत्यधिक कोशिशों के बाद सुंदरी होश में आई। बूलचंद और घर वालों को ऐसी उम्मीद नहीं थी कि इतना समझाने के बाद भी कांता ऐसे अपने और परिवार की इज्जत को मिट्टी मे मिलाने के लिये ऐसा कदम उठाएगी। पर अब क्या ऐसा कदम उठाएगी। इज्जत गई सो गई. 'निकला हुआ दूध थनों में वापस थोड़े ही जाता है।'

आखिर बूलचंद उनकी पत्नि, बच्चों तथा बेटियों ने आपस में बैठकर विचार किया। और सबने मिलकर यह फैसला किया कि इस घटना की पुलिस में रिपोर्ट न की जाये, क्योंकि जब अपना ही सिक्का खोटा है तो फिर दूसरे को कैसा दोष दिया जा सकता है। दूसरा इस बात को ज्यादा तूल न दिया जाये और ना ही हाए-हाए करके किसी और यह बात बताई ही जाए।

तीसरा आज के बाद कांता या कमल से घर का कोई भी रिश्तेदार कोई रिश्ता नहीं रखेगा और यह समझ लिया जाए कि कांता उनके लिये मर चुकी। मर चुकी।

घर से भाग जाने के बाद जवानी के नशे में कांता और कमल अलग-अलग शहरों में घूमते और मौज करते रहे। जब कुछ वक्त बाद जवानी का जोश ठंडा हुआ तो फिर उन्हें घर की याद आई।

एक दिन दोपहर के वक्त जब बूलचंद दुकान पर और गोप कॉलेज में

कमल, कांता को साथ लेकर फिर अपने पिता के घर गया था। पर वहा भी कमल के साथ शायद वहीं किस्सा दोहराया गया क्योंकि कमल घर से चार पांच लाख रूपयों की हेराफेरी कर इतनी रकम अपने साथ चोरी करके ले गया था। ऐसे निकम्में चोर को बाप कैसे घर में रहने देता?

गया हुआ था तब कांता अपने बनाये पति कमल के साथ घर में आई। कमल एकदम जाकर सुंदरी के पैरों पर गिरा। पर सुंदरी ने हिम्मत करके अपने पैर से ही कमल को दूर हटाया और फिर कांता को हाथ से पकड़कर घर से बाहर निकल जाने का हुक्म दिया।

हां माँ अपने हृदय के टुकड़े को अलग भी कर सकती है। उसके ऊपर से हाथ भी उठा सकती है। जब उनके ही खून में से बना हुआ और पला हुआ बच्चा अपने और परिवार की इज़्जत खाक में मिलाकर खुद ऐश करे तो माँ क्या करें...।

कांता अपने घर से जहां उसने सैकड़ो सुख देखे थे और सैकड़ो अपने नखरे और उमंगे पूरी की थी, उस घर से आज वह बेगानों की तरह बाहर निकली थी। बाहर क्या निकली थी इस बार तो उसकी माँ ने ही उसे बाहर निकाला था। कैसे माँ ने अपने दिल पर पत्थर रखा होगा?

कमल, कांता को साथ लेकर फिर अपने पिता के घर गया था। पर वहा भी कमल के साथ शायद वहीं किस्सा दोहराया गया क्योंकि कमल घर से चार पांच लाख रूपयों की हेराफेरी कर इतनी रकम अपने साथ चोरी करके ले गया था। ऐसे निकम्में चोर को बाप कैसे घर में रहने देता?

कमल और कांता किराये का मकान लेकर रहने लगे। धीरे-धीरे कमल ने बाप के घर से चुराया हुआ पैसा शराब और सट्टे में बर्बाद कर दिया। दोस्तों और मित्रों से भी उसने काफी रकम कर्ज के तौर पर ली थी। कमल का उम्मीद थी कि उसके पिता रहम खाकर उसे घर में जरूर पनाह देंगे और उसके दोष व गुनाह माफ करेंगे पर अफसोस...!

कुछ वर्षों बाद घर में पैसे की तंगी और कमल की बुरी आदतों के कारण कांता और कमल आपस में लड़ने भी लगे थे। घर का सब सामान शराब और सट्टे की भेंट चढ़ चुका था। कांता के ऊपर जान न्यौछावर करने वाला कमल अब कांता के ऊपर हाथ भी चलाने लगा था, और शराब के नशे में कांता और कांता के परिवार वालों को भी बुरी-बुरी गालियां देने लगा था।

समय रूकने वाला नहीं है, उसे तो बस अपनी रफ्तार से चलना है। फिर चाहे कोई जीये - चाहे मरे। वक्त की मार खाकर कांता चिंताओं और भूख के कारण कमजोर हो गई थी। हाय रे। सुखों में पली कांता ऐसे दुख कैसे सह रही थी? यह पता सिर्फ कांता को था। किसके साथ दिल की बातें करे या फिर किसके सामने आंसू बहाए। कोई दिल का हाल सुनने वाला तो हो न। जब पति ही उसके ऊपर हाथ चलाता हो तो फिर उसकी कौन सुने? कांता ने अपने पांव पर आप ही कुल्हाड़ी मारी थी। इसी कारण किसी

और को दोष दे तो कैसे दे?

कमजोरी और चिंताओं के कारण कांता को टी.बी. की बीमारी हो गई। एक दिन कांता की हालत खराब देख कमल कंाता को टी.बी. अस्पताल में भरती कराकर खुद बिना किसी को कुछ कहे गायब हो गया। जिसका आज दिन तक कोई भी पता नहीं पड़ा हैं।

अस्पताल में कांता अपनी बीमारी से अकेले ही अकेले लड़ती रही अस्पताल के डाक्टर ओर कर्मचारी कांता से उसके घर का पता और रिश्तेदारों के बारे में पूछते रहते थे। पर कांता गूंगी गाय की तरह चुप रही। उसने मायके या ससुराल के बारे में डाक्टरों या दूसरे कर्मचारियों को कुछ भी नहीं बताया। वह सिर्फ आसमान की और ताकते हुए आंसू बहाती रहती थी। आखिर बिना कुछ खाए पिये बिना देखभाल और बिना किसी की संतवना के ऐसी बीमारी से आखिर वह कब तक लड़ती और कितना लड़ती?

एक दिन मालूम चला कि कांता इस बीमारी के आगे हार खाकर हमेशा के लिये इस फानी दुनियां को अलविदा कर उसने अपनी आखें हमेशा के लिये बंद कर दी।

मैंने यह भी सुना था कि कांता मौत के समय अस्पताल में इसके पास में उसके लिये कोई रोने वाला या गम में आंसू बहाने वाला भी कोई नहीं था। मैंने यह भी सुना था कि कांता का शव अस्पताल में लावारिस हालत में पड़ा था। कोई भी वारिस नहीं जागा जो उसकी लाश को अपना अजीज बताकर उसे उठवाकर जाके ठिकाने लगवाता। पर अफसोस सद् अफसोस मैंने सुना आखिर पुलिस की मदद से एक सामाजिक संस्था ने कांता की लाश को उठवाकर जाके ठिकाने लगवाया। बाप माँ भाई और बहिने, चाचा मामा और दूसरे रिश्तेदार होते हुए भी उन तक शायद इस लावारिस लाश की कोई खबर नहीं पहुंची। हां अखबार में जरूर पढ़ा कि कांता नाम की एक लावारिस लाश का क्रिया क्रम एक सामाजिक संस्था की मदद से किया गया।

इस कहानी को प्रकाशित करने का हमारा अभिप्राय यह है कि वर्तमान समय में जो युवक एवं युवतियां नासमझी में गलत निर्णय लेते है और घर से भागने तक के गलत निर्णय लेते है तथा माँ बाप की इज्जत का कोई ख्याल नहीं रखते हो सकता है ऐसी परस्थितियां उनके साथ भी निर्मित हो। अत: वे इस कहानी को पढ़कर नसीहत लें।

उमड़ते बादल

संभल ही न पाई
अचानक
टूट पड़ा पहाड़
मुसीबतों का
सिर पर
दस्तक भी न दी
कैस निमर्म वक्त?
रोके न रूका
कर गया मन की
ठगी रह गई
मैं
बन गई
जिंदा बुत

सूनी मांग
सपाट ललाट
रूखे बाल, सूखे होंठ
सूनी कलाई, श्वेत वस्त्र
रूठी हंसी, छूटी खुशी
भावना शून्य बुत
मेघ विहीन आकाश
दरकती छाती भूमि की
उग आए कैक्टस
हर तरफ घर में
कभी दामन को
कभी शरीर को
करते

तार-तार
डरती
सिमटती
बचती चलती
तब
अचानक एक दिन
अंतस ने ललकारा
जगाया
थमा दिया
खंजर हाथ में
अंतस का आव्हान
कर गया
संचार शक्ति का

कैप्टस के फनों को
काटती
कुचलती
संयत हुई मै
आकाश में
उमड़ आए बादल
गरजते बादल
चमकती बिजली
घनघोर बारिश
कर गई सराबोर
प्यासी
दहकती भूमि को।

-के.टी.दादलानी, भोपाल

सिंध में सत्रह महीने

गर्मी बेहद थी। ट्रेन में रेत उड़ उड़कर इतनी आ रही थी कि सभी आंख, मुंह ढके हुए थे। स्टेशन पर पानी मिलना असम्भव था- कई जगह देखा देहाती लोग पानी के लिए मिट्टी का बर्तन लेकर इंजन की प्रतीक्षा में खड़े थे। पंजान-सिंध सरहद के इस इलाके में पानी की इतनी कमी है कि लोगों को या तो शहर से पानी लाना होता है या रेलगाड़ी के ड्राइवरों की कृपा पर वे निर्भर रहते हैं। दो-तीन प्रकार के मरूउभ्दिदों के क्षितिज चुंबी जंगलों में सैकड़ों ऊँट चर रहे थे। बस ऊँट ही ऊँट और जानवरों का नाम तक नही। पथ सहयात्री और पंगडण्डियां जनशून्य थीं। एक मुसलमान फकीर था। पूछने पर जवाब मिला- हुरों के उत्पात से छोटे-छोटे स्टेशन बन्द हो गये हैं।

सुबह हम मुल्तान में गाड़ी पर चढ़े थे। समासहा जंक्शन तक तो पंजाबी वातावरण रहा, उसके बाद हिन्दुओं के परिधान में धोती के दर्शन होने लगे। तहमद और पजामा पंजाब के साथ-साथ पीछे छूट गया। ट्रेन त्यों-ज्यों सिन्धु नदी के कछार में आती गई, त्यो-त्यों जंगल घना होता गया। यह जंगल विराट्काय वनस्पतियों के नहीं थे, तो भी काफी घने थे। रोहड़ी के पास उस महान सिन्धु नदी की झांकी मिली कि जिसकी धारा में डूब लगाकर सिकन्दर ने अपने देश-देवता जुपीटर को अर्ध्य दिये थे।

रोहड़ी सिन्धु के किनारे अवस्थित एक प्राचीन नगर है। आजकल नार्थ-वेस्टर्न रेल्वे का जंक्शन होने के कारण उसकी प्रसिद्धि है। पर पहले बड़े-बड़े सूफियों की लीला- भूमि के रूप में ही यह स्थान विख्यात था। अभी भी सूफियों के दो चार अखाड़े वहां मौजूद हैं। सिन्धु के उस पार सक्खर जैसा प्रसिद्ध नगर है। बीच में साधुबेला जैसा प्रसिद्ध टापू पड़ता है। पास में इंजीनियरिंग का महान चमत्कार वह महासेतु है। पंजाब से आने वाली गाड़ियाँ यहां काफी देर ठहरती हैं, फिर कवेटा या कराची की और जाती हैं।

रोहड़ी स्टेशन पर उतरते ही पल्ला मछली के तले हुए बड़े-बड़े टुकड़ों ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया। जन्मजात मत्स्य लोलुपता पानी बनकर जीभ पर उतर आई और मैंने अन्दर ही अन्दर अपने मैथिल पूर्वजों की स्वादवृत्ति को प्रणाम किया। तो क्या प्रणाम ही करके रह गया? नहीं, स्टेशन से बाहर निकलकर सराय में ठहरा और गुरूनानक होटल में बैठकर इत्मीनान से भगवान के मत्स्यावतार की पूजा की।

दूसरे दिन पुल पार करके सक्खर देखने गया। बाजारों में हिन्दुओं को धोती ही पहने पाया। नौजवानों और बच्चों की बात छोड़ दीजिए। अभी कल सुबह तक मैं पंजाब में था, जहां धोती का पहनावा हिकारत की निगाह से देखा जाता था। पाधा-पुरोहित पूजा-पाठ, भोजन-भंडारा, के समय धोती पहन लें, तो पहल लें, वरना वे भी पंजाब का भद्र परिधान ही पहनते हैं। चुस्त पजामा, अचकन या कोट और सिर पर साफा चादर हुई तो हुई। इस प्रकार पंजाब के दैनिक जीवन से धोती को हिन्दुओं ने हटा दिया है। पंजाब ही क्यों, लखनऊ से हम यही हाल देखते आ रहे थे। सिन्धु के किनारे-किनारे मीलों तक चली गई है सक्खर बस्ती। जरा दूर हटकर नया सक्खर भी बस रहा है। उस दिन शायद पूर्णिमा थी। हजारों नागरिक सिन्धु नदी के दर्शन करने आये थे। दोने में कुमकुम और अक्षत डालकर दीप जलाकर उसे प्रवाह में छोड़ रहे थे। शत-सहस्त्र दीपिकाओं का वह समूह अरब सागर की और बहा जा रहा था। और मैं सिन्धी जनता के श्रद्धा निवेदन का वह मधुर प्रतीक देख-देखकर चित्र लिखित सा खड़ा था। एक वृद्ध सज्जन ने भावावेश में पाकर मुझे छेड़ दिया कहां से आये महाराज?

मैंने संक्षेप में बता दिया और पूछा- नदी के किनारे इस प्रकार श्रद्धापूर्वक दीप बहाते तो मैंने कहीं नहीं देखा. है आपके देश में यह कौन सी रीति है?

वृद्ध ने कहा- हम सिन्धी वरूण के उपासक हैं। जहां जाएँगे आप इस

देश में यही रीति पाएँगे। उसी प्रसंग में उक्त सज्जन ने एक अनुष्टुप सुनाया -
केचिदत्र निराकारा: साकाराश्च तथाडपरे।
वयं संसार संतप्ता नीराकरमुपारूमहे ।।

अर्थात्- कुछ आदमी तो इस दुनिया में निराकार की उपासना करते है, कुछ साकार की, परन्तु भव ताप से संतप्त हम प्राणी नीराकार यानी जलमय भगवान् की उपासना करते हैं।

मैं यह सुनकर दंग रह गया। आगे कई बार, कई जगह सिंध में इस प्रकार के दृश्य देखने को मिले। उन पर पृथक ही एक लेख लिखा जा सकता है। प्रकारांतर वरूण की उपासना में यहां के मुसलमान भी भाग लेते हैं। सिन्धुनदी को दरिया शाह जैसे महामान्य नाम से वे सम्बोधित करते हैं।

उस दिन घूमघाम कर साधु बेला भी देख आया। उदासी साधुओं का बहुत बड़ा अखाड़ा है। पाँच सौ बीघे का रकवा होगा। साधुओं का बगीचा ठहरा, हिन्दुस्तान भर से तरह-तरह के फलों की गुठलियां ला-लाकर यहां वे लगाते हैं। एक ही जगह आम, अमरूद, जामुन, नासपाती, सेव, बेर आदि मैंने वहीं देखे।

सत्रह महीने तक सिन्ध से मेरा सम्पर्क रहा- हैदराबाद की सारस्वत ब्रहम्ण पाठशाला में प्रधानाध्यापक पद पर कुछ दिन, और कुछ दिन सिन्ध की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मुख्य पत्र कौमी बोली के सम्पादक रूप में।

1941 की मर्दुमशुमारी के अनुसार सिन्ध प्रान्त की जनसंख्या 45 लाख है, जिसमें 11 लाख हिन्दू हैं। जनता की धार्मिक मनोवृत्ति सूफी ओर नानकपंथी है। आठवीं सदी के शाहनमाह के अरबी लेख से पता चलता है इस समय वहां बौद्ध और ब्राहम्ण दोनों ही संस्कृति के लोग रहते थे। सिन्ध पर अरबी आक्रमण मुहम्मद बिन कासिम द्वारा 692 ई. में हुआ। तब से इस भूमि में इस्लामी भावनाओं का प्रधान्य चला आ रहा है। मीरों, कलहारों और नवाबों की सामंतशाही से ऊब कर स्थानीय जनता राजपूताना, गुजरात और पंजाब में आ बसी और सिन्धु नदी के उपजाऊ इलाकों को आगंतुको के लिए खाली कर गई। उन्हें तलवार छोड़कर तराजू का सहारा लेना पड़ा है। इसी से सिन्ध का नागरिक जीवन आज हिन्दू प्रधान हो गया।

गुरू नानक की संतवाणी यहां के हिन्दुओं और दूसरे लोगों में काफी लोकप्रिय है। सूफी संतों की परम्परा यहां ऐसी प्रबल रही है कि सभी सिंधी सूफी धारणाओं से ओत-प्रोत हैं। किसी सिंधी हिन्दू से आप मिलिए और पूछिये कि तुम क्या मानते हो, वह अवश्य गुरू नानक और शाह अब्दुल लतीफ के दो चार पद सुना देगा। शाह अब्दुल लतीफ बहुत बड़े सूफी कवि थे। सिन्ध में वह इतने लोकप्रिय हैं कि उन्हें वहां का तुलसीदास कहा जाता है। सिन्धी मुसलमानों को बहुधा मैंने हिन्दू मन्दिर वरूण चैत्य की दरगाह के समक्ष नतमस्तक पाया है। अठारहवीं सदी के मस्त फकीर सचल सरमस्त का यह दोहा कितना बढ़िया है:-

आहि रूहु मुँहिजो अरब जो ऐं खाकि हिन्दूजी अहमद मिल्यों हुते त हिति श्याम मिल्यो आहि (मेरी आत्मा अरब की है, तो शरीर हिन्दू की, वहां अगर मुहम्मद मिले तो यहां श्याम मिले हैं।) सम्प्रदायिक दंगे सिंध में उतना उग्र रूप नहीं धारण करते, जैसा कि अन्य प्रान्तों में। पारों की दरगाहों पर होने वाले मेलों में मैं कई बार शामिल हुआ हूँ। एकतारा पर पीरों के गुणगान करने वाले हिन्दू भगतों को झूमते देखा है।

मुल्तान कभी सिन्ध के अन्तर्गत था। वर्तमान प्रान्त विभाजन के अनुसार मुल्तान कमिश्नरी पंजाब के अन्दर है, परन्तु औरतों की नाकों में पुखराज वाली नथ देखकर सहसा उनकी तुलना आप सिंधी महिलाओं से कर बैटेंगे। जल- पूजा मुल्तान में भी प्रचलित है। सिन्ध के महात्मा उडेरों (लाल) वरूण के अवतार माने गये हैं और वरूण असुर सभ्यता का उतना ही पूज्य देवता है जितना कि इन्द्र वैदिक सभ्यता का। असुर सभ्यता के अवशेष सिन्ध के मोहन् जोदड़ो और पंजाब के हड़प्पा में समान रूप से पाये गये हैं। तत्कालीन सभ्यता का यह चिन्ह (जल-पूजन) भी मुल्तान के निकटवर्ती स्थानों तक प्रचलित है- और सिन्ध में तो जलपूजकों का एक सम्प्रदाय ही बन गया है, जिसे

दरियापंथी कहते है।

सिन्ध का जनजीवन दूसरे प्रान्तों की अपेक्षा सुखी है। कारण यह है कि वहां आबादी कम है। सिन्धु नदी से नहरें निकाल निकाल कर गैर आबाद और ऊसर जमीन को उपजाऊ बनाने की योजना अमल में बहुत कम लाई गई है। फिर भी प्रान्तीय सरकार की और से खेती करने के लिए बराबर लोगों का आव्हान होता रहता है। बाहर के लोग भी वहां जाकर खेती करने लगे हैं। पक्के कृषिकार तो वहां के मुसलमान ही हैं। सिन्ध के हिन्दू व्यापारोन्मुखी जाति है। सिन्धी सौदागर दुनिया के कोने-कोने में फैले हुए हैं। जावा, सुमात्रा, बोर्निया, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, जापान, फारमूसा, चीन, मंचूरिया, कोरिया, मंगोलिया, अफ्रीका के निर्जन प्राय इलाकों में अरब, ईरान, अफगानिस्तान, साम, सीरिया, मिस्त्र, यूरोप के छोटे-बड़े देशों में अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी भागों में और कहां नहीं ये सिन्धी सौदागर फैले हुए हैं।

इस महासमर के युग में हजारों सिन्धी धुरी राष्ट्रों द्वारा विजित देशों में अटके रहे। सिन्धी व्यापारियों की यह जाति भाई बंद कहलाती है। एक दिन किसी मित्र ने कहा- मेरा भाई मंगोलिया की सरहद पर चार महीने रह आया है। सैकड़ों फोटो साथ लाया है। देखना हो तो साथ चलिए।

मैंने देखा तो सोवियत मंगोलिया के उद्‌बुद्ध जीवन के प्रतीक कई चित्र थे। उस युवक से बातें हुई, राजनीतिक मामले में काफी जागरूक निकला वह। दूर-दूर तक फैले हुए ये सिन्धी सौदागर अपने देश लोट-कर दान पुण्य के खाते में काफी रकम खर्च करते हैं। व्यापार क्षेत्र में सिन्धियों की जो प्रसिद्धि है, वह बाहरी दुनिया को लेकर ही। भारत के दूसरे प्रान्तों में सिन्धी व्यापारी बहुत कम हैं, परन्तु भारत के बाहरी व्यापारी बनकर रहने वाले भारतीयों में सबसे बड़ी संख्या सिन्धियों की ही है। मारवाड़ी तो अभी वर्मा तक ही पहुँचे हैं। आगे बढ़ने में धर्म का बाहय आडंबर उन्हें रोके हुए है। सिंधियों की स्थिति इस सम्बंध में प्रगतिशील है। छूत-छात का भूत उनसे हार मानता है। नानकपंथी और सूफी भावना के कारण उनमें हद दर्जे की सर्व-धर्म सहिष्णुता होती है। बाहरी दुनिया से निरन्तर संपर्क के कारण उनका स्वभाव युगधर्मा बन गया है। यही कारण है कि दुनिया के कोने-कोने में ये पहुँच गये हैं। मिलनसार ये इतने कि दुनिया के बर्बर से बर्बर जातियों के बीच अपनी दुकानदारी चला ले जाते हैं। आर्थिक उदारता के लिए तो सिन्ध के ये भाईबन्द मशहूर हैं ही, पर धार्मिकता और सामाजिकता भी इनमें पर्याप्त होती है। वह जहां कहीं भी रहेंगे गुरू ग्रन्थ ओर गीता साथ रहेंगी, साधु-ब्राहम्ण और अतिथि अभ्यागत इनके यहां बहुत ही सम्मान पाता है- चाहे स्वदेश में, चाहे विदेश में। वयापार ये से अधिकतर मोती, जवहरात, सिल्क-रेशम, सोना-चाँदी का ही करते हैं। कीमती कपड़ों की बड़ी-बड़ी फर्मे देश-देशान्तर में सिन्धी व्यापारियों के नाम से जुड़ी हुई है। इन भाईबन्दों का शायद ही कोई परिवार होगा, जिसका कोई न कोई सदस्य समुद्र लंघन न कर आया हो। अपने साथ वे ब्राहमणों को भी खींच ले जाते हैं। मेरे सिन्धी विद्यार्थियों में से एक आजकल कोलम्बो में है, दूसरा गाइना में, तीसरा है अरब में और चौथा चीन में। यह सब मैं अपनी प्रतिष्ठा वृद्धि के लिए नहीं लिख रहा हूं, क्योंकि आषाढ़ी-पूर्णिमा में उन लोगों ने कभी गुरू दक्षिणा नहीं भेजी। सोचा होगा दो चार महीने ही पढ़ा है- गुरू-शिष्य का गठबंधन जिन्दगी भर का तो होता नहीं- पर मैं तो नहीं छोडूंगा, एक आस्थावान आचार्य के शब्दो में कहूंगा-

एकाक्षर प्रदातारं
यो गुरू नाभिमन्यते..........

इस श्लोक का उत्तरार्द्ध नहीं लिखूंगा, क्योंकि उसमें शाप दिया गया है। बेचारे कहीं रहें मस्त रहें।

एक दिन अपने यजमान की और से एक मित्र निमन्त्रण दे गये। आपत्ति का कोई कारण नहीं था, आत्माराम वहां पहुँच गए। जीमते वक्त पूछा- तो पता लगा, मित्र के यजमान का भतीजा शंधाई में मर गया था। तीसरे साल की

बात है- उन दिनों उक्त नगर जापान के अधिकार मे आ गया था। मरने की खबर तीन मास बाद कराची पहुँची थी। उसी तरूण का श्राद्ध था। गुरूग्रन्थ और गीता के अखण्ड सप्ताह के बाद पाँच ब्राहम्णों और पाँच सन्यासियों को भोजन कराया गया। यह सब बात भाई चेलाराम ढोलनमल ने मुझे स्वयं बतायी। वही परिवार के मुखिया थे। जापान का आक्रमण होने से पहले तक खुद भी शंघाई और तोकियो में रह आए थे। रेशमी कपड़ों का व्यापार था। अमेरिकन ढंग की अंग्रेजी बोल रहे थे। अभी भी परिवार के चार सदस्य प्रशान्त महासागर के विभिन्न टापुओं के अवरूद्ध थे।

कहां तक गिनाऊँ, सिन्धियों के साथ बात करने पर जब दुनिया के छोटे-बड़े शहरों के नाम निकल आते हैं और ऐसा बहुधा होता है, तो मेरा घुमक्कड़ मन उछलने लगता और अन्त में उसी लोमड़ी की भाँति बैठ जाता, जिसने निराश होकर कहा था। अंगूर खट्टे हैं।

सिन्ध के सबसे अधिक प्रतिष्ठित, सुसंस्कृत और सुशिक्षित लोग शामिल हैं। हिन्दुओं में प्रमुख ये ही दो जातियां हैं, आमिल और भाई-बन्द। एक बुद्धिजीवी है तो दूसरा वाणिज्य जीवी। ब्रहम्ण थोड़े ही हैं, दाल में नमक के बराबर तोयस्थं लवणं यथा। अमल के आमिल शब्द की वयुत्पत्ति है। ये लोग दीवान कहलाते हैं, मुस्लिम शासनकाल में बड़े-बड़े ओहदे पर रहने के कारण इस जाति का नाम ही आमिल पड़ गया। यह अपने नाम के साथ द्विवेदी, त्रिपाठी, चतुर्वेदी, उपाध्याय, मिश्र आदि की भाँति कृपालाणी, गिदवाणी, वासवाणी, गुलराजाणी, मीरचन्दाणी आदि वंशगत उपाधियाँ जोड़ते हैं। भेद इतना ही है कि द्विवेदी, त्रिपाठी आदि उपनाम बहुत प्राचीन हैं और ज्वलन्त ब्राहम्तव की याद दिलाते हैं, परन्तु कृपालाणी और गिदवाणी आदि उपाधियां दस-पांच पुस्त पहले के अपने-अपने प्रख्यात वंशधरों की अमिद्या को सूचित करते हैं- कृपाल का कृपालाणी, गिदू का गिदवाणी, वासू का वासवाणी आदि। बहुत दिमाग लड़ाया कि यह आणी क्या है। एकाएक ख्याल आया गार्ग्यायाणि, दांडायनि आदि। अपत्य अर्थ को बतलाने वाला गोत्र सूचक यह 'आयनि' और आमिल लापेगां के उपनाम की यह 'आणि' आदि दोनों मिलायें जाएँ तो भाषा-विज्ञान के प्रेमियों को इस सम्बन्ध में निराश नहीं होना पड़ेगा। हमारे आचार्य कृपलानी (कृपालाणी कहिए) इसी आमिल जाति के कुल दीपक हैं। आचार्य गिडवाणी (सिन्धी उच्चारण गिदवाणी) भी इसी जाति के रत्न थे और साधु टी.एल. वासवाणी का नाम कौन नहीं जानता है? इस प्रकार हम देख सकते हैं कि शिक्षा और संसकृति के क्षेत्र में भी सिन्धियों का नाम जिन्होनें उज्जवल किया है, वह सबके सब आमिल हैं।

बुद्धिजीवी होने के कारण आमिलों को भी उसी तरह बेकारी से लड़ना पड़ता है जैसे बंगालियों को। शादी-ब्याह में कन्या पक्ष वालों को भी बंगाल की तरह ही यहां भी दिक्कतें उठानी पड़ती है। हर एक सपूत का बाप कन्यावालों को निचोड़कर सीढ़ी बना डालता है। नतीजा यह हो रहा है कि हजारों आमिल लड़कियां वर प्राप्त होने पर भी बाध्यतामूलक अविवाहित जीवन बिता रही हैं, लड़कियों के विवाह की यह समस्या भाई बन्दों में नहीं है। उनके यहां न तो अतिउच्च शिक्षा प्राप्त लड़कियाँ हैं कि जिनके लिए अति उच्च शिक्षित लड़कों की अनिवार्य आवश्यकता हो, न वैसे लड़के हैं जिनकी कीमत पच्चीस-पच्चीस हजार कूती जाए। मिडिल या मैट्रिक तक की प्राथमिकता और माध्यमिक शिक्षाएँ दिलवाकर वे अपने बच्चों को धन्धे में लगा देते हैं, लड़कियाँ उनके यहां अविवाहित कदाचित् ही रहती हैं।

जनता का तीसरा वर्ग है कृषकों का। उनमें पचानवे प्रतिशत मुसलमान हैं। बड़े-बड़े जागीरदारों और गद्दीनशीन पीरों की हुकूमत के अन्दर सिन्ध के देहाती मुसलमान बहुत ही पिछड़ी हालत में पड़े हैं। उनमें पंजाबी मुसलमानों को मैंने अधिक जागरूक

पाया। अपने पीरों के प्रति उनके हृदय में गम्भीर श्रद्धा है। ऐसे बीसों पीर होंगे, जिनके मुरीदों की संख्या लाखों तक पहुँचती होगी। ये धर्माचार्य भला कब चाहने लगे कि अनुयायियों में शिक्षा-प्रसार हो, उनकी निरक्षरता हटे? कल-करखाने सिन्ध में उतने नहीं है कि लाखों खेतिहर सर्वहारा की लम्बी कतार में खड़े होकर इनकलाब जिन्दाबाद का नारा लगाएँ। कांग्रेस का शंखनाद वहां देहातों में पहुँचते-पहुँचते इतना धीमा पड़ जाता है कि ग्रामीणों को सुनाई नहीं पड़ता। नव-जागरण का सन्देश वहां नागरिकों तक सीमित है। साधारण जनता अभी तक पीरों और गुरूओं के मुंह से जो दो-चार पद सुनती है, उन्हीं तक उसकी अभिज्ञता की इतिश्री समझिए।

भौगोलिक व्यतिक्रम के कारण सिन्ध प्रान्त शेष भारत से कट सा गया हैं। तिस पर अरबी लिपि ने तो और भी हद कर दी है वह एक दीवार जैसी खड़ी है सिन्ध और भारत के दरम्यान।

सिन्ध के पश्चिमोत्तर भाग में बिलोचिस्तान की नग्न पहाड़ियाँ पड़ती है, उत्तर पूर्व में बहावलपुर रियासत के विरल बस्तियों वाले पंजाबी इलाके पड़ते हैं, पूर्व में राजपूतानें का विशाल रेगिस्तान पड़ता है। पूर्व-दक्षिण कोने में कच्छ की छोटी-छोटी झाड़ी वाले भुरभुरी मरू भूमि और कच्छ की खाड़ी पड़ती है, दक्षिण पश्चिम में पड़ता है अरब महासागर। खानपुर से लेकर कराची तक सवा चार सौ मील से ऊपर सिन्धनद के दोनों किनारे लंगोटी की तरह फैला पड़ा है सिन्धियों का छोटा सा यह प्रान्त (आबादी घनी नहीं हे सारा प्रांत आठ जिलों में विभक्त है- सक्खर, शिकारपुर, जैकोवाबाद, लारकाना, दादू नवाब शाह, मीरपुर खास, हैदराबाद, कराची। इनमें मीरपुर पड़ता है जोधपुर लाईन में और जैकोवाबाद क्वेटा लाइन में। अवशिष्ट जिले (करांची को छोड़कर) दरिया सिन्ध के कछारों में बसे हैं। जलवायु शुष्क है, वर्षा कम होती है। गर्मी भी खूब पड़ती है और जाड़ा भी खूब। परंतु ग्रीष्म ऋतु में भी वहां की रात्रि असहय नहीं प्रतीत होती है। अरब सागर की पश्चिमी हवा सारे सिन्ध को प्राणवंत बनाए रहती है। गेहूँ और धान उपजते दोनों हैं, इतना उपजते हैं कि सिंधवासी उन्हें बाहर भी भेजते हैं। सिंध की शुमार हिन्दुस्तान के उन चन्द सूबों में की जाती हे, जहां अन्न आवश्यकता से अधिक पैदा होता है। चारागाहों की बहुतायात है इसलिए दूध-घी की भी कमी नहीं है। अभी तक सिंध की बहुत कम जमीन आबाद हो पाई है। सोवियत रूस की पंचवार्षिक योजनाओं की तरह जब कभी कोई विराट औद्योगिक योजना हमारे इस महादेश में लागू होगी, तो अकेला सिंध अनेक प्रांतों का भरण-पोषण कर लेगा। भारतीय शासन विधान (1935) के मुताबिक जो मंत्रिमंडल वहां कायम है, उसने इन बातों की और बहुत ही कम ध्यान दिया है। पिछले दो तीन वर्षों के अंदर मुनाफाखोरी और अन्नचोरी का जो चक्र अन्य प्रांतों में चला है, सिन्ध की स्वदेशी सरकार उन्हीं धूर्तों को प्रोत्साहित करती रही है जिन्होंने, जनहित का गला घोंटकर करोड़ों का लाभ शुभ प्राप्त किया है।

सिन्ध का शासन अंग्रेजों ने सिक्खों से छीना था। 1847 ई. में सर नेपियर ने इसे बम्बई प्रांत में मिला दिया। अभी नौ साल पहले फिर इस प्रान्त को बम्बई से अलग कर दिया गया है। शिक्षा और व्यापार में सिन्ध अभी भी बम्बई से जुड़ा हुआ है। धार्मिक और सामाजिक सम्बंध उसका पंजाब से है।

सिन्धी भाषा आजकल अरबी लिपि में लिखी जाती है। पुराने पंडित दो-तीन मुझे वहां मिले, जो अरबी से अपरिचित और नागरी मात्र से परिचित हैं। अभी चालीस साल पहले तक सिंधी नागरी में लिखी जाती थी, बनियों ने तो अभी तक नागरी के अन्यतम रूप (मुडा लिपि से मिलता-जुलता हुआ) पकड़ रखा है। वास्तव में सिंधी भाषा के सूक्ष्म उच्चारण भेदों को प्रकट करने के लिए अरबी लिपि, क्या हिन्दू अभी उसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। किसी बहुत बड़े मौलवी या पण्डित की बात छोड़िये साधारण, सिन्धी जनता जिस ठेठ सिन्धी को व्यवहार में लाती है, उसमें

80 प्रतिशत तद्‌भव शब्द ही रहते हैं। अठारहवीं सदी के एक मुसलमान सन्त की वाणी देखिए, कैसी है :

पूरब पन्धि न वञिंणा, गिरिनारी गुमनाम
विभिचारी थी बाटते, करनि कीन विसराम
सीने में संग्राम, सचा सना सुनिजे।

अपने में ही लीन मग्न गिरिनारी योगी कर्म-काण्डों में नहीं फंसते, और न अपना मार्ग त्यागकर आराम ही करते हैं- इनके हृदय में हमेशा युद्ध छिड़ा रहता है।

पाठक देखें कि इसमें कितने तद्‌भव शब्द हैं। अब आधुनिक सिन्धी का एक नमूना देखें -

जदहिं मात भारत जे चरिनन में तो
दिनों दानु भेटा में जेकी बि हो
छडियई जनि ते भी न हिकिड़ो वगो
लंगोटी टुकरू, व्यो उघाड़ो सजो
तदहिं तोते आसीस मात कई
वधाई वदी तुहिंजी पदिवी वई''।

कवि बेकस ने गांधी को लक्ष्य करके कहा है - तुम्हारे पास जो कुछ भी था, सभी जब भारत माता के चरणों तुम भेंट चढ़ा बैठे, एक छदाम भी नहीं बचा सिवाय लंगोटी के और क्या रहा? सारा अंग उघाड़ था, तब तुम पर माता की आशीष हुई, उसने तुम्हारी पदवी बढ़ा दी। दुर्भाग्य की बात है कि साहित्य सम्मेलन और नागरी-प्रचारिणी सभा जैसी प्रतिनिधि संस्थाएँ सिन्धी के प्रति उदासीन क्या, विमुख हैं। सिन्धी के उन हजारों शब्दों की व्युत्पत्ति के आलोक में हम हिन्दी के तद्‌भव शब्दों की जड़ तक जा सकते हैं। इधर चार-पांच वर्षों से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) के सदुद्योग से सिंध में हिंदी प्रचार का काम होने लगा है। हिंदुस्तानी की आड़ लेकर निरवालिस उर्दू का प्रचार प्रांतीय सरकार की ओर से हो रहा है। सिंधी हिंदू अपनी सरकार से इस बात की मांग कर रहे हैं कि उनके लड़के को नागरी लिपि में हिंदुस्तानी लिखने-पढ़ने की छूट दी जाए। लीगी शिक्षा मंत्री इस मांग से बिदकता है। हैदराबाद सिंध के दयाराम गिदूमल नेशनल कॉलेज के प्रोफोसर नारायणदास बथेजा को उस प्रांत की माध्यमिक शिक्षा में संस्कृत प्रवेश का श्रेय प्राप्त है।

वहां के सारस्वती ब्राह्मण प्रतिभाशाली होते हुए भी अपने सम्पन्न यजमानों से मूयसी-दक्षिणा पाकर इतने अलस, इतने इन्द्रालु बन बैठे हैं कि अध्ययन अनुशीलन की अधिक आवश्यकता भला उन्हें क्यों होने लगी? संस्कृत शिक्षा की दशा सिन्ध में वही है जो पिंजरापोल कीलू ली-लंगड़ी गायों की होती है।

करांची के एक मित्र ने अपने प्रांत की विशेषता बताते हुए बड़े अभिमान से कहा- सिन्धी भिखमंगे नहीं होते, मजूर, मोची, तेली-तमोली, सुनार-दर्जी, सिन्धी नहीं होते, वेश्याएँ भी सिन्धी नहीं होती।

तो आखिर ये आए कहां से? मैंने उलटकर पूछा तो जवाब मिला - कच्छ, राजपुताना, पंजाब से, और घरेलू नौकर हमें आपके युक्त प्रान्त से बहुत सस्ते मिलते हैं।

सिन्धी मित्र की उस मुस्कान ने मुझे चिढ़ाया नहीं, गम्भीर बना दिया। गोरखपुर, बस्ती, फैजाबाद, गौंडा आदि के हजारों ग्रामीण सिंध में भरे पड़े हैं। इन्हें यहां वाले भैया कहकर पुकारते हैं। भर, बोन, अहीर, राजपूत, कुर्मी, ब्राह्मण सभी जाति के हैं और सब काम करते हैं। निरक्षरता और सफाई का अभाव इन्हें स्थानीय लोगों से छाँटकर अलग कर देता है। फिर शिक्षित से शिक्षित बिहारी और युक्त प्रांतीय बर्मा में जैसे दरबान कहकर पुकारा जाता है, उसी तरह सिन्ध में 'भैया' कहकर बुलाया जाता है। इससे मैं स्वयं कई बार तिलमिला उठा हूँ, और बाद में ठण्डे दिमाग से कई बार सोचा है। दोष उनका नहीं हमारा ही है। हजारों और लाखों की तादाद में होते हुए भी गुजरात, महाराष्ट्र और सिन्ध में भैया अपमान और बुद्धु का प्रतीक बना हुआ है। जाहिल, चपाट और उजड्ड। कम से कम पैसा लेकर अधिक से अधिक काम कर देना, निरक्षर भट्टाचार्य होने के नाते जीवन

भर अंगूठा निशान करते रहना, परिवार को साथ नहीं रखना फिर भी आजन्म प्रवास में हमें औरों की निगाह में हल्के बनाये रखता हैं। धोती पहनकर, कन्धे पर चादर डालकर आचार्य कृपलानी करांची में एक बार भाषण कर रहे थे। श्रेताओं में सिन्धियों की ही तादाद ज्यादा थी। सभा जब विसर्जित हुई तो कइयों के मुंह से सुना गया- अंसा जो कृपलाणी भैया थी व्यो आहे (हमारा कृपलानी भैया बन गया)।

बच्चों की देखभाल रसोई पानी, घर-बाग की रखलावी, पूजा-पाठ आदि कई दृष्टियों से सिन्धी हिन्दू भैया को ही पसन्द करते हैं। परिवारों में बिखरे होने के करण यों भी इनका संगठन मेढ़कों को तराजू में तोलने की तरह मुश्किल है। जिस पर शिक्षा की कमी, झूठ-मूठ का आत्मसन्तोष इनको पिछड़ी हुई स्थिति में रखे हुए है। अब छोटी मोटी दुकान भी ये लोग करने लगे हैं। फेरी लगाकर दहीबड़ा और पकोड़ा भी बेचना शुरू किया है। इक्के-दुक्के अपने लड़को को पढ़ाने भी लग गए हैं।

सिन्ध के अधिवासी शांतिप्रिय आतिथ्य परायण, सहिष्णु होते हैं। भिन्न-भिन्न प्रान्तों से गए हुए लोगों की संख्या सिन्ध को सार्वदेशिक बना रही है। पंजाबी, बलोची, मारवाड़ी, गुजराती, कच्छी, काठियाबाड़ी और भैया सब मिलाकर इतने हो गये हैं कि सिन्धी इनकी तुलना में थोड़े लगते हैं।

भोजन में भात ओर रोटी दोनों ही लोकप्रिय हैं। मांस-मछली न खाते हों, ऐसे सिन्धी बहुत कम मिलेंगे। पापड़ खाने का काफी रिवाज है। खटाई में मिर्चे का इस्तेमाल खूब करते हैं।

कलामूलक वस्तुओं में कपड़ों की छपाई मुझे बहुत पसन्द आई। इस्लामी तूलिका से विचित्र बेल-बूटों मेहराव की तरह छपी हुई किनारी वाले कपड़े आपको बहुत ही आकर्षक लगेंगे। मिट्टी और सिमेंट के योग से तैयार किए हुए खपड़े और ईटें भी सिन्ध के स्थापत्य कला प्रेमियों की निगाह मे विशेष स्थान दिलाती है। लकड़ी की वस्तुओं पर सिन्धी कारीगर इतना बढ़िया वार्निश करते हैं कि देखते ही बनता है। जवाहरात केलिए तो सिन्धी जौहरी मशहूर ही हैं। सिन्धुनद सिन्धु पहुँचते पहुँचते सप्त सिन्धु कहलाने लगता है, क्योंकि वह अपने साथ कपिशा नदी और पंजाब की पाँचों नदियों को साथ लिए इस भूमि में प्रवेश करता है। यहां और कई बातों की चर्चा आवश्यक थीं, परन्तु लेख बहुत लम्बा हो गया है, अब मैं इसे यहीं समाप्त करता हूँ। सिन्ध के इतिहास और पुरात्त्व का प्राकृतिक दृश्यों का अधिक वर्णन करने के लिए हिन्दी में एक पुस्तक की आवश्यकता है।

कहानी

मरकर आदमी कहाँ गया

एक साधारण ब्रहमण थे। वे काशी पढ़कर आये। सिर पर पुस्तकें लदी हुई थी। शहर से होकर निकले तो वर्षा आ गयी। पास में छाता था नहीं। अतः एक मकान के दरवाजे के पास जगह देखकर खड़े हो गये उस के ऊपर एक वेश्या रहती थी। कुछ आदमी राम नाम सत्य है कहते हुए एक मुर्देको लेकर वहाँ से निकले। उस वेश्या ने आवाज देकर एक लड़की से कहा कि जा, पता लगाकर आ कि यह स्वर्ग में गया या नरक में गया? लड़की चली गयी। पण्डित जी ने सुना तो वहीं ठहर गये कि ऐसी कौन-सी विद्या है, जिससे मरने वाले का पता लग जाए कि वह कहां गया? थेड़ी देर में वह लड़की आयी और वेश्या से बोली कि यह तो नरक में गया। इतनें में दूसरा मुर्दा आया वेश्या ने फिर लड़की को भेजा। लड़की ने आकर कहा कि यह तो स्वर्ग में गया। पण्डितजी ने विचार किया कि मैं इतने वर्ष काशी रहा, वहाँ कितनी पुस्तकें पढ़ी, पर यह पता नहीं लगता कि मरने वाला कहाँ गया? यह विद्या तो मेरे को सीखनी चाहिये।

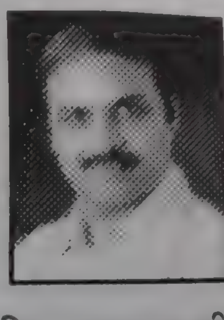
पण्डित जी मकान के ऊपर चले गये। वेश्या ने देखा तो पहचान लिया कि यह मेरा ग्राहक तो है नहीं। उसने पूछा कि यहाँ कैसे आये? पण्डित जी बोले- माताजी। मैं...। वेश्या बोली मेरे को माता जी मत कहो, मैं तो एक वेश्या हूँ। पण्डित जी बोले- हमारे लिये तो माँ, बहन या बेटी ही हो। वेश्या बोली-क्या बात है? पण्डित जी ने कहा- तुमने लड़की से कहा कि पता लगाकर आओ, मरने वाला कहाँ गया तो उसने आकर कहा कि एक नरक में गया, एक स्वर्ग में गया, यह क्या विद्या है? मैं जानना चाहता हूँ। वेश्या ने उस लड़की को बुलाया और कहा कि महाराज को बता, तूने कैसे परीक्षा की कि यह नरक में गया, यह स्वर्ग में गया। वह कहने लगी कि महाराज। वे मुर्दा लिये जा रहे थे तो मैंने उनसे पूछा कि यह कहाँ से आया है, किस मोहल्ले का है? फिर मैं पता लगाकर उस मोहल्ले पहुँची तो लोगों को रोते देखकर पता लगा कि इस घर का आदमी मर गया। उनके पड़ोसियों के घर जाकर सुना तो लोग कह रहे थे कि वह आदमी मर गया तो हम निहाल हो गये। वह सबकी चुगली करता था, चोरी करा देता था, लड़ाई करा देता था, झूठी गवाही देकर फँसा देता था, बहुत दुःख देता था। मर गया तो बहुत अच्छा हुआ, आफत मिटी। ऐसी बातें मैंने कई घरों में सुनी तो आकर कहा कि वह नरक में गया। दूसरा मुर्दा आया तो उसका भी पता लगाकर मैं उसके मोहल्ले में गयी। वहाँ लोग बातें कर रहें थे कि राम-राम, गजब हो गया। वह आदमी तो हमारे मोहल्ले का एक प्रकाश था। वह सन्त- महात्माओं को बुलाया करता था, सतसंग कराता था, कोई बीमार हो जाय तो रातों जगता था, किसी पर कोई आफत आती तो उसकी तन-मन-धन से सहायता करता था। वह चला गया तो हमारे मोहल्ले में अंधेरा हो गया। ऐसी बातें मैंने सुनी तो आकर कहा कि वह स्वर्ग में गया।

दूसरा मुर्दा आया तो उसका भी पता लगाकर मैं उसके मोहल्ले में गयी। वहाँ लोग बातें कर रहे थे कि राम-राम, गजब हो गया। वह आदमी तो हमारे मोहल्ले का एक प्रकाश था। वह सन्त-महात्माओं को बुलाया करता था, सतसंग कराता था, कोई बीमार हो जाय तो रातों जगता था, किसी पर कोई आफत आती तो उसकी तन-मन-धन से सहायता करता था। वह चला गया तो हमारे मोहल्ले में अंधेरा हो गया। ऐसी बातें मैंने सुनी तो आकर कहा कि वह स्वर्ग में गया।

पण्डित जी बोले- अरे, ये बातें तो हमारी पुस्तकों में भी लिखी हैं कि अच्छे काम करने वाले की सद्गति होती है और बुरे काम करने वाले की दुर्गति होती है, पर यह बात हमारी अक्ल में ही नहीं आयी।

व्यंग्य

“मेरा स्कूल ब्यूटीफूल”



●व्यंग्यकार-भरत चंदानी
(बिलासपुर)

हमेशा की तरह इस वर्ष भी हिन्दी भाषा के प्रश्न पत्र में जब वही घिसा-पिटा प्रश्न 'मेरा पाठशाला पर निबंध लिखो' पूछा गया तो एक प्रतिभाशाली बालक ने कुछ लीक से हटकर लिखने की सोची और कुछ इस तरह लिखा -

एक आदर्श पाठशाला होने के लिए अतिआवश्यक है, दो चार सौ नदारद छात्र, ताउम्र सरस्वती में लक्ष्मी को तलाशते हुए चन्द शिक्षक, एक सिद्धान्तहीन प्रिंसिपल, तीन चार अवज्ञाकारी चपरासी, एक सरकारी नाज-नखरों से युक्त गैर सरकारी बाबू, हारने के लिए खेल का मैदान, निर्माणाधीन लाइब्रेरी, प्रस्तावित प्रयोगशाला, अघोषित पेशाबघर और एक अदद घण्टी ताकि शाला की छुट्टी समय पर की जा सके। जिस इमारत की दीवारें जर्जर हों और छत के गिरने की आशंका बराबर बनी रहे वह अक्सर पाठशाला हो जाती है, जो जीवन में कुछ नहीं कर पाते वे शिक्षक हो जाते हैं और उनसे पढ़ने वाले छात्र जीवन में कुछ नहीं कर पाते।

मेरी पाठशाला एक आदर्श पाठशाला है। जब गर्मी या सर्दी की छुट्टियाँ नहीं रहती, जब होली, दीवाली, ईद और तुलसी, कबीर, गाँधी जयंती या पुण्य तिथि आदि नहीं होती, जब इतवार नहीं होता, जब शाला बंद होने का कोई कारण शेष नहीं रहता तब शाला लगती है। शहर के सिनेमाघरों में सीटों की काफी दिक्कत है फलस्वरूप काफी छात्र शाला आ जाते हैं, फिर उनमें से आधे कक्षा में भी आ जाते हैं, मगर शिक्षक के नहीं आने के कारण बाहर निकल आते हैं। वैसे भी हमारी कक्षा का क्षेत्रफल को अन्दर आने की इजाजत नहीं देता। कभी-कभी शिक्षक भी आ जाते हैं मगर उनका पढ़ाने का 'मूड' नहीं होता। अक्सर दो स्थितियों में हमारे शिक्षकों का पढ़ाने का 'मूड' नहीं होता, एक तो जब बरसात हो रही होती है तब और दूसरी जब बरसात नहीं हो रही होती है तब। शाला में पढ़ाए जाने वाले महत्वपूर्ण विषय हैं, गणित, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, रसायन आदि और अनिवार्य विषय है 'ट्यूशन'। ट्यूशन बड़ा ही दिलचस्प विषय है, लगभग सभी शिक्षक इसे बड़े चाव से पढ़ाते हैं, मैं तो और कोई विषय पढ़ूँ या न पढ़ूँ ट्यूशन जरूर पढ़ता हूँ। रामलाल बहुत अच्छा लड़का है वह ट्यूशन नहीं पढता। रामलाल गणित पढ़ता है, मैं ट्यूशन पढ़ता हूँ। रामलाल अंग्रेजी पढ़ता है, मैं ट्यूशन पढ़ता हूँ। रामलाल संस्कृत पढ़ता है, मैं ट्यूशन पढ़ता हूँ।

रामलाल फेल हो जाता है, मैं पास हो जाता हूँ। हमें अगली कक्षा में धकेलने के लिए प्रतिवर्ष परीक्षा ली जाती है, ऐसी कड़ी परीक्षा कि हम चाहकर भी फेल नहीं हो सकते, पिताजीयों की सिफारिश, गुरूजनों का आशीर्वाद, इम्पार्टेन्ट क्वेश्चन्स, गाइड, ट्यूशन मानो सारी सृष्टि हमें पास करने को कटिबद्ध खड़ी हो। एक बार मैंने फेल होने की कोशिश की थी। मुझे पन्द्रह-बीस प्रश्न देकर कहा गया 'कोई पाँच बनाओ' मैंने कहा 'नहीं बनते' उन्होंने कहा 'अगल-बगल झाँको, नकल मारो मगर किसी भी तरह तैंतीस बटा सौ लाओ, हम तुम्हें ग्रेस मार्क्स देंगे, पूरक परीक्षा होगी और मैं हार गया। मैंने इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई तो मुझे समझाया गया कि बेटा, हमें आने वाले विद्यार्थियों के लिए कक्षा खाली करनी है तुम क्या चाहते हो कि हम ईमानदारी से परीक्षा लें ताकि तुम जिन्दगी भर विद्या की अर्थी अपने कँधों पर लिए पहली कक्षा में ही पड़े रहो? बेशर्म कहीं के!

वैसे आजकल पढ़ाई कक्षा पहली से नहीं वरन् के. जी. वन से शुरू होती है, अब प्रश्न उठता है ये के.जी.वन क्या है? तो मेरे ख्याल से के.जी. का मतलब किलोग्राम अर्थात् के.जी. वन में बस्ते का भार एक किलोग्राम के.जी. टू में दो और इसी तरह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाएँगे बस्ते का वज़न भी बढ़ता जाता है और श्रीमान 'लार्ड मैकाले साहब' के इस भारी बस्ते का बोझ जो छात्र नहीं उठा पाते वे गधे 'कहलाते' हैं और जो उठा लेते हैं वे गधे 'होते' हैं। खेलकूद के क्षेत्र में भी हमारी शाला किसी से पीछे नहीं। रमी, कटपत्ती, पपलू आदि हमारे प्रिय खेल हैं। कक्षा में बैठकर रेडियो पर क्रिकेट की कमेन्ट्री सुनना और उस पर चर्चा करना खेल में हमारी रूचि का परिचायक है। किसी की भवनाओं से खेलना तो कोई हमसे सीखे। हमारी ही शाला से निकले कुछ पुराने विद्यार्थी इतना अच्छा जुआ खेलते हैं कि देखते ही बनता है। हमें गर्व है कि ऐसी आदर्श पाठशाला के विद्यार्थी हैं। स्वतंत्रता जहाँ इतनी है कि छत और दीवारों पर भी कोई रोक-टोक नहीं, वे जब चाहें गिर सकती हैं और फिर न तो अनुशासन का लफड़ा न पढ़ाई का झँझट। सबसे खुशी की बात तो यह है कि ज़िन्दगी के इम्तहान में चाहे हम फेल हो जाएँ मगर इस शाला में हम कभी फेल नहीं हो सकते।

स्वामी लीलाशाह वाणी

माह के प्रतिदिन के लिये अमूल्य विचार

1 फरवरी – शान्ति कब?

शान्ति तीन प्रकार से प्राप्त होती है।

(1) सत्व गुण से (2) ज्ञान से (3) निर्विकल्प समाधि से। तप, तीर्थ, दान, पुण्य करने से मोक्ष नहीं मिलता। मोक्ष का उपाय ज्ञान है। रजो और सत्व गुण से ऊपर होकर शान्ति पद प्राप्त करना चाहिये। जब तक रजो, तमो और सतो हैं, तब तक पूर्ण शान्ति नहीं मिलती। सत्व गुण धारण करने से मोक्ष मिलता है, ज्ञान प्राप्त होता है।

❖ मल, विक्षेप तथा आवरण, ये तीन दोष हैं। त्यागी, गृहस्थी, नर अथवा नारी जिसमें भी ये हैं, उसमें गड़बड़ी करते हैं।

2 फरवरी – आत्मज्ञान

गुप्त रूप से रहो। दिखावा बिल्कुल न करो। प्रत्येक बात पर संयम रखो। शुद्ध मन में ही आत्मा का प्रकाश होता है और न अशुद्ध मन में। अशुद्ध मन बन्धन का कारण है और शुद्ध मन मोक्ष का।

आत्मा को समझाने के लिए स्वयं को शरीर न समझो। शरीर भाव समाप्त करो, आत्म भाव रखो। शरीर न सुन्दर रूप है और न आनन्द रूप। प्रत्येक आनन्द के लिए दौड़ रहा है, जो आनन्द स्वरूप स्वयं हैं स्वयं उसकी जान है। आनन्द ही तुम्हारी जान है।

❖ याद रखें कि नर अथवा नारी, त्यागी अथवा गृहस्थी अपने कर्तव्य के पालन से ही सद्गति को प्राप्त होते हैं।

3 फरवरी – योगी कौन?

भूख प्यास किसको लगती है? प्राणों को और न तुम्हें। वैसे दुःख सुख मिलता है मन को, जन्म मौत देह को। जिन्होंने आत्मानन्द को पाकर आनन्द का भी त्याग किया है, वे ही पूर्ण योगी कहलाते हैं।

आत्म निश्चय वाले अत्यन्त थोड़े हैं: चाहे गृहस्थी, चाहे सन्यासी, शेष ग्रन्थ पढ़ने वाले और बातें बताने वाले बहुत मिलेंगे। बातें सुनने और सुनाने, पुस्तकें पढ़ानें से प्रत्येक ब्रह्मनेष्ठी नहीं कहा जाएगा परन्तु जिसने व्यवहार किया है, अनुभव किया है, समझकर उसमें स्थित हुआ है।

❖ शरीर अनित्य है किन्तु आत्मा तो अजर अमर है: संसार में कोई भी शक्ति नहीं है, जो उसे नाश कर सके।

4 फरवरी – आनन्द रूप आत्मा

शरीर आनन्द रूप नहीं है और न संसार ही। आनन्द रूप तो आत्मा है। नदियां तब तक दौड़ती रहती है, जब तक सागर से नहीं मिलती हैं। यह मनुष्य भी आनन्द के लिये समस्त आयु दौड़ता रहता है। जब तक अपने आनन्द स्वरूप आत्मा से नहीं मिलता है, तब तक सूक्ष्म शरीर सहित जन्मता मरता रहता है।

स्थूल शरीर के मरने के पश्चात् भी सूक्ष्म शरीर चलता रहता है। शरीरों के कारण तो सभी मरे पड़े हैं, आत्मा के कारण अजर अमर हैं किन्तु शरीर नहीं रहेगा।

❖ कभी भी अपने मन में अपवित्र विचार उत्पन्न न होने दो। ज्ञान के अकुंश से अशुभ विचारों को दबा दो।

5 फरवरी – शरीर असत्

शरीर सुन्दर नहीं। उससे त्वचा उतार कर देखें तो क्या देखोगे? रोग, रक्त, मांस, आंतों, मूत्र एवं विष्टा से युक्त दिखेगा। यदि सुन्दर होता तो मृत्यु के समय क्यों नही रख देते? किन्तु उसे जलाकर भस्म कर देते हैं। इसलिए सुन्दर नहीं है, आनन्द स्वरूप भी नहीं।

आप कहेंगे कि शरीर आनन्द स्वरूप है। यदि शरीर को आनन्द स्वरूप मानते हो तो आनन्द के लिए बाहर क्यों दौड़ते हो? इससे सिद्ध हुआ कि शरीर आनन्द स्वरूप नहीं और शरीर सत्य-स्वरूप भी नहीं।

❖ अच्छा संग करोगे तो तुम्हारा बेड़ा पार होगा। बुरा संग करोगे तो तुम्हारे कार्य भी बुरे होंगे और परिणाम स्वरूप तुम्हारा बेड़ा डूब जाएगा। अतः अच्छा संग करो।

6 फरवरी – स्वयं को पहचानो

आनन्द तेरी जान है। वही सच्चा और स्वतन्त्र आनन्द है। अन्य जो भी आनन्द आदि हैं, वे भी तेरे आत्माभास के थोड़े कण मात्र हैं, क्षणभंगुर हैं, नाश्वान हैं। स्वयं को पहचानने के लिए कमर कस लो, डरकर साहस न छोड़ो। पीछे न हटो, आगे बढ़ने का यत्न करो।

सदैव स्वतन्त्र होकर आत्म ज्ञान, आत्म ध्यान और आत्म आनन्द में स्थित हो जाओ।

मनुष्य तब तक भटकता रहेगा, जब तक उसे सच्चा सुख नहीं मिला है। वह सच्चा सुख आत्मा की जान है।

❖ यदि तुम चाहो कि मैं सदैव प्रसन्न रहूं और मेरा मन कभी चंचल न हो तो फिर यह विचित्र मन्त्र याद करो- 'यह भी गुजर जाएगा।'

7 फरवरी – मन का संयम

मन पर पूर्ण संयम होना चाहिये। बुरे संकल्पों से अलग रहना चाहिये, नहीं तो बड़ी खराबी होगी। किसी बुरे विचार को बार-बार नहीं विचारना चाहिये। उसकी याद ही मिटा देनी चाहिये। मन की दौड़ बाहर न हो तो समझो कि तुम्हारे अभ्यास का मन पर प्रभाव पड़ा है। समुद्र में जहाज़ पर कोई पक्षी बैठा होगा तो वह कहां उड़ेगा? उड़ते उड़ते इधर उधर बैठा घूम फिरकर थककर आकर जहाज पर शान्ति करके बैठा रहेगा। वैसे मन भी भले ही दौड़े। स्वयं ही थक कर, आकर एक आत्मा में स्थिर होगा।

❖ सत्संग कोई हंसी मजाक नहीं। राज दरबार में कैसे न सावधान रहना पड़ता है। सत्संग में तो उससे भी सावधान रहना चाहिये।

8 फरवरी – मन को जीतिये

'जिसने मन जीता, उसने जग को जीता।' जिसने मन को दास बनाया है, वही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करेगा। जो जीवन मुक्त नहीं है, वह विदेह मुक्त नहीं होगा। मन को भगवान का नाम 200 बार माला फिराने के साथ उच्चारण करना है, उसकी जगह 100 बार माला फिराने के बीच में छोड़ दें तो समझो, अब मन चंचल हुआ है और यदि 200 बार माला फिराएं तो समझो, मन अब स्थिर हुआ है। इस मन की सहायता से ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

❖ सत्संग से सत् संकल्प पैदा होंगे और कुसंग से बुरे संकल्प उत्पन्न होते हैं। बुरे संकल्पों के कारण बुरे कर्म होंगे और जन्म व्यर्थ हो जाएगा।

9 फरवरी – मन शुद्ध रखो

दुःख किसको होता है? शरीर को। चाहे शरीर को कोई चोट लगाए अथवा लाठी लगाए और मारे अथवा फांसी दे तो क्या हुआ? कुछ भी नहीं। मैं तो वैसे अजर, अमर, अखण्ड स्थित हूं। ह्रदय शुद्ध होगा तो आत्म ज्ञान की बातें भीतर बैठेंगी। यदि आत्म ज्ञान प्राप्त करने की इतनी बुद्धि न हो तो प्रार्थना करें कि 'हे भगवान! मुझे सुबुद्धि और शक्ति दो कि मैं अपने मन को सेवक बनाऊं।' मन को समझाना चाहिये कि ऐ मन! तू ज्योति स्वरूप है।

10 फरवरी – दैवी गुण

स्वयं को स्वप्न में भुलाकर बैठते हैं। जब जागते हैं, तब जानते हैं कि मैं तो इस सपने का दर्शक था। यह संसार और शरीर बदलते रहते हैं। बादलों की तरह आएंगे जाएंगे। विद्या वह, जो कण्ठ (याद) हो और पैसा वह, जो गांठ में हो। जिसमें दैवी सम्पदा के गुण हैं, वही मोक्ष प्राप्त करेगा। योग, तप, मंत्र आदि से मन शुद्ध होता है, तत्पश्चात् ज्ञान होगा। मोक्ष का एक उपाय आत्म ज्ञान हैं।

❖ बुरे संग से बचिए, सन्तों का संग कीजिये। सन्त वे हैं, जिनके कर्म सत् हैं। उन सन्तों के संग से आपको चार पदार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्रप्ति होगी।

11 फरवरी – सफलता कब?

हम बेसमझी के कारण काम, क्रोध, मोह, अहंकार और लोभ में डूबे हुए हैं। उपरोक्त विकारों में से एक भी होगा तो सफलता नहीं मिलेगी। तृष्णा ही है, जो मनुष्य को जन्म-जन्म के चक्कर में भटकाती है। मन को कहना चाहिये, मैं बहुत दिन तक तुम्हारा नौकर बन कर रहा था, परन्तु अब तुम्हें अपना सेवक बनाऊंगा। तृष्णा ऐसी वस्तु है कि वह तृप्त होने की नहीं। वह मटका वास्तव में भरने का नहीं है चाहे हजार लाख मन उसके भीतर डालो तो भी खाली ही खाली रहेगा।

❖ हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि जो निष्काम कर्म करते हैं, अन्दर में भगवत् धारण करते हैं, वे जन्म मरण के चक्कर से बचते हैं। ये वाक्य शास्त्रों तथा सन्तों के हैं, जो झूठे नहीं है।

12 फरवरी – संसार नाशवान

शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध से बचना चाहिये और आवश्यकता अनुसार दुनिया की वस्तुओं में से मोह ममता रहित काम निकालना चाहिये। संसार की कोई भी वस्तु और शरीर न सुन्दर है, न प्रेम रूप है और न आनन्द रूप। यह शरीर तो रोग, मास, थूक से युक्त है। वह नाश्वान है। संसार और शरीर को उपरोक्त रीति से ठीक समझकर, उससे दूर रहो। उसे कहते हैं वैराग्य। संसार और शरीर को इस तरह समझना चाहिये। उसे न प्यारा, न आनन्द रूप समझें अपितु उससे घृणा की जाए।

❖ प्रात: और सायं व्यायाम, आसन और प्राणायाम करने का नियम रखो।

13 फरवरी – देह से भिन्न

दुनिया की वस्तुओं और दुनिया को सराय समझना चाहिये। ये सब चीजें अपने लिए हैं, किन्तु अपनी नहीं है, केवल काम निकालने के लिए हैं। यह शरीर न पहले था और न बाद में ही रहेगा, अपितु आत्मा ही आत्मा, आनन्द ही आनन्द। एक ब्रह्म ही व्यापक, अखण्ड, सबका साक्षी, सर्व में एक समान है। यह देह पांच तत्वों की बनी है, जो किराये पर खरीद करके आये हैं, परन्तु हम स्वयं को देह समझ बैठे हैं, जो देह पांच तत्वों की बनी हुई है। हम वो तत्व नहीं, न हम में तत्व है।

❖ भेष का प्रभाव तन मन पर होता है। सादा, सूती और साफ हो। अच्छा हो यदि खादी के वस्त्र पहनो।

14 फरवरी – ज्ञानी का व्यवहार

जिज्ञासु को बार-बार निश्चय करना चाहिये कि मैं अवश्य मोक्ष प्राप्त करूंगा। बस, यही एक इच्छा बार-बार की जाए। ज्ञानी जो भी बाह्य व्यवहार करता है, वह सब आभास मात्र, सब आभास रूप समझकर कर रहा है, परन्तु उसे अन्दर में शान्ति है। बाहर से यद्यपि कुछ विक्षेप आदि देखने में आता है परन्तु वह परम शान्ति में ही स्थित है। स्वयं को ऐसा समझना चाहिये कि मेरे अन्त: करण में आनन्द की धाराएं आ रही हैं। बस, उनमें लीन रहना चाहिये।

❖ ऋषियों का कथन है कि ब्रह्मचर्य ब्रह्म दर्शन का द्वार है, उसकी रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है।

15 फरवरी – तीन बातें

स्वयं को पहचानों कि हम कौन हैं ? सहस्त्रों, लाखों, अरबों लोग स्वयं को शरीर आदि समझते हैं। वे शरीर नहीं हैं। एक अनन्द ही आनन्द स्वरूप हैं। मनुष्यों को परिस्थितियां दुःख नहीं देतीं, किन्तु परिस्थितियों का विचार ही उन्हें दुःखी कर रहा है। प्रत्येक मनुष्य तीन बातें हाथ में करना चाहता है:-

(1) शरीर निरोग रहे, (2) मान पद बढ़े और (3) सुख।

❖ शरीर को स्वस्थ करने के लिए थोड़ा खाओं, समय पर खाओ और चबाकर खाओ। बत्तीस बार दांतों से चबाकर, तत्पश्चात् निगलो तो शरीर स्वस्थ रहेगा।

16 फरवरी – आत्म चिन्तन

सन्तोष के अतिरिक्त शान्ति नहीं मिलेगी। वैराग्य, सन्तोष अथवा इच्छाओं का त्याग एक ही बात है। केवल वासनाओं का त्याग करो। भले ही दुनिया के सभी कार्य कीजिये, किन्तु उनसे प्रीति न रखो। मोह ममता से ऊपर हो जाओ। बस, तत्पश्चात् आनन्द है। भगवत् ध्यान अर्थात् आत्म-चिन्तन करने से आनन्द रहेगा। वैराग्य एवं अभ्यास को नहीं छोड़ना चाहिये। सत्य क्या है ? सत्य वह, जो सदैव रहे, आत्म ज्योति। तुम सत्य स्वरूप, ज्योति रूप, आनन्द रूप आत्मा हो, स्वयं को पहचानो।

❖ सत्संग से जो कुछ सुनो, वह हृदय में धारण करो और उस पर आचरण करो।

17 फरवरी – सुषुप्ति अवस्था

जिसका नाम नहीं, उसकी मौत कहां ? जब जन्म ही नहीं है तो कर्ता भोगता कौन होगा ? आत्मा एक है और सब जगह है। व्यापक किस लिए कहा जाता है ? देश, काल और पदार्थ के कारण। देश काल तो है नहीं। जब दूसरा कुछ नहीं है तो व्यापकता किसमें ? सुषुप्ति वाली अवस्था जाग्रत में हो, उसका अर्थ इस प्रकार समझना चाहिये। क्या सुषुप्ति में कुछ पदार्थो, विषय, रूप, कर्म, क्रिया आदि के पीछे दौड़ा जाता है नहीं नहीं, वहां न कर्ता, न भोगता, न देने वाला, न विषय पदार्थ आदि कुछ भी नहीं है।

❖ दीपक जलता है तो बाती और तेल जलता है। इसी तरह जितना अधिक बोला जाता है, उतनी अन्दर की शक्ति कम होती है।

18 फरवरी – वृत्तियां

चित्त की अनेक वृत्तियां फैलती हैं। जितने संसार के शव्द, पदार्थ हैं, वे सभी चित्त की वृत्तियां हैं। मैं शुद्ध चेतन एक ही अनन्त रूप होकर दिखने में आता हूं। सब में एक चेतन के कण हैं। जैसे सूर्य और उसकी अनेक किरणें, जैसे जल और उसकी लहरें। जैसे एक धागे में अनेक मनके। सब मनकों में एक ही धागा व्यापक, सब मनकों को सत्ता देने वाला आधार है। वैसे सब पदार्थो और अन्तःकरण की वृत्यों में एक ही चेतन परमात्मा व्यापक है।

❖ मन को वश में करने के लिए भी मौन धारण करने से बड़ी सहायता मिलती है। मन को स्थिर करने के लिए मौन बड़ा सहायक होता है।

19 फरवरी – जैसा बीज वैसा फल

दो बातों कभी न भुलाओः-

(1) जैस जैसा कार्य करोगे, वैस वैसा फल पाओगे। जैसे भूमि में जैसा बीज डालोगे, वैसा ही फल उत्पन्न होगा। कोई भी बोए, किन्तु भूमि किसी का भी कोई विचार नहीं करती। उसी प्रकार से इसी पृथ्वी पर जो मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा फल अवश्य मिलता है।

(2) जैसे एक बीज का फल एक नहीं होता, एक बीज बोने से कई दाने उत्पन्न होते हैं। वैसे ही थोड़े ही पुण्य कर्म करने से मन शान्त रहता है।

❖ प्रत्येक मनुष्य की इच्छा है आनन्द की प्राप्ति। अतः यदि आनन्द चाहते हो तो पापों से बचो। पाप और कमज़ोरी चले जायें तो दुःख नहीं रहेगा।

20 फरवरी – अमूल्य मनुष्य जन्म

कोई भी बुरा कर्म थोड़ा करके न समझो। थोड़ी भूल पहाड़ की तरह समझनी चाहिये। इसलिए मन को बार बार समझाओ कि हे मन! यह क्या कर रहा है? तृष्णा रूपी जल में गोते खा रहा है। अमूल्य जन्म विष भागों में बर्बाद कर रहा है। रत्नों को छोड़कर कंकर इकट्ठे कर रहा है, तू अपनी मंजिल की यात्रा में कांटे बो रहा है। तुझे जाना कहां था और जा कहां रहा हैं? अनेक योनियां भटक-भटक कर अन्त में तुझे यह मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है।

❖ मनुष्यों में उत्तम मनुष्य वह है, जिसने शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति की है अर्थात् जिसका शरीर निरोग है, मन पवित्र है और जिसने अपने आप अर्थात् आत्मा को जाना है।

21 फरवरी – भोग में रोग

सन्त रविदास साहब फरमाते हैं कि हिरन गाने पर रीझकर शिकारी के वश में होता है, पच्छली भोजन के लालच में धीवर के जाल में फंसकर, भंवरा फूल की सुगन्ध पर मोहित होकर अपनी जान बलिदान करते हैं। पतंग दीपक के प्रकाश पर मस्त होकर, स्वयं को जलाकर खत्म कर देता है। हाथी काम के वश में होकर गड्ढे में गिरता है अर्थात् प्रत्येक विषय के वश में होकर, स्वयं को नाश करता है। किन्तु मनुष्य तो पांचों विषयों में फसा हुआ है। अतः उसके बचने की कौनसी आशा होगी? वह अवश्य नाश होगा।

❖ मनुष्य योनि को पशुओं तथा देवताओं की योनियों से भी श्रेष्ठ कहा गया है। यह इसलिए है कि मनुष्य जन्म क्षेत्र तथा कर्म क्षेत्र दोनों हैं।

22 फरवरी – सोचो!

तुम्हारा लक्ष्य कैसा था? अपने स्वरूप में लीन होने का था किन्तु ऐसा निर्लज्ज हो गया है कि कोई भी शर्म तुझे नहीं होता। स्मरण रखो कि तुम्हें धर्मराज के समक्ष आंखें नीची करनी पड़ेगी। कबीर साहब ने फरमाया है-

धर्मराज जब लेखा मांगे, क्या मुख लेकर जाएगा? कहत कबीर सुनहु, साध संगत तर जाएगा। न भूलो कि वहां प्रत्येक जिन्स (चीज) प्रकट होगी। प्रत्येक अपने कर्मो के लिए उत्तरदायी होगा। अतः सोचो अभी भी समय गया नहीं है।

❖ हम गत जन्मों के पाप पुण्य के फल सुख दुःख भोगते हैं तथा भविष्य बनाने के लिए कर्म करने में स्वतन्त्र हैं।

23 फरवरी – हम आत्मदर्शी हों

परमात्मा और सत् पुरूषों के साथ सदैव प्रेम भले ही रखा जाये और रखना भी चाहिये। यह प्रेम जितना ह्दय में रखा जाये, उतना अधिक लाभ होगा। जिन्हें समझा जाये कि यथार्थ आत्मदर्शी हैं, उन्हें भूलकर भी शरीर भावना से न देखा जाये। जिस दिन से स्वयं को हमने शरीर समझा और परमात्मा से स्वयं को भिन्न समझा, बस उस दिन से ही दुःख आरम्भ हुए। हमारे सामने यह लक्ष्य होना चाहिये कि स्वयं को जानकर जन्म आदिक दुःखों से छुटकारा पाकर अखण्ड आनन्द में लीन हो जाएं।

❖ विकार मनुष्य के शत्रु हैं, जो बुरे संग तथा विकारों का गुलाम हैः वह अपना भला नहीं कर सकता तो वह दूसरे का क्या

24 फरवरी – विचित्र मंत्र

प्रत्येक मनुष्य की प्रायः यह भावना रहती है कि मैं सदैव सुखी रहूं और कदापि दुःखी न रहूं। किन्तु सुख दुःख कोई आकाश से नहीं गिरता। विचार ही हैं, जो मनुष्य को सुखी अथवा दुःखी करते हें। जैसे उत्सव में कोई कितना ही मग्न क्यों न हो,तो भी उस समय यदि उसके चित्त में किसी फुरने ने आकर वास किया तो ठीक उसी समय वह उदास दिखाई देगा। अतः प्यारे प्रियत्म! यदि तुम चाहो कि मैं सदैव प्रसन्न रहूं तो यह विचित्र मंत्र स्मरण रखो– 'यह भी गुज़र जाएगा।'

❖ हमें सुन्दर गुण धारण कर सुन्दर बनना चाहिये, चन्द्र के समान शीतल प्रकाश वाला बनाना चाहिये तथा अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये।

25 फरवरी – सत्संग राजदरबार

सत्संग हंसी मजाक नहीं है। राजदरबार में कैसे न सावधान रहना पड़ता है। यहां सत्संग में उससे बढ़कर सावधान रहना है। कुछ महिलाएं सत्संग में माला फेरती रहती है, कुछ स्वेटर बुनती हैं तो कुछ तरबूज के बीज छीलती रहती हैं। यह कैसी मूर्खता है? भक्ति मार्ग कोई हंसी है क्या? इस प्रकार अमूल्य समय बेकार जाता है। इस प्रकार मन की वृत्ति एकाग्र नहीं रहेगी तो फिर सत्संग किसका?

❖ सुनना है समझने के लिए और समझना है आचरण के लिए। किन्तु यदि तुम्हारा मन स्थिर नहीं है, तब तुम सुनते हुए भी समझोगे क्या? जब तक मन को स्थिर नहीं करोगे, उसको वश में नहीं करोगे, तब तक तुम्हारा जो लक्ष्य है आनन्द की प्राप्ति, वह प्राप्त नहीं होगा।

26 फरवरी – मौन

मौन का अर्थ है अपनी शक्ति का व्यय न करना। मनुष्य जैसे इन्द्रियों से अपनी शक्ति खर्च करता है, वैसे बोलने से भी अपनी बहुत शक्ति व्यय करता है। अन्य इन्द्रियों से शक्ति खर्च करने में मनुष्यों, पशुओं एवं पक्षियों की समानता है अर्थात् अन्य इन्द्रियों से मनुष्य, पशु और पक्षी एक जैसे ही काम लेते हैं, किन्तु वाणी द्वारा अपनी शक्ति को ज्यादा से ज्यादा खर्च करने वाला प्राणियों में मनुष्य ही है। इसी कारण मनुष्य को अपनी शक्ति को अपने भीतर इकट्ठी करने के लिए मौन धारण करने की बिल्कुल आवश्यकता है।

❖ आपका ध्येय क्या है? आपका लक्ष्य है योग, अपने स्वरूप में लीन होना। किन्तु तुम निर्लज्ज बनकर यह भुला बैठे हो। याद रखो कि आपको हिसाब देना होगा।

27 फरवरी – मौन की महिमा

प्रायः यह देखा गया है कि मनुष्य अपनी शक्ति का व्यर्थ व्यय करता है, दुरुपयोग भी करता है। इस जगत् में जो भी झगड़े उपद्रव हो रहे हैं, वे सब वाणी के दुरुपयोग अर्थात् अनुचित प्रयोग करने से ही होते हैं। यदि मनुष्य वाणी का सदुपयोग करेगा अर्थात् मौन धारण करेगा अथवा उचित और थोड़ा बोलेगा तो जगत् के बहुत से झगड़े मिट जायेंगे और लोग अधिक आनन्द में रहेंगे। मन को वश में करने के लिए भी मौन से बड़ी सहायता मिलती है।

❖ राजसी और तामसी स्वभाव हमें जन्म मरण के चक्र में डाल देते हैं, कुत्ते से भी नीच योनियों में ले जाते हैं। अतः इनका त्याग करो।

28 फरवरी – मौन आवश्यक

मन को स्थिर करने में मौन बहुत ही सहायक होता है। मौन धारण करना बिल्कुल कठिन कार्य है। पाठक एक दो दिन मौन धारण करके देखेंगे तो उन्हें उसकी कठिनाई का पता लगेगा।

वास्तव में मौन शीघ्र ही साधा जा सकता है किन्तु लोगों को बोलने की इतनी आदत पड़ गई है, जो सधने वाला मौन भी कठिन मालूम होता है। इसलिए थोड़ा बोलना अथवा कुछ सीमा तक मौन धारण करना आवश्यक है।

❖ जो दुःख आने वाले हैं, उनको सहन करो।

स्वास्थ्य स्वस्थ रहें, निरोगी बने (घर का वैद्य)

पेट में कीड़े

कीड़े अधिकतर छोटे शिशुओं बच्चों के पेट में पाये जाते हैं।

नुस्खे

1. गन्ने के सिरके में रात के समय 25 ग्राम चना भिगोयें। सुबह उस चने को चबाकर खाये और छ:सात घंटे कुछ भी न खाये। कीड़े मर जोयेगें।
2. मूली के रस में थोड़ा सा नमक मिलाकर सेवन करें। पेट में पलने वाले कीड़े मल के साथ बाहर निकल जायेंगे।
3. छाछ में भुना हुआ जीरा, थोड़ा सा सेंधा नमक और पिसी हुई काली मिर्च मिलाकर पिलायें। पेट के केचुए बाहर निकल आयेंगे।
4. हींग खाने से कीड़े पर जाते हैं।

अपच

खाये हुए भोजन का न पचना ही अपच है। इसमें खट्टी डकारें भी आती है।

नुस्खे

1. मुनक्का नमक एवम् काली मिर्च मिलाकर खाने से अपच की शिकायत दूर होती है।
2. अनार दाने का चूर्ण आधा चम्मच दिन में तीन बार लें अपच मिटती है।
3. 2 चम्मच ईसबगोल (किराने की दुकान से खरीदा जा सकता है) पानी में मिलाकर पियें। निश्चित फायदा होगा।

पेट में मरोड़

नुस्खे

1. गाय का दूध और पानी बराबर मात्रा में जल जाने तक उबालिये फिर उसे उतारकर पीये। पेट का मरोड़ शान्त हो जायेगा।
2. दही और मेथी का चूर्ण मिलाकर पीने से पेट का मरोड़ बन्द होता है।
3. छाछ में बेल का गूदा मिलाकर पिये। मरोड़ में राहत मिलेगी।

पेट में भारीपन

नुस्खे

1. जीरा और धनिया समभाग लेकर पीस लें फिर उसे 250 मि.ग्रा. पानी में भिगोकर रख दें। प्रात: काल पानी को छानकर पीने से पेट का भारीपन समाप्त होता है।
2. बैंगन को अंगारों पर सेंककर उसमें सब्जीखार मिलाकर बाँधने से पेट के भारीपन से निजात मिलेगी।

बार-बार उल्टी आना

नुस्खे

1. अदरक के 10 मि.ग्रा. रस में 10 मि.ग्रा. प्याज का रस मिलाकर इस्तेमाल करें। उल्टियाँ रूक जायेंगी।
2. 6 ग्राम पुदीना, 2 ग्राम सेंधा नमक ठंडे पानी में घोलकर पीने से उल्टी शान्त होती है।
3. अजवाइन तथा फूलवाली लौंग जल में पीसकर चटाने से उल्टी बन्द हो जायेगी।

आँखों से पानी गिरना

नुस्खे

1. अमरूद को आग में भूनकर खाने से आँखों का पानी गिरना बन्द हो जाता है।
2. धनिया पुदीने की चाय में चुटकी भर नमक मिलाकर पीयें।
3. दो छोटी इलायची पीसकर रात को एक ग्लास दूध में उबालकर पीने से आखों से पानी आना बन्द हो जाता है।
4. रात के समय त्रिफला पानी में भिगों दें। सुबह उस पानी को निथार कर आंखों पर छीटें मारे। अत्यन्त अचूक औषधि है।

दृष्टि दुर्बलता या नजर की कमजोरी

आंखों से कम दिखायी देना ही दृष्टि दुर्बलता है।

नुस्खे

1. इलायची के दानों का चूर्ण और शक्कर बराबर मात्रा में लेकर एरंड का तेल मिलाये।. चार ग्राम की मात्रा चालीस दिन तक इस्तेमाल करें। अश्चर्य जनक रूप से फायदा होता है नेत्रज्योति बढ़ती है।
2. संतरे के रस में पिसी हुई काली

मिर्च और सेंधा नमक मिलाकर सुबह शाम सेवन करें। दृष्टि दोष से मुक्ति मिलेगी।

3. सहजन का रस और शहद बराबर मात्रा में मिलाकर काजल बनाये और प्रतिदिन आँखों में लगायें। निश्चित लाभ होगा।

मोतिया बिन्द

आँख की पुतलियों पर पर्दा पड़ना ही मोतिया बिन्द के लक्षण हैं।

नुस्खे

1. बादाम की गिरी और 7 दाने काली मिर्च को पीसकर पानी में मिलाकर छान लें और मिश्री डालकर सेवन करें। लाभ होगा।

2. प्याज का रस, शहद 10-10 मि. ग्रा. तथा भीमसेनी कपूर 2 ग्राम मिलाकर शीशी में रख लें और रात को सोते समय सलाई से आँखों में लगायें। लाभ होगा।

3. गाजर, पालक और ऑवले के सेवन से मोतिया बिन्द नहीं बढ़ता।

4. सौंफ, धनिया बराबर मात्रा में लेकर उसमें शक्कर मिलायें और 10 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करें। लाभ होगा।

5. पुरानी ईट का टुकड़ा पीसकर छान लें फिर उसे आक के दूध से तर करें और रख दें। जब दुध सूख जाये तो दस ग्राम चूरे में पांच लौंग पीसकर मिला लें और दिन में 5-6 बार सूंघे। वहुत ही अच्छी औषधि हैं।

6. सुपारी को पानी में पत्थर पर घिसकर लगाने से आँख की सूजन दूर होती है।

रतौंधी

आँख से धुंधला दिखायी पड़ना रतौंधी रोग कहलाता है।

नुस्खे

1. टमाटर के रस का सुबह शाम सवेन करने से रतौंधी दूर होती है।

2. टब से पानी भरकर उसमें अपना चेहरा डालकर लगातार आंखें खोले रखें। आँखों की ज्योति बढ़ेगी।

3. 10 ग्राम बेल के पत्ते, 6 दाने काली मिर्च और 25 ग्राम चीने को पानी में बारीक पीसकर सुबह शाम सेवन करें।

आँखों में जलन होना

नुस्खे

1. गाय का मक्खन लगाने से आँखों की जलन दूर होती है।

2. दही की मलाई का पलकों पर लेप करने से आंख की जलन खत्म होती है।

3. हल्दी, फिटकरी और इमली के पत्तों की पुल्टिस बनाकर आँखों की सेंक करें। आंखों की जलन मिट जाती है।

रोहे

वह आँखों में अंधापन लाने वाला खतरनाक रोग है। यह बच्चों में अधिक होता है।

नुस्खे

1. भोजन के साथ बेलन और गाजर के मुरब्बे का सेवन करने से रोते से रहत मिलती है।

2. तुलसी, अदरक, शहद और प्याज का रस मिलाकर दिन में सेवन करें। रोहे में लाभ कारी है।

3. दूध के साथ ईसबगोल की भूसी में आंवले का चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर सेवन करें। लाभ होगा।

जुकाम

नुस्खे

1. पान के दो-चार सादे पत्ते चबाने से जुकाम से राहत मिलती है।

2. अजवायन को पीसकर प्याज का रस मिलायें और छाती तथा पीठ पर मालिश करें।

3. काली मिर्च का चूर्ण दही और गुड़ के साथ सुबह शाम खानी चाहिए पुराना जुकाम ठीक हो जाता है।

4. चाय में नींबू का रस डालकर पीने से जुकाम दूर हो जाता है।

कान का दर्द

नुस्खे

1. मुलहठी को घी में मिलाकर हलका गर्म करें और कान के आस-पास लगायें। फोरन आराम होगा।

2. एक चम्मच तिल के तेल में लहसुन डालकर कुनकुना करें और दर्द वाले कान में 4-4 बूंदे डालकर दूसरी करवट लेटे रहें आराम मिलता है।

3. केले के तने का रस निकालकर हल्का गरम करके सोते समय कान में डालें। कान का दर्द सदैव के लिए जाता रहेगा।

सिन्धु महक के सम्माननीय सदस्यों को जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामनाएँ



राजा दादलानी

जन्मदिन - 1 फरवरी

राजा ज्वेलर्स

बैरागढ़

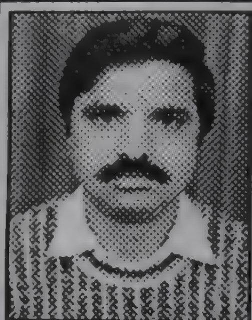


लक्ष्मण पी. किंगरानी

जन्मदिन - 2 फरवरी

साहिल स्टेट एजेंट

3-ए, 354-55, बंगलो नं. 4, आदिपुर (कच्छ)

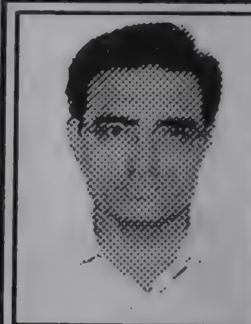


श्याम लालवानी

जन्मदिन - 2 फरवरी

एशियन पेंट्स एवं हार्डवेयर

जोन-2, एम.पी. नगर, भोपाल



हरीश केसवाणी

जन्मदिन - 4 फरवरी

नेहा स्टेट एजेंसी

डी.ए.जेड.-66, आदिपुर (कच्छ)

रौशन जीवनानी

जन्मदिन - 4 फरवरी

मनीष ट्रेडर्स

व्यापार विहार, बिलासपुर (छग)



महेश लहरवानी

जन्मदिन - 5 फरवरी

शिव मंदिर के पास, कटोरा तालाब
रायपुर (छ.ग.)



मनोज कुमार वीरनानी

जन्मदिन - 7 फरवरी

शिव मंदिर के पास, कटोरा तालाब
रायपुर (छ.ग.)



राजकुमार पंजवानी

जन्मदिन - 7 फरवरी

शिव मंदिर के पास, कटोरा तालाब
रायपुर (छ.ग.)

घनश्यामदास मनवाणी

जन्मदिन - 8 फरवरी

कटोरा तालाब,
रायपुर (छ.ग.)



श्रीमती चित्रा तगलानी

जन्मदिन - 8 फरवरी

यूनिट-एम, मां सरस्वती प्रोफेसर कॉलोनी,
वार्ड-4, बी-2, आदिपुर (कच्छ)



हरीश के. कोरवानी

जन्मदिन - 10 फरवरी

404, सा.वा. सोसायटी, वार्ड-11,
बी, गोपालपुरी, गांधीधाम



दिलीप राजन भाई धनवानी

जन्मदिन - 10 फरवरी

डी.ए.जेड.-49, शिव मंदिर
के सामने, आदिपुर (कच्छ)

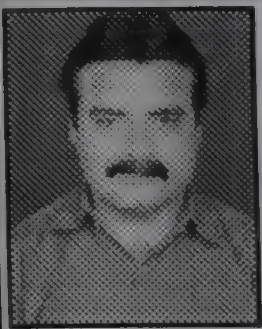
सिन्धु महक के सम्माननीय सदस्यों को जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामनाएँ



पहिलाज राय हिमथानी
जन्मदिन - 12 फरवरी
अध्यक्ष
सिंधू समाज, बैरागढ़ (भोपाल)



परमानन्द 'प्यासी'
जन्मदिन - 17 फरवरी
'अम्मा', आनंद नगर, जामपुरा पालनपुर (गुजरात) मो. 09328311844



राजेश गुलानी
जन्मदिन - 17 फरवरी
गुलानी एजेंसी
नगर निगम शॉपिंग काम्प. बैरागढ़, भोपाल



नारायणदास तगलानी
जन्मदिन - 20 फरवरी
प्रोफेसर कॉलोनी, वार्ड-4-बी, आदिपुर (कच्छ)

मुरली गालानी
जन्मदिन - 27 फरवरी
266, वार्ड नं. 3-ए,
आदिपुर (कच्छ)

सिन्धी साहित्य के रोशन सितारे

(माह फरवरी में जन्में सिन्धी साहित्यकारों/ कलाकारों / सम्पादकों की जन्म तिथिया)

माह जनवरी 2010 से हमने सिन्धी साहित्यक जगत के मूर्धन्य सिन्धी साहित्यकारों / कलाकरों व समाचार पत्रों के सम्पादकों आदि की जन्मतिथियां, उनके वर्तमान पते, फोन व मोबाईल नम्बर आदि के साथ प्रकाशित की थी और उसका सुधि पाठकों ने उत्साह वर्द्धक स्वागत किया है। उसी कड़ी में माह फरवरी की जन्मतिथियों का विवरण पेश कर रहे हैं। आने वाले महीनों की जानकारी के लिए साहित्यकार/ कलाकार/ संपादक अपनी जानकारी श्री झम्मूं छुगाणी को उनके नीचे दिए हुए पते पर या सम्पादक सिंधू महक को भी भेज सकते हैं।

– सम्पादक

श्री बूलचंद मोरुमल खटवाणी
जन्म - 1.2.1938 (सक्खर - सिंध)
भाटिया बाजार, गोपीनाथ हवेली

श्री शंकर लालवाणी
जन्म - 3.2.1951
आई-82, लाजपतनगर 3, नई दिल्ली - 110024

श्री हरकिशन सामताणी
जन्म - 3.2.1950
9, साक-येती अपार्टमेंट, बंद गार्डन रोड, पुणे (महाराष्ट्र) - 411001

श्री राज तोलाणी
जन्म - 3.2.1974, भोपाल
रंगकर्मी, संप्रति बालीवुड की फिल्मी दुनिया में।

श्री रमेश नारवाणी 'नींगडु'
जन्म - 4.2.1954
104, विवेकानंद कॉलोनी, अजय नगर, अजमेर (राजस्थान)

श्री प्रवीन अन्वाणी
जन्म - 7.2.1968
सी-5, दयानंद कॉलोनी, लापतनगर-5, नई दिल्ली-110024

श्री मंघाराम सिपाहीमलाणी (सम्पादक हिन्दवासी)
जन्म - 9.2.1925 (हैदराबाद सिंध)
फ्लैट नं. 2, 122-ए, किस्मत, शहीद भगत सिंह मार्ग कोलाबा, मुम्बई-400005

प्रो. इन्द्रा बलदेव बुधराणी
जन्म - 10.2.1934
124/8, मीरा हाउसिंग सोसायटी शंकर सेठ रोड पुणे (महा.) 411037

श्री राम रोचीराम पेसवाणी
जन्म - 12.2-1938 (कराची सिंध)
17-डी, जीवन लक्ष्मी सोसायटी, डॉ. आर.पी. रोड मुलंद, मुम्बई-400080

श्री हरि हिमथाणी
जन्म - 13.2.1944 (हीसब, मोरो, सिन्ध)
14, तिलोक नगर, अजमेर (राजस्थान)

प्रो. रवि टेकचंदाणी
जन्म - 14 फरवरी 1950, (सिंधी के विभागाध्यक्ष) रुम नं. 80,
फैकल्टी आफ आर्टस, दिल्ली विश्वविद्यालय, माल रोड, दिल्ली

श्री मूरजमल मंघनाणी
जन्म - 16.2.1931 (टण्डो आदम सिंध)
इंटरनेशनल ट्रेडर्स, पो. बाक्स नं. 6, दुबई (यू.ए.ई.)

कु. वीना श्रृंगी
जन्म - 16.2.1948 (लाड़काणा - सिन्ध)
सी-84, इन्द्रपुरी नई दिल्ली-110012

श्री नारायण आसूमल मेहबूवाणी
जन्म - 17.2.1922 (सेव्हण सिंध)
27, एफ-5, बसंत विहार, कोटा (राजस्थान)

श्री ठाकुर चावला, संपादक 'सिंपू' त्रैमासिक
जन्म - 18-2.1931 (कराची - सिंध)
13-बी, 3 जेठी बहन सोसायटी, मोरी रोड, माहिम, मुम्बई-400016

श्री राम ज्ञानचंदाणी
जन्म - 18-2-1933 (ठारु शाह सिंध)
50, लाजपत नगर, नई दिल्ली - 110024

श्री बिहारीलाल छाबड़िया
जन्म - 22.2.1923
18, बिरज भवन, 630 डॉ. जी. देशमुख रोड, मुम्बई-400026

श्री प्रेम तोलाणी, (सम्पादक - सदेश भारत, साप्ता.)
जन्म - 22.2.1935, एन.पी.-201, अमित अपार्टमेंट (ए-33),
गोल मैदान उल्लासनगर (महा.)-421001

प्रो. आसन वासवाणी
जन्म - 27.2.1932 (बंगलो-देरो सिंध)
टी.एछ. एक्स आदिपुर (कच्छ) 370205

श्रीमती रत्ना गोदिया
जन्म - 28.2.1939, माउंट अल्पस 'बी-विंग' 1101-02, 11वां फ्लोर,
भक्ति पार्क, अनिल बडाला, लिंक रोड, वडाला (ईस्ट) मुम्बई-400031

सभी साहित्यकारों/ सम्पादकों/ कलाकारों को सिन्धु महक परिवार व लेखक झम्मू छुमाणी की ओर से अनंत बधाईयां।

प्रिय पाठकों,

कृपया जब कभी भी आप सफर पर जाएं तो सिंधू महक पत्रिका अपने साथ ले जाएं। स्वयं पढ़ें औरों को पढ़ाएं।

धर्मप्रकाश तेजा
सम्पादक, सिंधू महक
एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, बैरागढ़
भोपाल (म.प्र.) - 462030 मो. 09300691132, 09589024860

झम्मूं छुगाणी का पता -
ब्लाक जी-1 रामलक्ष्मण निवास,
बैरागढ़, भोपाल - 464030
फोन (0755) 2642162, मो. 09329841347

गुरूओं के गुरू सदगुरू संत कबीर

सदगुरू कबीर को किताबों के माध्यम से नहीं ह्रदय के माध्यम से समझा जा सकता है। कबीर के ज्ञान के आगे महा पडिंत ज्ञानी भी नतमस्तक हैं। कबीर ने भगवान को कहीं बाहर नहीं अपितु अपने भीतर ही ढूंढा हैं। स्वयं को उस पार ब्रहम परमात्मा का दास कहा और इसी दासता को सदैव बनाये रखना चाहते थे यही उनके जीवन का सार और आधार था। वह अपने और परमात्मा के मिलन को ही सब कुछ मानते थे। किसी तीसरे से उन्हें कोई सरोकार नहीं था। उनके मिलन के सामने यह संसार एवं संसार के सारे सुख वैभव वैसे ही फीके थे, जिस प्रकार एक विवाह में दूल्हा-दुल्हन के मिलन के बाद बारात फीकी पड़ जाती है। तभी तो कबीर कहते थे।

कबीर कूता राम का मुतिया मेरा नाऊं।
गले राम के जेवड़ी जित खेचे तित जाऊं।

कबीर ने स्वयं को भगवान का कुत्ता कहा है, जिसका नाम मोती है, जिसके गले में राम नाम की रस्सी पड़ी है, बताया है, और वह वही जाते हैं जहां उनके राम उन्हें चलाते हैं। वह मानते थे कि उनका यह शरीर यह आत्मा भी उनकी नहीं परमात्मा की है। जिस शरीर व जीवन को मेरा-मेरा कहते है: वह भी उस परमात्मा का दिया हुआ है। कबीर जी कहते थे कि मैं तुझे क्या दूं, सच तो यह है कि मैं तुझे क्या दे सकता हूं सब कुछ तो तेरा है मेरा तो कुछ भी नहीं हैं।

कामी का गुरू कामिनी, लोभी का गुरू दाम।
कबीर का गुरू संत है, संतन का गुरू नाम।

कबीर जी ने परमपिता परमात्मा (राम) को सबसे ऊंचा स्थान और सबसे ऊंची सता बताया हैं।
जिस प्रकार कामी (कामुक) का गुरू उसकी वासना या प्यास है। और लालची का गुरू पैसा है: उसी तरह मेरा गुरू (राम नाम) हैं।

बुरा जो देखन में चला बुरा न मिल्या कोय
जो मन खोजा अपना मुझसे बुरा न कोय।

कबीर जे के झुकने का भाव ही कबीर को और ऊंचा और श्रेष्ठ बना देता है। स्वयं में सदा बुराई या कमीं ढूढने की कोशिश ही कबीर को अद्वितीय बना देती हैं।

ब्रहम का स्वरूप :-

कबीर जी ने परम सता को राम कहकर पुकारा था ब्रहम (राम) को निर्गुण, अजन्मा, निराकार व अविगत मानते थे उन्होंने कहा कि ब्रहम ही एक मात्र सता है इसके अतिरिक्त संसार में कुछ नहीं है, संसार में कुछ भी है ब्रहम ही है इसी से सारे संसार की उत्पत्ति होती है और इसी में पूरा संसार लीन हो जाता है।

प्रिय पाठकों,

आपसे अनुरोध है कि सिंधु महक पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव पत्र के माध्यम से अवश्य भेजें, जिससे हम पत्रिका को और सुंदर बना सकें। आपके विचारों एवं सुझावों का हम स्वागत करेंगे।

- सम्पादक

सिंधु महक

मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान राज्यों में सर्वाधिक प्रसारित

एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, बैरागढ़, भोपाल-462030
पो. बाक्स नं. 5, बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.), मोबाईल : 09589024860, 09300691132

कृपया अपना फोटो यहाँ पर चिपकायें।

(सदस्यता फार्म)

सदस्यता हेतु शुल्क	
वार्षिक शुल्क	आजीवन शुल्क
200 रु.	2100 रु.

(डाक खर्च सहित)

प्रति,
महाप्रबंधक (प्रसार)
सिंधू महक

विषयः- सदस्यता प्रदान करने बाबत्।

महोदय,

मैं सिंधू महक मासिक पत्रिका का नियमित सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। जिसके लिए आवश्यक धनराशि रु. .... का भुगतान नगद/डिमान्ड ड्राफ्ट/मनी आर्डर चैक क्र. .... के द्वारा भेजा जा रहा है।

मेरा पता निम्नानुसार है :-

1. नाम ....
2. जन्म दिनांक ....
3. डाक का पूरा पता ....
   ग्राम .... जिला .... प्रदेश .... पिन कोड ....
4. फोन नं. .... मोबाइल नं. .... फैक्स नं. ....
5. ड्राफ्ट/मनी आर्डर/चैक क्र. .... दि. .... धनराशि ....

नोट :- 1. ड्राफ्ट / मनी आर्डर / चैक सिंधू महक के नाम से भेजें। 2. फार्म हिन्दी में ही स्वच्छ अक्षरों में भरें।

सिंधु महक

मोबाईल :
09589024860,
09300691132

एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट,
संस्कार स्कूल के पास,
पो.बाक्स नं. 5,
बैरागढ़, भोपाल-462030

श्री .... को सिंधू महक का वार्षिक सदस्य बनाकर रुपये .... प्राप्त किये सधन्यवाद।

प्राप्तकर्ता का नाम ....

पद ....

दिनांक .... स्थान ....

हस्ताक्षर


दादा, बच्चे या हो भैया हर कोई माँगे...
BAMBAIYA
Sweet Saanf
बम्बईया
चोको गोल्ड
बम्बईया®
2000
माउथ फ्रेशनर
BAMBAIYA GOLD
BAMBAIYA GOLD MOUTH FRESHNER
CUT HERE
बम्बईया
2000
माउथ फ्रेशनर
Statutory Waming : Chewing of supari may be injurious to health.



जो है स्वाद के शौकीन उनको है शिमला पर यकीन
केसर युक्त
शिमला
पान मसाला
M.S.S. FOOD PROCESSORS
PLOT NO. D, SECTOR E, SANWER ROAD, IND AREA, INDORE (M.P.)
MAXIMUM RETAIL PRICE Rs. 1.00 (Inclusive of all Taxes)
शिमला
पान मसाला
0% मैग्निशियम
100% टेस्ट
क्वालिटी स्वाद भरोसा
मन को भानेवाला
शिमला
पान मसाला
सभी प्रमुख स्टोर्स पर उपलब्ध
उच्च क्वालिटी के मसाले से निर्मित
शुद्धता के प्रति सचेत, प्रयोग में ली जा रही सामग्री
की पूर्णतः जांच के पश्चात ही हम अपने उत्पादन
शिमला पान मसाला को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं।
शिमला का कोई जवाब नहीं
पान मसाला चबाना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है. Not for Minors